@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

May 2018

Vol.35, Issue 11 Price Rs 35 | Annual Subscription Rs 420

Rotary

सम्मान के साथ पढ़ाई

रेसिन मिले राजे से

भारत की उनकी हाल ही की यात्रा में, रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के अध्यक्ष-निर्वाचित बैरी रेसिन ने रोई निदेशक सी भास्कर के साथ मिलकर, राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया से मुलाकात की। बाद में, *रोटरी समाचार* को दिए एक साक्षात्कार में, रेसिन ने कहा कि उन्हें राजे ''एक अत्यंत सक्रिय और बहुत ताकतवर महिला लगी, जिन्हें यह पता है कि वह क्या करना चाहती है और कौन से बदलाव लाना चाहती है।'' इस सब से अधिक, उन्होंने आगे कहा, ''वह वाकई में रोटरी के साथ साझेदारी करना चाहती है और मुझे यह सुनकर अत्यंत प्रसन्नता हुई क्योंकि यह बिल्कुल उसी प्रकार की साझेदारी है जिसकी हम तलाश कर रहे है।''

विषयसूची

12 स्कूल में बच्चे अब ज़मीन पर नहीं बैठते

रोटरी क्लब सोनकच्छ के रोटेरियनों के कारण, 1,000 स्कूलों के बच्चे अपनी कक्षाओं में बेंच और डेस्क पर बैठ पा रहे है।

20 उदारता का उत्सव मनाते हुए

आरआईपीई बैरी रेसिन मुंबई और चेन्नई में टीआरएफ में दान करने वाले दानकर्ताओं की उदारता का अभिनन्दन करते है।

72 जीवन का नृत्य

इस अंक के माध्यम से हम आपके लिए भारत की विभिन्न नृत्य शैलियाँ लाए है।

24 रोटरी और लेखन दोनों उनके जुनून हैं

पूर्व गवर्नर प्रेम भल्ला केवल रोटरी के लिए ही जूनूनी नहीं है; वह एक उत्सुक लेखक भी है।

36 एक प्रौढ़ का रोटरी में प्रवेश

रोई निदेशक जॉन सी. मैथ्यूज़, ज़ोन 25-26 (यूएसए और कनाडा) के साथ उनकी रोटरी यात्रा और इस सफ़र में आई चुनौतियों के बारे में बातचीत।

41 धमतरी में एक सफल RAHAT शिविर

मंडल 3080 और मंडल 3261 द्वारा छत्तीसगढ़ के धमतरी में आयोजित चिकित्सीय शिविर ने 20,000 से भी अधिक लोगों को राहत दी।

44 रोटेरियन की आत्मा को जगाना: बैरी रासीन

आरआईपीई बैरी रेसिन चेन्नई में मंडल 3000 और मंडल 3232 के नवनिर्वाचित अध्यक्षों और सचिवों को प्रेरित करते है।

70 आप कितने युवा है?

प्रभावकारी जीवनशैली की आदतें जो ख़ुशनुमा उम्रवृद्धि में सहायता करती है।

52 फेयरी चिमनियों के ऊपर हॉट एयर बलूनों में

हॉट एयर बलून में उड़ते हुए तुर्की के कप्पादोशिया के सौन्दर्य को ऊपर से देखें।

कवर पर : रोटरी क्लब सोनकच्छ, मंडल 3040 द्वारा प्रदान की गई बैठने की बेहतर व्यवस्था का विद्यार्थी आनंद ले रहे है।

चित्र: रशीदा भगत

असाधारण रेणुताई

अप्रैल अंक में रेणुताई की कहानी से मैं अत्यंत द्रवित हुआ। वह एक असाधारण महिला है जिनमें उनके सफर में आने वाली बाधाओं पर विजय पाने का संकल्प है। इस देश का भविष्य सुविधाओं से वंचित बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने में है। कहानी में कुछ झकझोर देने वाले कथन है जैसे एक आठ-वर्षीय बालक दूध के बजाय बियर मांगता है।

आशा है कि वह आने वाले वर्षों में अधिक बच्चों को बचाती रहे। एक रोटेरियन होने के नाते, मुझे गर्व है कि हम रेणुताई और कैलाश सत्यार्थी जैसे लोगों के साथ काम कर रहे है। मुझे आशा है कि हम हमारे समाज में ऐसे ही अधिक नगीने ढूंढ पाएं

एन गोपीनाथ
रोटरी क्लब बैंगलोर इंदिरानगर
मंडल 3190

कुछ लोग उनकी कड़ी मेहनत और प्रतिभा से पैसा कमाते है और अमीर बनते है। और कुछ के पास अनुभव की दौलत होती है। पुणे की रेणुताई के संबंध में दौलत का लाक्षणिक उपयोग खरे साहस और वीरता का उदाहरण है और वह आज के अरबपतियों से कम नहीं है। आज कल, महिलाएं विभिन्न व्यवसायों में काम कर रही है और सामाजिक अन्याय और हिंसा के विरुद्ध वास्तविक जंग लड़ रही है। आपकी बहुमूल्य सम्पादकीय और सजीव

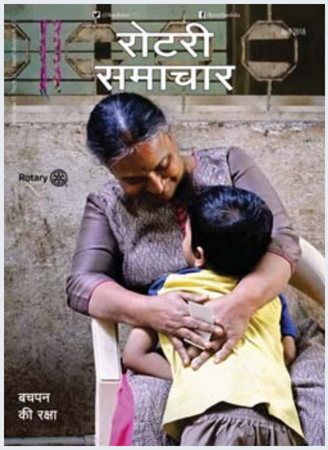

कवर पेज स्टोरी एक निर्भीक और बंधनमुक्त नारीत्व से संबंधित तथ्यों का खूबसूरत चित्रण करती है।

अरुण कुमार दाश
रोटरी क्लब बारीपदा - मंडल 3262

मैं रेणुताई (आशा शेट्ये) और उनके विलक्षण कार्य को *रोटरी समाचार* में छपा हुआ देखकर प्रसन्न हुआ। आशा शेट्ये और मैं मुंबई में दादर स्थित साने गुरूजी विद्यालय में एक ही कक्षा में पढ़ते थे, और वह एक होनहार छात्रा थी। हमने साथ में अनेक स्कूली और अंतर-स्कूली प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। कवर स्टोरी ने सभी अतीत की यादों को ताज़ा कर दिया।

वह एक असाधारण शख्सियत है, एक महान इंसान और बच्चों के लिए उनका काम ही उनके बारे में बहुत कुछ बोलता है। वह स्कूल के दिनों से ही एक अच्छी वक्ता और कथाकार थी और अब उनके भाषणों में उनके मानवीय कार्य के महान अनुभवों की खुशबू है।

रेणुताई के इस नेक काम में उनका सहयोग देने और उनके मिशन में उनकी सहायता करने के लिए मैं रोटेरियन सदानंद, दीपा भागवत और रोटरी क्लब पुणे लक्ष्मी रोड के सदस्यों को बधाई देता हूँ।

रेणुताई के काम का अच्छा कवरेज करने एवं उन्हें कवर पर दिखाने के लिए मुझे संपादक रशीदा भगत और उनकी टीम को धन्यवाद करना चाहिए। मुझे विश्वास है कि यह कवर स्टोरी अन्य रोटरी क्लबों को माता एवं शिशु देखभाल, रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से एक, हेतु और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करेगी।

IPDG प्रशांत भूषण - मंडला 3131

बच्चों के अवैध व्यापार को रोकने के लिए रेणुताई के कार्य की कवर स्टोरी आँखे खोल देने वाली है। रोटरी क्लब पुणे लक्ष्मी रोड के पूर्व अध्यक्ष, रोटेरियन सदानंद भागवत अपना सर्वश्रेष्ठ करने का प्रयास कर रहे है, लेकिन मुझे लगता है कि पुणे में किये जा रहे ऐसे उत्कृष्ट कार्य में अन्य रोटरी क्लबों को भी मदद करने की आवश्यकता है। रेणुताई को सलाम।

ग्रुप कैप्टेन वी जी देवधर
रोटरी क्लब नासिक - मंडल 3030

संपादकीय द्वारा प्रेरित परियोजना

मैं रोटरी क्लब अहमदाबाद वेस्ट (मंडल 3054) का अध्यक्ष-निर्वाचित हूँ।

मार्च संपादकीय में फोर-वे टेस्ट को सही मायने में अमल में लाने के लिए आपका आह्वान मुझे पसंद आया। हमारे जमीर को ललकारने के आपके प्रयास की मैं प्रशंसा करता हूँ। आपके इस लेखन से प्रेरित होकर, मेरी इच्छा है कि मैं अपने कार्यकाल के दौरान फोर-वे टेस्ट को प्रोत्साहित करने के लिए परियोजनाएं करूं। इसे आगे ले जाने के लिए मुझे आपके सुझावों की प्रतीक्षा है।

संदेश मुंद्रा
रोटरी क्लब अहमदाबाद - मंडल 3054

परियोजनाओं को अधिक स्थान दें

रोटरी समाचार को एक अत्यंत दिलचस्प पत्रिका बनाने के लिए बधाईयाँ। पत्रिका के माध्यम से, हमें रोटरी जगत में हो रहे अनेक कार्यक्रमों की जानकारी मिलती है। जबकि हमारी अपेक्षा देश भर में की जा रही रोचक सेवा परियोजनाओं के बारे में जानने की होती है, हमें पत्रिका के माध्यम से केवल राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों के बारे में ही जानने को मिलता है। लेकिन रोटरी नेतृत्वकर्ताओं की बहुत सी तस्वीरें होती है और 'सामान्य लेखों' के कम से कम 7-8 पन्ने होते है। कृपया रोटरी परियोजनाओं को अधिक स्थान दें।

प्रोफेसर दिनेश एच सोनी
रोटरी क्लब लातूर मिडटाउन - मंडल 3132

लेख एक *मददभरा हाथ* (मार्च अंक) उत्कृष्ट है और यह साबित करता है कि रोटेरियन बहुत सक्रिय है और कैंसर से पीड़ित बच्चों, की मदद करने में उदार है। इस उत्तम परियोजना के लिए रोटरी क्लब बॉम्बे मिडसिटी प्रशंसा का हकदार है। ऐसे उत्कृष्ट लेखों को विस्तृत सूचना के साथ छापने के लिए धन्यवाद क्योंकि ऐसी कहानियाँ अन्य क्लबों को समान कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगी।

टी डी भाटिया

रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार - मंडल 3012

अप्रैल अंक में ब्राजीलियाई टीम द्वारा किये गए मंडल 3000 के दौरे - *तमिलनाडु ने ब्राजीलियाई लोगों को आकर्षित किया,* जयश्री द्वारा - को छापने के लिए आपका धन्यवाद।

ब्राज़ील से दल के सदस्यों ने शुक्रिया अदा किया और उन्हें लगा कि लेख अच्छी तरह से लिखा गया है और वह यात्रा की उनकी असली भावनाओं को व्यक्त करता है। रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने के लिए आपके द्वारा किये जा रहे अच्छे काम के लिए भी हम आपको धन्यवाद देते है।

डी जी पी गोपालकृष्णन - मंडल 3000

रचनात्मकता के लिए नई खोज

लेख *परिकल्पना की तलाश* सुझावों एवं निष्कर्षों का प्रलेख प्रस्तुत करता है जिनसे रोटरी अंतर्राष्ट्रीय लाभांवित होगी।

लेख रोई अध्यक्ष बैरी रेसिन के रवैये, सिद्धांत और सोचने के तरीके के इर्द-गिर्द घूमता है।

वह कहते है कि रोटारेक्टर रोटरी के जीवन बीमा है और हमें विभिन्न तरीकों से रोटारेक्ट से रोटरी में उनके पारगमन को सुगम बनाने पर ध्यान देना चाहिए। बैठकों को इलेक्ट्रॉनिक तरीके से प्रति वर्ष संचालित करने के लिए वह विधान परिषद् के पुनर्गठन की सिफ़ारिश करते है।

वी के बंसल

रोटरी क्लब दिल्ली अपटाउन - मंडल 3012

एक आदर्श रोटरी स्कूल

कुछ वर्ष पूर्व एक राज्य-स्तरीय अबेकस प्रतियोगिता के लिए मैं मूदबिदरी में थी और मुझे रोटरी स्कूल में शिक्षकों के लिए एक कार्यशाला संचालित करने का प्रस्ताव दिया गया। कुछ घंटों के अंदर, मैं इस स्कूल में कार्यक्रम आयोजित कर पायी। स्कूल की बसें और कक्षाएं अच्छी स्थिति में थी और मैंने जाना कि वहाँ शिक्षक के अनुपस्थित होने पर एक बच्चा कक्षा को संभालता है। वह देखने लायक एक अद्भुत स्कूल था।

वसंती रंगनाथन

टीआरएफ कैडर - मंडल 3232

एक दिलचस्प अंक

रोचक विषयों और एक उपयुक्त कवर पृष्ठ की तस्वीर के साथ अप्रैल अंक प्रकाशित हुआ। *संपादक के संदेश में, 'संपत्ति कई रूपों में आती है' शीर्षक के अंतर्गत* दो महिलाओं की विपरीत कहानियों को बताया गया। पहली कहानी रंक-से-राजा बनने वाली हांगकांग की झोऊ कुनफेई की है और फिर, हमारे ध्यान को एक अलग प्रकार की दौलत पर ले जाया गया.. पुणे निवासी रेणुताई की कहानी की ओर जिनमें प्रेम, करुणा और परवाह कूट-कूट कर भरी हुई है। वह पुणे में लावारिस बच्चों की देखभाल करती है। महिला दिवस पर लिखने के लिए ये कहानियाँ उपयुक्त है।

आरआईपीई बैरी रेसिन पर लिखित *परिकल्पना की तलाश* उल्लेखनीय है। सामाजिक मीडिया के माध्यम से रोटरी गतिविधियों के लिए बेहतर कवरेज हासिल करने का उनका विचार बहुत बढ़िया है क्योंकि इससे समुदायों को यह समझने में मदद मिलेगी कि रोटरी किसका समर्थन करती है।

वाराणसी की खूबसूरत तस्वीरें अत्यंत मनोहर है। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बेंगलुरु में केवल निःशक्तजनों के लिए एक नया रोटरी क्लब शुरू किया जा रहा है। ऐसे ही सुयोग्य विषयों द्वारा *रोटरी समाचार* के स्तर को बनाये रखे।

एम टी फिलिप

रोटरी कल्ब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

रोई मंडल के अर्थपूर्ण सन्देश बक्सा

मार्च अंक में, रोई निदेशक सी भास्कर का संदेश, साफ़ पानी एवं स्वच्छता को सुनिश्चित करने के नियमों को समझने एवं उनपर जागरूकता फैलाने के लिए रोटेरियनों को प्रोत्साहित करेगा। जैसा कि उनके द्वारा बताया गया था, पिछले तीन वर्षों में मंडल 3262 में संपन्न सफल WinS कार्यक्रमों ने बच्चों में सकारात्मक व्यावहारिक परिवर्तन लाना शुरू कर दिया है। अधिक स्कूलों तक पहुँच और लाभान्वित स्कूलों की निगरानी, बच्चों में स्वच्छता एवं अच्छी सेहत को बेहतर बनाने में अच्छे परिणाम लाएंगे।

आर मुरली कृष्ण

रोटरी क्लब बेरहामपुर - मंडल 3262

रोई निदेशक सी. भास्कर के सन्देश ने रोटरी की भूमिका के साथ-साथ, स्वच्छ जल एवं स्वच्छता के महत्व को सतर्कतापूर्वक कवर किया है।

उन्होंने साफ़ पानी एवं स्वच्छता को बनाये रखने की जरूरत, और बच्चों के स्वास्थ्य पर इसके प्रभावों एवं थळपड कार्यक्रम की भूमिका को समुचित रूप से समझाया।

यह सच है कि हम रोटेरियनों ने पोलियो के खिलाफ एक लंबी एवं सफल जंग लड़ी है और अब समय आ गया है कि समुदाय के लिए साफ़ पानी एवं स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए हम एक नए अभियान पर काम शुरू करें।

विजय हत्तिहोली

रोटरी क्लब हुबली नॉर्थ - मंडल 3170

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

Governors Council

RI Dist 2981	DG	P S Ramesh Babu
RI Dist 2982	DG	Dharmesh R Patel
RI Dist 3000	DG	P Gopalakrishnan
RI Dist 3011	DG	Ravi Choudhary
RI Dist 3012	DG	Sattish Singhal
RI Dist 3020	DG	G V Rama Rao
RI Dist 3030	DG	Dr K Sunder Rajan
RI Dist 3040	DG	Dr Zamin Hussain
RI Dist 3053	DG	Rajkumar Bhutoria
RI Dist 3054	DG	Maullin Manubhai Patel
RI Dist 3060	DG	Ruchir Anirudh Jani
RI Dist 3070	DG	Parvinder Jit Singh
RI Dist 3080	DG	T K Ruby
RI Dist 3090	DG	Bagh Singh Pannu
RI Dist 3110	DG	Vinay Kumar Asthana
RI Dist 3120	DG	Ranjeet Singh
RI Dist 3131	DG	Abhay Gadgil
RI Dist 3132	DG	Vyankatesh Vithal Channa
RI Dist 3141	DG	Prafull J Sharma
RI Dist 3142	DG	B M Sivarraj
RI Dist 3150	DG	J Abraham
RI Dist 3160	DG	Madhu Prasad Kuruvadi
RI Dist 3170	DG	Anand G Kulkarni
RI Dist 3181	DG	M M Chengappa
RI Dist 3182	DG	G N Prakash
RI Dist 3190	DG	Asha Prasanna Kumar
RI Dist 3201	DG	Vinod Krishnan Kutty
RI Dist 3202	DG	Sivashankaran P M
RI Dist 3211	DG	Suresh Mathew
RI Dist 3212	DG	Chinnadurai Abdullah
RI Dist 3231	DG	Jawarilal Jain K
RI Dist 3232	DG	R Srinivasan
RI Dist 3240	DG	Sunil Saraf
RI Dist 3250	DG	Vivek Kumar
RI Dist 3261	DG	Harjit Singh Hura
RI Dist 3262	DG	Ajay Agarwal
RI Dist 3291	DG	Brojo Gopal Kundu

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2017–18)

DG B M Sivarraj — RI Dist 3142
Chair – Governors Council

DG R Srinivasan — RI Dist 3232
Secretary – Governors Council

DG Abhay Gadgil — RI Dist 3131
Secretary – Executive Committee

DG Vivek Kumar — RI Dist 3250
Treasurer – Executive Committee

DG P Gopalakrishnan — RI Dist 3000
Member – Advisory Committee

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

बलात्कार की बढ़ती घटनाएं...
भारतीय महिलाओं के लिए एक चुनौती

हाल ही में जम्मू-कश्मीर के कठुआ और उत्तर प्रदेश के उन्नाव में हुए दो बलात्कार के मामलों में पूरे भारत में पीड़ा और उपद्रव का जो सैलाब उमड़ा, वह देखने लायक था। पिछली बार, इस तरह का विरोध प्रदर्शन, उल्लंघन, और मोमबत्ती जुलूस, 2012 में निर्भया के बलात्कार के समय देखने को मिला था। उस अपराध की वीभत्स क्रूरता, और वो भी दिल्ली की सड़कों पर, दिमाग को सुन्न कर गई थी । इस बार, हमारे पास एक आठ साल की बच्ची है, आसिफा बानो, जिस का अपहरण कर और बेहोशी की दवा दे कर, आठ लोगों ने कई बार बलात्कार किया, उनमें से दो पुलिसकर्मी हैं, वहीं एक अन्य किशोरी का नृशंस विधायक द्वारा बलात्कार किया गया जिसे वह ''भैया'' कहती थी। हमेशा की तरह, राजनेताओं ने एक दूसरे पर दोष मढ़ने का खेल शुरू कर दिया है, पर अब कोई बेवक़ूफ़ नहीं बनेगा और ना ही बनना चाहिए।

हां, यह बेहद शर्मनाक है कि हमारे आस-पास ऐसे पुरुष हैं जिनमें लेश मात्र भी मानवता नहीं बची है। वासना की लिप्सा के कारण एक असुरक्षित किशोरी का रेप ही ख़ौफ़नाक है; लेकिन एक मासूम बच्ची के नाजुक जिस्म का इस्तेमाल, किसी भी तरह का बदला लेने के लिए, बेहद घिनौना और घृणित कार्य है। पुरुषों का एक झुंड और शर्म की बात है महिलाएं भी, आरोपी को बचाने की कोशिश में खड़ी हो गईं, यह बहुत ही शर्मनाक है। सन 2012 में, स्विट्ज़रलैंड में एक अंतरराष्ट्रीय समारोह में जहाँ लगभग 140 देशों के पत्रकार एकत्रित हुए थे, मुझे कई तरह के तीर झेलने पड़े थे, जैसे ''क्या महिलाएँ भारत में वास्तव में सुरक्षित हैं? या भारत में पुरुषों को हो क्या गया है?''

हालांकि हमारा स्तब्ध मस्तिष्क ऐसे प्रश्नों को ले कर छटपटाता है कि हमारा समाज कितना नीचे गिर चुका हैं, और क्या बेटों की परवरिश करने में कहीं कोई गहरी चूक हुई है, दिल जानता है कि दुनिया में कहीँ भी,किसी भी अन्य महिलाओं की तरह भारतीय महिलाएं कई मायनों में विशिष्ट हैं - तेज, तीव्रबुद्धि, उज्ज्वल, जीवंत, भावुक, ऊर्जा से भरपूर। वरना वरिष्ठ रो इ नेतृत्व, रोटरी में योग्य महिलाओं को लाने के लगातार प्रयास नहीं कर रहा होता। आगामी रो ई अध्यक्ष बैरी रेज़िन सहित प्रत्येक आगामी रो इ अध्यक्ष ने, मैंने जिनका भी साक्षात्कार लिया - इस बात पर बार बार ज़ोर दिया है कि अपने विषम लिंग अनुपात को सही किए बिना, अपने नाम के अनुरूप, रोटरी का कोई भविष्य नहीं है ... जहां महिलायें केवल 22 प्रतिशत हैं। जबकि भारत में, यह आंकड़ा, इसका आधा ही है, और भारत में इस लिंग अनुपात को सही करने के लिए रोटरी नेतृत्व कड़ी मेहनत कर रहा है। ज़्यादा महिला सदस्यों का सीधा मतलब होगा ज़्यादा सार्थक परियोजनाऐं, यही मंत्र है। तो इससे हमें क्या पता चलता है? भारतीय समाज में ग़ज़ब की महिलाएं हैं ...सक्षम और योग्य महिलाए ... बस, रोटेरियनों को उन्हें ढूंढ निकालना है।

अगर ये सच है, जो कि यकीनन है, तो यही वो समय है जब भारतीय समाज में महिलाएं ज़िम्मेदारी ले लें कि, अपनी बेटियों के, बल्कि अपने बेटों में और अच्छी तरह से, ये बात दिमाग में डाल दें कि बेटियाँ सुन्दर कपड़ों और गहनों से सजा सिर्फ एक शरीर ही नहीं है। अधिक नहीं तो वह बेटे की तरह ही महत्वपूर्ण है और उस से उसी प्रकार व्यवहार करें। वह न तो गर्भ में हत्या के लायक है और न ही माँ बाप पर अवांछित बोझ, पहला मौका मिलते ही जिसकी शादी कर दी जाए। बेशक चीजें बदल तो रही हैं, लेकिन उतनी गति से नहीं। लेकिन भारतीय महिलाएं, विशेष रूप से युवा महिलाएं गुस्से में हैं और जब भी कोई वीभत्स बलात्कार होता है, वो अपना आक्रोश और प्रतिरोध व्यक्त, करती हैं। सौभाग्यवश, ज़्यादातर भारतीय पुरुष भी ऐसे ही महसूस करते हैं। हम महिलाओं को आगे आ कर सारी दुनिया को बताना पडेगा कि बलात्कार मंज़ूर नहीं है, हम इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे और जब जब भी ऐसा होगा हम हर बार न्याय की मांग करेंगे। आइए अपनी बेटी, बहनों और मां को इस गंभीर और घृणित अपराध से बचाने के लिए सिर्फ अपने राजनेताओं या कानून के रखवालों के खाली और खोखले वादों पर निर्भर न रहें। तो क्यों ना हम दुर्गा और शक्ति के गुणों को ग्रहण कर लें।

Rasheeda Bhagat

रशीदा भगत

अध्यक्ष
की ज़बानी

एक दृष्टि जो हमें एकजुट करती हैं

प्रिय साथी रोटेरियन,

रोटरी एक विशाल, और एक अत्यंत जटिल संगठन है। दी रोटेरियन का यह अंक प्रेस में जाने तक, हमारे पास दुनिया के लगभग हर देश में 35,633 क्लबों में 1.2 मिलियन सदस्य है। रोट्रैक्ट, इन्ट्रैक्ट, यूथ एक्सचेंज, रोटरी यूथ लीडरशिप अवार्ड्स, रोटरी कम्युनिटी कॉर्प्स, रोटरी पीस सेंटर्स, स्थानीय एवं संस्थान समर्थित कार्यक्रमों और राष्ट्रीय, मंडलीय, एवं स्थानीय स्तर के कार्यक्रमों जैसे रोटरी कार्यक्रमों में लाखों हिस्सेदार शामिल है। रोटरी का नाम प्रति वर्ष होने वाली अनगिनत परियोजनाओं से जुड़ा है, ब्लड बैंक से लेकर भोजन बैंक तक, स्कूल स्वच्छता से लेकर पोलियो उन्मूलन तक। प्रथम रोटरी क्लब की स्थापना के एक सौ तेरह वर्ष बाद, रोटरी की सेवाएँ वस्तुतः दुनिया भर में पहुँचती है।

वो सेवा दैनिक और साप्ताहिक स्तर पर कैसी दिखती है यह क्षेत्र, देश, और क्लब के अनुसार अत्यंत विविध हो सकता है। प्रत्येक क्लब का अपना इतिहास, प्राथमिकताएं, और पहचान होती है। इससे यह बात सामने आती है कि रोटेरियनों की पहचान, और उनके द्वारा की जा रही सेवा में वे क्या उद्देश्य देखते है, में समान रूप से काफी विभिन्नताएं है। इसमें कुछ गलत नहीं है, क्योंकि रोटरी की संरचना विकेंद्रीकृत है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक रोटेरियन और प्रत्येक रोटरी क्लब को उन तरीकों से सेवा प्रदान करने के योग्य बनाना है जिनमें वे संतुष्ट हो।

फिर भी जो विविधता हमें इतना शक्तिशाली बनाती है वह एक संगठन के रूप में हमारी पहचान के लिए चुनौतियाँ भी खड़ी कर सकती है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि बहुत से लोग जिन्होंने रोटरी के बारे में सुना है उन्हें अभी भी इस बात की कम जानकारी है कि रोटरी क्या करती है, हम कैसे संगठित है, या हमारा अस्तित्व क्यों है। यहाँ तक कि रोटरी के अंदर भी, बहुत से सदस्यों को हमारे वृहद संस्थान, हमारे लक्ष्यों, या हमारे कार्यक्रमों की सीमाओं एवं दायरों के बारे में पूरी समझ नहीं है। इन चुनौतियों के महत्पूर्ण आशय है, केवल अधिक प्रभावशाली ढंग से सेवा करने की हमारी क्षमता के लिए ही नहीं, बल्कि हमारी सार्वजनिक छवि के लिए भी जो सदस्यता, साझेदारी के निर्माण, और सेवा हेतु हमारी क्षमता के लिए अत्यावश्यक है।

कई वर्ष पूर्व, रोटरी ने इन मुद्दों, हमारी ज़ाहिर और ब्रांड पहचान को मजबूत करने हेतु साधनों का विकास, को संबोधित करने के लिए पूरे संस्थान में एक गंभीर प्रयास की शुरुआत की है। आज, हम उन साधनों का इस्तेमाल हमारे 'कार्यवाही करने वाले लोग' की सार्वजनिक छवि अभियान को विकसित करने के लिए कर रहे है, जो उस क्षमता को प्रदर्शित करता है जिसे हमारे समुदायों एवं उससे परे एक परिवर्तन लाने के लिए रोटरी द्वारा हम में से प्रत्येक को दी गई है। पिछली जून में, आपके रोटरी अंतर्राष्ट्रीय निदेशक मंडल ने एक नए लक्ष्य विवरण को अपनाने के लिए मतदान किया, जो हमारी पहचान और हमारे कार्य की विविधता को एक करने वाले एकमात्र उद्देश्य को प्रतिबिंबित करता है।

एक साथ, हम ऐसी दुनिया देखते है जहाँ लोग दुनिया भर में, हमारे समुदायों में, और स्वयं में स्थायी परिवर्तन लाने के लिए एक होकर कार्य करते है।

हम जहाँ भी रहते हो, जो भी भाषा बोलते हो, हमारे क्लब जो भी कार्य करते हो, हमारी परिकल्पना एक ही है। हम सब ऐसी दुनिया देखते है जो बेहतर हो सकती है और जिसे बेहतर बनाने में हम मदद कर सकते है। हम यहाँ इसलिए है क्योंकि रोटरी हमें ऐसी दुनिया का निर्माण करने का अवसर प्रदान करती है जिसे हम देखना चाहते है - एक साथ मिलकर कार्य करें क्योंकि *रोटरी: परिवर्तन ला रही है*।

इयन एच एस राय्सली
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

रो ई निदेशक
का संदेश

युवा शक्ति

प्रिय रोटेरियनों,

''पूरी दुनिया के लिए युवा शक्ति आम संपत्ति है। युवाओं के चेहरे हमारे अतीत, हमारे वर्तमान और हमारे भविष्य के चेहरे है। कोई भी अन्य आयु वर्ग हमारे युवाओं की शक्ति, आदर्श, उत्साह और साहस का मुकाबला नहीं कर सकता,'' नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने कहा।

मार्च 13, 1968 को स्थापित हुए पहले रोट्रैक्ट क्लब की स्थापना को इस वर्ष 50 वर्ष पूरे हो जायेंगे। उसकी उत्पत्ति और भी पुरानी है। काफी पहले 1935 में, पॉल हेरिस ऑस्ट्रेलिया में रोटरी के सिद्धांतों पर आधारित एक युवा संगठन से जुड़े। 1950 के दशक में विभिन्न नामों के अंतर्गत रोटरी क्लबों द्वारा अनेक युवा क्लबों को प्रायोजित किया गया। इनमें यूरोप का ''पॉल हेरिस सर्कल्स'' और कुछ अमेरीकी विश्वविद्यालयों में बनाये गए ''रोटर्स क्लब'' शामिल है। 1965 तक, इन संगठनों में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई - कुछ हद तक इसलिए क्योंकि 1962 में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय द्वारा इंटरैक्ट कार्यक्रम बनाया गया था। बहुत से इंटरैक्टर, उस कार्यक्रम की आयु सीमा के पूर्ण होने पर, 'वरिष्ठ इंटरैक्ट' नामक नए क्लबों की शुरुआत कर रहे थे। नए कार्यक्रम का नाम, रोट्रैक्ट, रोटरी अंतर्राष्ट्रीय द्वारा रखा गया और इसका उद्देश्य था ''समुदाय की सेवा के माध्यम से नेतृत्व एवं जिम्मेदार नागरिकता को विकसित करना।''

रोटरी, युवा नेतृत्वकर्ताओं को नेतृत्व कौशलों पर उनकी स्वयं की शिक्षा और समुदाय की सेवा करने की प्रतिबद्धता की जिम्मेदारी उठाने के लिए प्रेरित करती है। यह सहभागिता उनके नेतृत्व, नियोजन और संगठनात्मक कौशलों को निखारने में मदद करती है, जिससे उनमें जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है और उनमें एक सकारात्मक दृष्टिकोण जन्म लेता है। सकारात्मक नेतृत्व के अवसर वयस्कता में जवाबदेह पारगमन की सहायता करते है और सामाजिक एवं भावनात्मक कल्याण को प्रोत्साहित करते है। संक्षिप्त में, आज के युवा अगली नेतृत्वकर्ताओं की पीढ़ी होंगे।

रोटारेक्टर रोटरी परिवार के महत्वपूर्ण सदस्य है जो रोटेरियनों के साथ एक सच्चे ''सेवा में साझेदार'' की तरह कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते है। युवाओं को नेतृत्व के बारे में समझाना आसान नहीं है और इसे समझने के लिए बहुत कम किताबे उपलब्ध है। इसलिए इंटरैक्ट और रोटारेक्ट जैसे हमारे संगठनों के लिए यह जरुरी है कि वे युवाओं में नेतृत्व कौशलों का विकास करें और उन्हें प्रोत्साहित करें। रोटरी दृढ़तापूर्वक यह मानती है कि नेतृत्व का मतलब नेतृत्व करना सीखना है।

रोटरी क्लब उनके व्यापारिक सहयोगियों, सामुदायिक समूहों, पड़ोसियों एवं उनके स्वयं के परिवारों के माध्यम से सदस्यता में वृद्धि करने में रोट्रारेक्ट की सहायता कर सकते है।

चलिए इस वर्ष का उत्सव युवाओं को प्रोत्साहित करके एवं समुदाय की भलाई के लिए छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों तक पहुंचने में रोटरी की सहायता करके मनाये। रोटारेक्ट की स्वर्ण जयंती को चिन्हांकित करने के लिए क्लब एक साथ मिलकर योजना का निर्माण एवं परियोजनाओं को बढ़ावा दे सकते है।

फिर से जुड़ने एवं अपने क्लबों में पूर्व रोटारेक्ट सदस्यों को शामिल करके अपनी सदस्य संख्या को बढ़ाने का यह बहुत अच्छा समय है। दुनिया को परिवर्तित करने के लिए रोटरी वास्तव में युवा शक्ति में विश्वास रखती है। दुनिया की सेवा करने के अपने सपने को रोटरी साकार कर सकती है यदि प्रत्येक रोटेरियन युवाओं के लिए होने वाले कार्यक्रमों में अपनी पूरी ताकत लगा दे। युवा पूर्ण रूप से प्रायोगिक है और उनकी प्रतिभा एवं क्षमताओं का पूरा इस्तेमाल करके, रोटरी अधिक अर्थपूर्ण एवं मजबूत बन जाएगी।

C. Baske

सी भास्कर

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

फाउंडेशन न्यासी

अध्यक्ष का संदेश

रोटारेक्टरों को रोटरी क्लब में शामिल होने का आमंत्रण दें

दुनिया की 50 प्रतिशत आबादी 30 वर्ष से कम उम्र की है। तो यह जरूरी है कि हम पूछे: युवा क्या चाहते है? बेशक, हर पीढ़ी को यह सवाल पूछना चाहिए। लेकिन आज यह सवाल रोटरी के लिए भी जरूरी है क्योंकि यदि हमें समुदायों, जो स्वयं पूरे समय विकसित एवं परिवर्तित हो रहे है, की उत्तम सेवा करना है तो हमारे क्लबों को विकसित होना ही चाहिए।

वर्ल्ड इकनोमिक फोरम द्वारा हाल ही में 186 देशों के 30 वर्ष से कम उम्र के 30,000 लोगों पर किया गया ग्लोबल शेपर्स सर्वे कुछ उपयोगी परिज्ञान प्रदान करता है।

अधिकांश प्रतिवादी जलवायु परिवर्तन और संघर्ष को हमारे द्वारा सामना किये जाने वाली सबसे जटिल चुनौती मानते है। युवा सशक्तिकरण के लिए वे एक स्टार्ट-अप पारितंत्र और उद्यमिता के महत्व की भी कदर करते है। हालाँकि, वे उनकी आवाज सुने जाने को लेकर कम आशावान है। सर्वे में आधे से अधिक प्रतिवादी नहीं मानते कि उनके देशों में महत्वपूर्ण निर्णयों को लेने से "युवाओं के विचारों" को ध्यान में रखा जाता है। (कुछ अच्छी खबर: इस वर्ष कई दर्जन देशों की मेरी यात्रा के दौरान, अनेक रोट्रैक्टरों ने मुझे बताया कि वे मानते है रोटरी नेतृत्वकर्ताओं द्वारा उनकी आवाज सुनी जा रही है!)

यह स्पष्ट है कि युवा उन मुद्दों को प्रभावित करना चाहते है जो हमारी दुनिया और हमारे समुदायों के लिए मायने रखते है। इन सब से ऊपर, जब वे किसी परियोजना में खुद को समर्पित करते है तो वे परिणाम देखना चाहते है। एक अच्छा उदाहरण है रोटरी क्लब ब्रांचबर्ग टाउनशिप, न्यू जर्सी, के सदस्य तुलसी और अनिल महार्जन की पिता-पुत्र जोड़ी। हमारे संस्थान द्वारा दिए गए अनुदानों की मदद से, तुलसी और अनिल 2015 के भूकंप से बचे लोगों की मदद के लिए नेपाल में माइक्रोक्रेडिट, छात्रवृत्ति, और गृह निर्माण परियोजनाओं को कार्यान्वित कर रहे है।

2016 विधान परिषद् (CoL) में किये गए बदलावों के कारण, क्लबों को अब जैसा वे ठीक समझे वैसा संचालन करने की आजादी है। इसका मतलब है बैठकों के आयोजन के संबंध में क्लब मॉडलों का व्यापक चयन।

इस आजादी को गले लगाकर, हम अनिल - एक पूर्व ई-क्लब सदस्य जो अपने पिता के रोटरी क्लब से जुड़े - जैसे अधिक उदाहरणों को उत्पन्न कर सकते है। इसके आलवा, मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप निजी तौर पर रोटारेक्टरों को रोटारेक्ट का सदस्य रहते हुए एक रोटरी क्लब से जुड़ने के विकल्प का लाभ लेने के लिए प्रोत्साहित करें। और यह सीखने में उनकी मदद करें कि कैसे हमारा संस्थान दुनिया में अच्छा करने के उनके सपनों को हासिल करने में उनकी मदद कर सकता है!

आज कार्यवाही करके, हम 200,000 से भी अधिक रोटरी के भावी नेतृत्वकर्ताओं के लिए आने वाली कई पीढ़ियों के लिए एक वास्तविक परिवर्तन लाने की उनकी अपनी विरासत छोड़ने का मार्ग प्रशस्त कर सकते है।

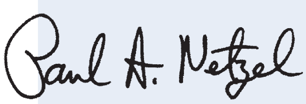

पॉल ए नेटज़ेल
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

कैसे हम रोटरी में युवाओं को बेहतर तरीक से शामिल कर सकते है? मैं आपके विचार जानना चाहता हूँ। मुझे *paul.netzelrotary.org* पर ईमेल भेजिए।

A PART OF HISTORY

The german kitchen.
Since 1898.

Head Office and Showroom:

A- 248, Mahipalpur Extension, NH-8,
Delhi-Gurgaon Road, New Delhi-110037,

[T] +91-11-46102000 [E] info@hacker-kitchens.com

häcker
kitchen.germanMade.

www.haecker-india.com
www.haecker-kuechen.com

AHMEDABAD	BANGALURU	CHENNAI	COIMBATORE	DELHI
9879538977	9740999350	9442081111	9500210555	9313134488

HYDERABAD	INDORE	JAIPUR	KOCHI	LUDHIANA	MUMBAI	MANGALURU	THRISSUR
9700058285	9425803599	9414058718	9895058285	9815048222	9322987229	7899119955	7025991000

स्कूल में बच्चे अब ज़मीन पर नहीं बैठते

रशीदा भगत

ये दिल्ली, मुंबई या चेन्नई नहीं, बल्कि एक छोटा सा शहर है सोनकच्छ, जो अपेक्षाकृत अल्प विकसित राज्य मध्य प्रदेश में स्थित है और आबादी है सिर्फ 20,000। यह जिला मुख्यालय नहीं वरन मात्र एक तहसील है। छोटे से लेकिन बेहद जीवंत और ऊर्जा से भरपूर, सिर्फ 40 सदस्यों वाले रोटरी क्लब ऑफ सोनकच्छ (मंडल 3040) ने, स्कूल फर्नीचर की आपूर्ति की है - वेल्डेड बैंच और डेस्क की - वो भी भारी तादाद में, इस क्षेत्र के1000 स्कूलों में। फर्नीचर परियोजना की कुल लागत- ₹3 करोड़।

''आप इस क्षेत्र या आस-पास के किसी भी स्कूल में चले जाएं, इसकी पूरी संभावना हैं कि फर्नीचर रोटरी ने ही दिया है।'' यह कहना है इस क्लब के सदस्य पीडीजी एस एन लाठी का।

उन्होंने और वर्तमान डीजी डॉक्टर ज़मीन हुसैन, दोनों ने, इंदौर से लगभग

75 किलोमीटर दूर, छोटी सी जगह में मेरा औपचारिक और हृदयस्पर्शी स्वागत किया और फिर हम स्कूल के फर्नीचर देखने निकल पड़े। हमारा पहला पड़ाव सोनकच्छ में सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय, जहां 1,000 से ज्यादा छात्र, छात्राएँ अध्ययन करते हैं।

बच्चों ने रोटेरियन्स को तुरंत पहचान लिया, और मुस्कुराते हुए उत्साह से हमारा स्वागत किया। मैं कक्षा 7 और 8 में लड़कों और लड़कियों के साथ बातचीत करती हूं और देखती हूँ कि उनके सपने भी वैसे ही हैं जैसे भारत में कहीं पर भी उस उम्र के बच्चों के होते हैं ... शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर बनने के। एक अन्य लड़की फौजी बनना चाहती है, दूसरी पायलट और इसी प्रकार और भी थे।

डॉ हुसैन बड़े गर्व से कहते हैं, ''मैंने कक्षा 6 से 11 तक इस विद्यालय में पढ़ाई की है। उन दिनों सभी सरकारी स्कूलों में पढ़ते थे ...

Dinesh Rathore

मंडल 1880 के रोटेरियन एक शौचालय के निर्माण के लिए चायनमेना गाँव में आधार पत्थर रखते हुए। चित्र में डीजी ज़मीन हुसैन भी शामिल है।

शीर्ष अधिकारियों, राजनेताओं, व्यवसायियों और साधारण लोगों के बच्चे भी। मैं कहना चाहूँगा कि मुझे बहुत अच्छी शिक्षा मिली है।'' उसके बाद वह एक डॉक्टर बन गए, यही प्रमाण काफी है।

क्लब के पूर्व अध्यक्ष, सौभाग सिंह ठाकुर, एक मर्मस्पर्शी घटना याद करते हुए कहते हैं कि एक स्कूल में जहां उन्होंने फर्नीचर का पहला सेट दिया था, ''किस तरह, शुरू में सभी बच्चों के लिए बेन्च नहीं थी। तो बेंच पर बैठने के लिए, बच्चे समय से पहले ही स्कूल आ जाते थे ...सुबह 6.30 बजे ही, जबकि कक्षाएं 7.30 बजे शुरू होती हैं।''

यहां फर्नीचर 2012-13 में दिया गया था। मैं शिक्षक महेश सामरिया से पूछती हूं, तो रोटरी की इस परियोजना से क्या फ़र्क पड़ा है। बहुत बड़ा अंतर वे कहते हैं। ''इससे पहले बच्चों को जमीन पर बैठ कर लिखने में बहुत

कठिनाई होती थी। अब वो लिखने में थकान महसूस नहीं करते और ये बहुत आरामदायक हैं।''

कई स्कूलों में, रोटेरियन्स ने पानी के टैंक भी लगाए हैं और मैंने देखा कि इस विद्यालय में वह लगभग नया दिख रहा है, जबकि इसे 2002 में रखा गया था।

तो वे रोटरी से और क्या अपेक्षा रखते हैं? शिक्षक ने तुरन्त जवाब दिया: ''हमें एक वाटर कूलर की जरूरत है; बल्कि दो की। हमारे यहाँ एक बोर वेल है, पानी की टंकी है और पानी भी साफ़ आता है, लेकिन गर्मियों में पानी बहुत गर्म हो जाता है। वाटर कूलर लगने से बच्चों को बहुत खुशी होगी।''

अगले स्कूल में भी, जहां सभी लड़कियाँ पढ़ती हैं, पानी के कूलर के लिए ही अनुरोध किया गया । इस स्कूल में 800 लड़कियां हैं और डीजी हुसैन का कहना है कि रोटेरियन्स ने यहाँ सैनिटरी नैपकिन बाँटे और वेंडिंग मशीन भी लगाई है, यहाँ एक सैनिटरी पैड पांच रुपये में दिया जाता है। गंदे नैपकिन के स्वच्छ निस्तारण के लिए इंसिनेटर्स (भट्टी) भी लगाए गए हैं।

एक स्कूल बिजली रहित

यह जान कर मैं दुखी और स्तब्ध दोनों हूं कि इंदौर से करीब 100 किलोमीटर दूर चयनमैना गांव के सरकारी माध्यमिक विद्यालय में बिजली नहीं है। शिक्षकों में से एक, नंदलाल राठौड़ का कहना है कि उन्हें आरसी सोनकच्छ के रोटेरियन्स से कंप्यूटर देने के लिए कहना अच्छा लगेगा। ''मुझे यकीन है कि वे हमारे अनुरोध को स्वीकार कर लेंगे, लेकिन जब हमारे पास बिजली की आपूर्ति ही नहीं है, तो हम इंटरनेट का उपयोग नहीं कर पाएंगे। हाँ, मेरे पास एक लैपटॉप ज़रूर है, मैं इसे घर पर चार्ज करता हूं और छात्रों को इंटरनेट पर मौजूद चमत्कारों के बारे में बताता हूं।''

इस विद्यालय में बिजली नहीं है, यह और भी आश्चर्यजनक बात है, वो भी तब जबकि रोटरी ने एक तरह से इस गांव को गोद ले रखा है और हर घर में शौचालय बनवाया है। उनके घरों में बिजली है या नहीं यह पूछने पर सभी बच्चों ने समर्थन में सिर हिलाया।

यह विचित्र बात है; गांव के सभी घरों में तो बिजली है पर सरकारी स्कूल में नहीं, यह कैसे संभव है? उत्तर दिया पीडीजी लाठी ने, ''बिल का चक्कर है ... कौन करेगा बिजली के शुल्क का भुगतान।'' मेरे सवाल के जवाब में, कि आरसी सोनकच्छ ऐसा क्यों नहीं कर सकता, इस क्लब के सदस्य डीजी ज़मीन हुसैन कहते हैं कि पहले से ही मंडल में कई रोटरी क्लब कई स्कूलों के बिजली के बिल का भुगतान करते हैं। ''अगर इस स्कूल के 60 से 70 प्रतिशत बच्चे पास हो जाते हैं, तो हमारा क्लब प्रोत्साहन के रूप में ऐसा कर सकता है।'' वह अपनी सहमति देते हैं।

इसके अलावा, वे कहते हैं, ''हमारे मंडल में बिजली के बिना बहुत सारे स्कूल हैं। मेरे पास कुछ दान दाता हैं, और उनसे पूछूंगा कि क्या वे बिजली के बिल का भुगतान कर सकते हैं। प्रत्येक स्कूल के लिए, यह राशि केवल ₹ 500 के आसपास होगी''

लेकिन झुलसा देने वाले गरमी में बच्चे कमरे के अंदर कैसे बैठ पाते हैं, क्योंकि कक्षाओं में पँखे तो हैं लेकिन बिजली कनेक्शन के बिना वे बेकार हैं, मैं पूछता हूं। कक्षा 8 की छात्रा दुर्गा ने कहा, ''हम पढ़ाई के लिए बाहर जाकर खुले में बैठते हैं।'' लेकिन फिर ''रोटरी द्वारा दिए गए स्कूली फ़र्नीचर'' के बावजूद, यह, एक बार फिर से फर्श पर वापस आना है! और यह देख कर तरस आता है!

दिनेश राठौर, एक RCC सदस्य और फोटाग्राफ़र, एक रोटरी शौचालय के सामने खड़े हैं।

एक शिक्षक, अनिल तिवारी से सुन कर बहुत अच्छा लगा, हालांकि लड़कियां साधनहीन परिवारों से आती हैं, फिर भी उनमें से बहुत सी उच्च शिक्षा के लिए आगे जाती हैं। ''वे वास्तव में कड़ी मेहनत करती हैं और करीब 70 से 80 प्रतिशत लडकियां उच्च माध्यमिक परीक्षा पास कर लेती हैं। उस समूह में से लगभग 60 प्रतिशत कॉलेज जाती हैं, जबकि 40 प्रतिशत की शादी हो जाती है क्योंकि यह एक अर्ध-ग्रामीण क्षेत्र है और माता-पिता हमेशा शादी की जल्दि में रहते हैं। ''वह एक छात्रा के बारे में गर्व से बताते हैं

रोटरी क्लब कलीवलैंड के रोटेरियन डेव डिफेंडल चायनमेना गाँव के क्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र में।

जो आईआईटी खड़गपुर तक पहुँची और उसे ₹15 लाख वार्षिक पैकेज मिला।

जैसे-जैसे हम दूसरे स्थानों पर गए, दीवार पर लगे एक पोस्टर ने ध्यान आकर्षित किया: *बेटी है तो कल है।* भला इससे कौन इनकार कर सकता है?

मैं डीजी हुसैन से पूछती हूं, तो भारत के अर्ध-ग्रामीण क्षेत्र में, सिर्फ 40 सदस्यों वाले एक छोटे से क्लब की इस परियोजना के पीछे क्या रहस्य है, जो आर्थिक रूप से प्रभावशाली तो है ही, साथ ही स्थायी भी है, वो भी टीआरएफ़ के स्थायी मंत्र का प्रयोग शुरू करने से पहले। ''मैम, यह बहुत सरल है, वह जवाब देते हैं। सबसे पहले तो, हमारे क्लब में कोई राजनीति नहीं होती। और हम हमेशा अपने भागीदारों को समय समय पर परियोजना के बारे में अवगत कराते रहते हैं और उनके पैसे को किस प्रकार खर्च किया जा रहा है, उस खाते की विस्तृत जानकारी तुरंत भिजवाते हैं। हमने उनके पैसे का कितने विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग किया है, वो खुद देखें, इसके लिए हम उन्हें आमंत्रित करते हैं। दरअसल, हम अक्सर उन स्कूलों की सूची भेजते हैं जहां हमने फर्नीचर दिया है, और उन्हीं से पूछते हैं कि वे कौन से स्कूल का निरीक्षण करना चाहते हैं, इसलिए पूरी पारदर्शिता है।''

क्लब ने कई टीआरएफ मैचिंग ग्रान्ट किए हैं और अब वह एक ग्लोबल ग्रान्ट (वैश्विक अनुदान) का कार्यान्वियन व संचालन कर रहा है। वह खुद 1988 में क्लब में शामिल हुए थे और लगातार दो वर्षों (1998-2000) के लिए इसके अध्यक्ष रहे।

लेकिन निश्चित ही यह सामान्य बात नहीं है, और क्या इसकी अनुमति थी? ''आम तौर पर यह अनुमति नहीं मिलती, लेकिन उस वर्ष में, क्योंकि मैंने कई परियोजनाएं शुरू की थीं, मेरे क्लब के सदस्यों ने आग्रह किया कि मुझे अध्यक्ष बने रहना चाहिए।

फर्नीचर परियोजना की शुरुआत कैसे हुई, हुसैन कहते हैं, ''लगभग 20 साल पहले हमारे क्लब ने फैसला किया था, चूँकि ज्यादातर सरकारी स्कूलों में फर्नीचर (डेस्क और बेंच) नहीं होते हैं, बच्चों को

शुरू में सभी बच्चों के लिए बेन्च नहीं थी। तो बेंच पर बैठने के लिए, बच्चे समय से पहले ही स्कूल आ जाते थे... सुबह 6.30 बजे ही, जबकि कक्षाएं 7.30 बजे शुरू होती हैं।

सौभाग सिंह ठाकुर

पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब सोनकच्छ

एक लभार्थी स्कूल साइट पर रोटरी क्लब सोनकच्छ के रोटेरियनों और पीडीजी सत्यनारायण लाठी के साथ, डीजी डॉ ज़मीन हुसैन और उनकी पत्नी रशीदा।

जमीन पर बैठ कर पढ़ने की वजह से दो प्रमुख स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता था। एक, उन्हें लिखने के लिए नीचे झुकना पड़ता था जिस की वज़ह से रीढ़ की हड्डी भी झुक जाती थी; और दूसरा, आंखों और किताब के बीच की दूरी को, जो लगभग 25 सेमी होनी चाहिए, बनाए नहीं रख सकते थे, इससे उनकी आंखों पर बहुत ज़ोर पड़ता था जो सीधे उनकी दृष्टि को प्रभावित करता।''

यह पूछने पर कि उनके रोटरी क्लब लोहे की बजाय लकड़ी या अन्य सामग्री से बने बेंच और डेस्क क्यों नहीं देते और वो आपस में वेल्डेड भी हैं, वे कहते हैं कि यह टिकाऊ और मजबूती के लिए है। एक सेट की लागत ₹2,000 पड़ती है; ''हमें एक बहुत ही अच्छा विक्रेता मिला है और बड़ी मुश्किल से वो इस कीमत पर देने के लिए राजी हुआ सिर्फ इसलिए क्योंकि उसे पता है कि फर्नीचर सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए है।''

और मेज के साथ बेंच को वेल्डिंग करने की भी एक वज़ह है; ''हम इसे एक ही इकाई में बनाते हैं क्योंकि स्कूलों में या सरकारी कार्यक्रमों के लिए अक्सर वे बैंच और कुर्सियां ले जाते हैं, और कौन जानता है कि वो वापस आएंगी भी या नहीं! यह इकाई इतनी बड़ी है कि इसे कोई भी नहीं ले जाएगा! और बच्चों के लिए भी सरकाने या फेंकने के लिए यह बहुत भारी है।''

मैंने देखा, इसका पूरा ध्यान रखा जाता है कि वेल्डिंग सही ढंग से की गई है और इसमें कोई भी नुकीले या तीखे किनारे नहीं हैं जो बच्चों को नुकसान पहुंचा सकें। एक स्कूल में तो मुझे 1999 – 2000 की बैंच मिलीं और वे भी अच्छी स्थिति में; उस पर लिखी इबारत अभी भी स्पष्ट है, लिखा है – यह परियोजना टीआरएफ अनुदान के साथ रोटरी क्लब क्लीवलैंड, मंडल 6630, यूएस; रोटरी क्लब मिलानो, मंडल 2040, इटली; और आर.सी. सोनकच्छ, मंडल 3040 के साथ सम्मिलित रूप से की गयी।

गवर्नर बताते है कि वास्तव में उनका क्लब ''पहले से कई छोटी छोटी परियोजनाएं कर रहा था और कुछ वर्षों तक तो हमें टीआरएफ से मिलने वाली मैचिंग ग्रान्ट के बारे में मालूम ही नहीं था । फिर पहला अनुदान हमें 1978 में मिला, जब हमने बालवाड़ी के लिए फर्नीचर बनाया था।''

इस परियोजना ने 1998 में ज़ोर पकड़ा और तब से ले कर अब तक विभिन्न अनुदानों के साथ ये रोटेरियन्स 1,000 स्कूलों तक पहुंच चुके हैं और परियोजना की लागत ₹3 करोड़ पार कर गई है। हुसैन कहते हैं, ''हमने 20 से अधिक अनुदान किए हैं, और वर्तमान में ₹40 लाख की एक ग्लोबल ग्रान्ट चल रही है।'' दिलचस्प बात यह है कि यह रोटेरियन इतने चाव से काम कर रहे हैं कि ''सोनकच्छ ब्लॉक पूरी तरह से संतृप्त हो गया है, और अब हम मध्य प्रदेश में अन्य रोटरी क्लबों के माध्यम से दूसरे स्कूलों को फर्नीचर प्रदान करवा रहे हैं। यह हमारी हस्ताक्षर परियोजना है और इस क्षेत्र में रोटरी अपने स्कूल फर्नीचर के लिए जाना जाता है।''

वे कहते हैं, ''अब अगर मण्डल 3040 में कोई क्लब किसी स्कूल को फर्नीचर देना चाहता है, तो हम कहते हैं कि आप टीआरएफ़ में केवल ₹25,000 का योगदान दें और हम उस स्कूल को मुफ्त में फर्नीचर देंगे।

परियोजना के सामर्थ्य और जारी रहने के पीछे कारण यह है, कि ''हमारे साझेदारों को हम पर जबर्दस्त यकीन है क्योंकि परियोजना की प्रगति की जानकारी और खर्चे का विवरण हम उनके साथ लगातार साझा करते हैं। पारदर्शिता, जवाबदेही और विश्वसनीयता सभी है यहाँ पर, और जब हमारे विदेशी भागीदार, इटली, अमेरिका या जर्मनी से आते हैं – वर्तमान रोई निदेशक पीटर इब्लेर, जो रोटरी क्लब ऑफ नूरनबर्ग-राईसवल्ड, जर्मनी से हैं, ने भी एक परियोजना का दौरा किया है – तो हम उनसे परियोजना का उद्घाटन करवाते हैं, माला, गुलाब की पंखुड़ी, ड्रम आदि के साथ उनका शानदार स्वागत करते हैं। वो देखते हैं कि क्या क्या काम किया गया है और इसकी जानकारी अपने सहयोगियों को देते हैं,'' डीजी ने कहा।

पीडीजी लाठी ने बताया कि एक बार इटली से एक रोटेरियन अपनी फर्नीचर परियोजना को देखने के लिए आया था ''हमने साफा, मालाओं आदि के साथ उसका रंगीन और शाही स्वागत किया था, लौट कर जब उसने अपने क्लब के सदस्यों को यह सब बताया तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। फिर हुआ यूँ कि अगली बार वह 20 सदस्यों के साथ आया, जब हमने उनका भी वही शाही अंदाज़ में शानदार स्वागत किया तो वे सभी बहुत रोमांचित और खुश हुए, अंततः हमारे स्थायी भागीदार बन गए।''

हम चयनमैना गांव के लिए चलते हैं, जो रोटेरियन्स ने वास्तव में गोद लिया है और आरसीसी (रोटरी कम्युनिटी कॉर्प्स) के उत्साही सदस्यों की मदद से इसकी काया पलट दी, जैसे दिनेश राठौर, सभी 30 लोग, रोटरी के बारे में बात करते समय अत्यन्त हर्ष और उत्साह से भर जाते हैं। यह युवक एक कंप्यूटर कोचिंग सेंटर चलाता है, और रोटरी कार्यक्रमों में फोटोग्राफी करता है, जिसके द्वारा वह अपनी आजीविका चलाता है।

मार्ग में पड़ने वाले कम से कम तीन स्कूलों के बारे में बताते हैं लाठी, ''रोटरी फर्नीचर। इस ब्लॉक के दूर दराज़ के अंदरूनी हिस्सों में, जहां-जहां सरकारी स्कूल है वहाँ-वहाँ रोटरी ज़िन्दा है। सोनकच्छ से लेकर चयनमैना गांव तक पांच विद्यालयों में आपको हमारा फर्नीचर मिलेगा । यहाँ तक कि 20 से 50 परिवार वाले गांव मे भी जहाँ जहाँ स्कूल हैं, वहाँ हमने फर्नीचर दिया है क्योंकि हम नहीं चाहते कि कोई भी बच्चा स्कूल में फर्श पर बैठे,'' वह गर्व से कहते हैं।

हुसैन कहते हैं, ''देवास के जिला शिक्षा अधिकारी ने फर्नीचर के लिए सभी स्कूलों को हमारे रोटरी क्लब में आवेदन करने के लिए कहा है।'' वहीं लाठी बताते हैं, ''स्थानीय नेता, यहां तक कि सांसद और विधायक तक हमें बुला कर कहते हैं कि: हमने घोषणा कर दी है कि रोटरी स्कूल फर्नीचर मुहैया करवाएगा, इसलिए कृपया

सोनकच्छ ब्लॉक पूरी तरह से संतृप्त हो गया है, और अब हम मध्य प्रदेश में अन्य रोटरी क्लबों के माध्यम से दूसरे स्कूलों को फर्नीचर प्रदान करवा रहे हैं।

डीजी ज़मीन हुसैन

इन इन स्कूलों में फर्नीचर के इतने सेट भिजवा दें!''

हुसैन याद करते हैं कि 1998 में जब वह अध्यक्ष थे, टीआरएफ़ ने एक चिल्ड्रन ऑपोर्चुनिटी ग्रान्ट की घोषणा की थी, और क्लबों से आवेदन आमंत्रित किए गए थे। ''पूरे मंडल में एकमात्र हमारा क्लब था जिसने तुरंत आवेदन भेज दिया था और हमने 1,200 छात्रों के लिए किताबें और यूनिफार्म प्रदान करने के लिए धनराशि की मांग की थी। फिर हमने विक्रेता के साथ बातचीत की और स्पष्ट रूप से उसे कहा कि किसी को कमीशन देने की जरूरत नहीं है, लेकिन कीमत कम से कम लगाएं; और हम 2,100 बच्चों को समायोजित करने में कामयाब रहे!''

लाठी को भी उस विशेष परियोजना की याद ताज़ा हो आई ''इस क्षेत्र में आदिवासी बहुत हैं और यहां से करीब 60 किलोमीटर दूर, बगली में, जब हमने बच्चों को नई यूनिफार्म दी, तो एक बच्चे की मां की आँखों में आँसू भर आए,वो बोली: मेरे बच्चे ने अपने जीवन में पहली बार नए कपड़े पहने हैं।''

चयनमैना में, रोटेरियन्स का एक बार फिर गर्मजोशी से स्वागत होता है। वे 1990 से यहां काम कर रहे हैं; इस क्षेत्र में, हुसैन कहते हैं, ''3 एच अनुदान के तहत, हमने 200 शौचालय बनाये। भारत सरकार, आज शौचालयों की बात कर रही है, जबकि यहां बहुत पहले हमने सुनिश्चित कर लिया था कि इस गांव के हर घर में एक शौचालय होगा। आज हर एक में शौचालय है, रोटरी पहिये की पहचान के साथ!''

यह केवल 2,000 की आबादी वाला एक ठेठ भारतीय गांव है; संकीर्ण गलियों और धूल के साथ हमारी एसयूवी संघर्ष करती चल रही है। वृक्ष के नीचे एक वृद्ध व्यक्ति खाना खा कर खटिया पर सुस्ता रहा है; गाय के गोबर सूख रहे हैं, स्कूल से थोड़ी दूरी पर एक ट्रैक्टर खड़ा है, दुपहिया मोटरचालित वाहनों के साथ, इसके साथ ही गाँव में वाहनों की गिनती पूरी होती है। लाठी कहते हैं, ''यही असली भारत है, जहां रोटरी की जरूरत सबसे ज्यादा है।''

घर भले ही घास फूस और कंक्रीट से बने हैं, लेकिन शौचालय प्रत्येक घर में है। दिनेश राठौर हर शौचालय में अन्तर्निहित रोटरी व्हील की ओर इंगित करते हैं, और लाठी कहते हैं, ''हमने 2011 में 180 शौचालय बनाए थे, और उन दिनों प्रत्येक पर लगभग ₹16,000 खर्च किए थे।''

हम इस गांव के सरकारी मिडिल स्कूल में जाते हैं जिसमें 110 बच्चे हैं। दुर्गा वर्मा, एक डॉक्टर की बेटी, और उसकी दोस्त रंजना और साक्षी सभी शिक्षक बनना चाहते हैं। कक्षा 8 में उनके सहपाठी, हर्षवर्धन, एक इंजीनियर बनना चाहते हैं, पर शिक्षक का बेटा आयूश एक पुलिसकर्मी बनना चाहता है। मेधा और निशा दोनों डॉक्टर बनना चाहती हैं जबकि रुपाली सेना में शामिल होना चाहती है। यह सुन कर सुखद आश्चर्य हुआ जब लड़कियों ने कहा कि वे सभी कॉलेज जा कर अपनी उच्च शिक्षा पूरी करना चाहती हैं और यह भी कि वे अपने परिवार की बाध्यता के चलते जल्दी विवाह नहीं करेंगी।

जब पूछा गया कि वे रोटरी से क्या चाहते हैं तो एक शिक्षक नंदलाल राठौर कहते हैं; ''एक प्रोजेक्टर। मेरे पास एक लैपटॉप है और मैं बच्चों को इंटरनेट के ज़रिये कई रोचक बातें दिखाना चाहता हूं।''

अंतिम प्रश्न डीजी हुसैन की तरफ ही जाना था। अपने क्लब के माध्यम से रोटरी के लिए चल रही परियोजनाओं के लिए उनका जुनून और समर्पण देखकर, मुझे आश्चर्य होता है कि उन जैसे डॉक्टर को यह सब करने का समय कैसे मिलता है। सिर खुजलाते, वह मुस्कुराते हैं, ''अच्छा सवाल है। मैं अक्सर अपने आप से भी यही सवाल पूछता हूं ... मुझे लगता है कि यह एक जुनून है, जो रोटरी आपके भीतर तक उतार देता है।''

वह सरलता से कहते हैं: ''हमारे मंडल में सबसे बड़ी परियोजना है चुनाव।'' तो वह कैसे चुने गए? ''मैंने स्पष्ट कहा था कि मैं दारू नहीं पिलाऊंगा; यदि आपको लगता है कि मैं आपके भरोसे के काबिल हूं तो मुझे चुनें नहीं तो मैं आपका नेता नहीं बनना चाहता।''

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

1998 में टीआरएफ़ की परियोजना के जरिये छात्रों के लिए यूनिफार्म प्रदान किया। एक बच्चे की मां की आँखों में आँसू भर आए,वो बोली: मेरे बच्चे ने अपने जीवन में पहली बार नए कपड़े पहने हैं।

पीडीजी एस एन लाठी

Ergo Bed

Smart. Adjustable.Technology.

EQUIPPED WITH 5 ZONE
5 ZONE PIN CORE LATEX MATTRESS

Serta AMERICA'S #1 Mattress Brand NOW IN INDIA

80 YEARS OF EXPERIENCE

feast | surf the net | read a book | watch TV | massage

With advanced and improved technology, the sleek European design Ergo bed will let you choose your own style of comfort. With an easy push of a button, this bed will freely adjust to any position of activity you desire: you can dine on your bed, use your laptop, read comfortably, lie down while watching TV, or simply relax and enjoy different intensities of noiseless vibration massages. The mattress is made of superior 100% natural pin core latex with high-grade specifications for optimal body support and comfort. Further, it also provides health benefits with the use of the Zero G position which optimizes blood circulation.

ADJUSTABLE ERGO BASE WARRANTY 20 YEARS LIMITED

LATEX MATTRESS WARRANTY 10 YEARS LIMITED

Company Showrooms: Mumbai – 022-49739066 , Bangalore – 080-41654425, Chennai - 044-48516188
Authorised Franchisees: Décor World – Hyderabad – 040-66746622, Adinath Furnitures – Surat – 0261-2634567, Impex United – Cochin - 9746471257, Dimensions Furniture & Lifestyle – Indore – 0731- 2552855, Foam Home – Mumbai – 022-23514135, Galaxy Impex – Pune – 9823815169, ND Enterprises – Navi Mumbai – 022-65111155, Diya Enterprises – Coimbatore – 9500806444, Naaz Mattress Gallery – Gurgaon – 9871170247/8700309691
Authorised Dealers: Shangar Furnishing – Vadodara – 0265-2321775, The Handloom Emporium – New Delhi – 011-22443311, Jain Foam Palace – New Delhi -011-41554162, Rajwada Décor – New Delhi - 011-45508926, Luxe Furnishing – Hyderabad – 040-23002977, Trisul Foams – Vijayawada – 0866-2489122/2579122

Serta®
WE MAKE THE WORLD'S BEST MATTRESS.™

Manufactured & Marketed by: Emirates Sleep Systems Pvt. Ltd. (Under license from Serta Inc, USA.)

EMIRATES Sleep Systems Pvt. Ltd.

Sales & Marketing Office: Office No # 0955 L-9, Raheja Towers, East Wing, No.26/27 MG Road, Bangalore 560001, India. Email: admin@sleepsystems.in

/sertaindia @sertaindia /sertaindia

www.sertaindia.com

उदारता का उत्सव मनाते हुए

जयश्री

मंडल 3141 और 3232 ने आरआईपीई बैरी रेसिन के भारत दौरे के सम्मान में टीआरएफ भोज का आयोजन किया, और मुंबई और चेन्नई में भारतीय दानकर्ताओं की उदारता का अभिनन्दन किया।

टीआरएफ के मुख्य दानकर्ता और AKS सदस्यों का अभिनन्दन करने हेतु मुंबई में आयोजित एक समारोह में रोई अध्यक्ष निर्वाचित बैरी रेसिन ने कहा, ''आप सभी को विशेष धन्यवाद। आपके नेतृत्व और समर्थन ने दुनियाभर में मानवता के लिए इतना कुछ करने में संस्थान की मदद की है।'' रोटरी क्लब बॉम्बे, मंडल 3141, ने रोटेरियन अरविन्द जी जॉली और उनकी पत्नी रश्मि को आर्च क्लम्फ सोसाइटी में शामिल करने हेतु इस विशेष समारोह का आयोजन किया। जिसका समुचित रूप से नाम था 'नमन', यह मंडल के परोपकारियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए था, डीजी प्रफुल्ल शर्मा ने अपने स्वागत संबोधन में कहा। मंडल में कई मुख्य दानकर्ता और पांच AKS सदस्य है - ''जल्द ही और भी सदस्य शामिल होने वाले है,'' उन्होंने आगे कहा।

''मैं किसी से भी पैसे माँगने वालों में से नहीं हूँ। मैं यह मानता हूँ कि अगर आप वाकई यह समझते है कि आपके द्वारा दिए गए दान का संस्थान क्या करता है, तो मांगने की जरुरत ही नहीं है,'' आरआईपीई ने कहा। उनके जोशीले संबोधन में उन्होंने विभिन्न ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में टीआरएफ के जादुई स्पर्श के बारे में बात की, और ''उनका प्रत्येक उदाहरण इसी बात पर ज़ोर दे रहा था कि यहीं काम आपके द्वारा दिया गया दान दुनिया के लिए करता है और इसलिए मैं संस्थान का समर्थन करता हूँ।''

बिल गेट्स द्वारा रोटरी को बारंबार समर्थन देने, विशेषकर पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम के लिए, के बारे में आरआईपीई रेसिन ने कहा कि उन्होंने ऐसा इसलिए किया ''क्योंकि वह जानते है कि उनके द्वारा हमें दिया गया प्रत्येक डॉलर यह सुनिश्चित करने के लिए उचित ढंग से खर्च होता है कि हमारे द्वारा बच्चों के लिए किया गया वादा हम पूरा कर सके। हमने 1.7 बिलियन डॉलर इकठ्ठा किये और 2.5 बिलियन बच्चों को टीके लगाए। आप जैसे लोगों की उदारता के कारण, बहुत जल्द दुनिया पोलियो से मुक्त होगी। आप इसे संभव करते है।''

प्रति वर्ष 1,300 से भी अधिक शांति निर्माताओं, जो संघर्ष ग्रस्त क्षेत्रों में संवेदनशीलता ला सकते है, के माध्यम से रोटेरियनों द्वारा टीआरएफ में दिए गए योगदान शांति एवं संघर्ष समाधान में सहायता करते है। उन्होंने इजराइल के एक शांति निर्माता का किस्सा

आरआईपीई बैरी रेसिन (बाएं) और रोई निदेशक सी भास्कर (दाएं) के साथ डीजी प्रफुल शर्मा, AKS सदस्यों अरविंद जी जोली और उनकी पत्नी रशमि को मुंबई में सम्मानित करते हुए।

बाएं से : *प्रीति शाह, डीजी प्रफुल शर्मा, डीजीई (3142) एशस गंगुली, डीजीई (3232) बाबु पेरम, पीआरआईडी अशोक महाजन, डीजीई (3141) शशि शर्मा, पीडीजी लता सुब्रायुडु, आरआरएफसी विजय जालन, आरआईडीएन भारत पांड्या, डीजीएनडी सुनील मेहरा, मंडल सचिव गिरीश मित्तल और अशोक अजमेरा, आरआईपीई बैरी रेसिन के साथ।*

सुनाया जो अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत एक परिवार के साथ फिलिस्तीन में रहा, शुरुआती द्वेष के बावजूद भी उसे उस परिवार द्वारा स्वीकार कर लिया गया; जब वह जा रहा था, उस परिवार की दादी ने उससे कहा कि वह इजराइल को स्वीकार नहीं करेगी लेकिन उसका स्वागत है।

इससे पहले उन्होंने दिल्ली के कुछ स्कूलों का दौरा किया जहाँ WinS कार्यक्रम लागू किया गया है। आपको आपके ''स्कूलों में WASH'' कार्यक्रम पर गर्व होना चाहिए। जहाँ कहीं भी मैं जाता हूँ, स्कूलों में पानी एवं स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए मैं इस कार्यक्रम को एक आदर्श के तौर पर इस्तेमाल करता हूँ। यह केवल स्वछता प्रदान करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह आचरण बदलने के बारे में है।''

2010 में हाइती में आए भूकंप के बाद रोटरी के कार्यों का हवाला देते हुए, रेसिन ने बताया कि कैसे एक मिलान अनुदान द्वारा एक स्थानीय क्लब को प्रदान की गई एक जीप मातृ-शिशु मृत्यु दर को 50 प्रतिशत से कम कर सकती है। ''जहाँ स्थानीय क्लब ने 100 डॉलर का योदगान दिया, वहीं संस्थान ने 70,000 डॉलर देकर परियोजना का समर्थन किया। करीब एक मिलियन डॉलर द्वारा हाइती में हमारे द्वारा समर्थित अनेक परियोजनाओं में से, लोगों ने जीप के बारे में अधिक बातें की।''

टीआरएफ को 1.2 मिलियन डॉलर का योगदान देकर शीर्ष दानकर्ताओं में से एक बने रहने के मंडल 3141 के ट्रैक रिकॉर्ड का जिक्र करते हुए, उन्होंने नवनिर्वाचित गवर्नर शशिकुमार शर्मा से लक्ष्य को 7 मिलियन डॉलर पर सेट करने के लिए कहा। ''मुझे भरोसा है आप इसे पूरा कर लेंगे,'' उन्होंने कहा। रोटेरियनों से उन्होंने आगे कहा, अपना बटुआ खोलिए। इसलिए नहीं कि यह आपका लक्ष्य है या आपको एक दान करना है। बल्कि इसलिए क्योंकि हमें आपकी मदद की आवश्यकता है। बाहर के लोगों को आपकी आवश्यकता है।''

रोई निदेशक सी भास्कर ने इस तथ्य को बताया और उसकी प्रशंसा की कि पहली बार AKS का स्वागत समारोह इवेंस्टन के बाहर आयोजित हुआ है। यह हमारे रोटेरियनों की उदारता को प्रकट करेगा और ऐसे ही अन्य प्रयासों को प्रेरित करेगा,'' उन्होंने कहा और भारतीय रोटेरियनों की परोपकारी मानसिकता पर प्रकाश डाला जिसके कारण टीआरएफ को देने के मामले में भारत दूसरे स्थान पर है। ''हम बड़े दान देने के मामले में पहले स्थान पर, अक्षय निधि के मामले में दूसरे स्थान पर और AKS में दान के मामले में तीसरे स्थान पर है। पूरी दुनिया में 800 AKS सदस्य है और उन जैसे लोगों के कारण ही आज दुनिया एक बेहतर जगह है,'' उन्होंने कहा और उन्होंने नवनिर्वाचित अध्यक्षों से आग्रह किया कि वे गैर रोटेरियनों को टीआरएफ एवं रोटरी के अच्छे कार्यों को समझाए ताकि वे उनके दानों को संस्थान में दे सकें।

रोटेरियन अरविन्द जॉली और उनकी पत्नी रश्मि को AKS प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। जॉली 1982 से रोटरी क्लब बॉम्बे के सदस्य है, जबकि रश्मि महाराष्ट्र एवं गोवा के लिए चेक गणराज्य की माननीय महावाणिज्यदूत है। ''मैं गुमनाम रहकर ही संस्थान को

बाएं से : डीजी आर श्रीनिवासन, ईएमजीए सेम पतिबंडला, आरआईडीएन फ़्लोयड लांसिया, आरआईडी सी भास्कर, आरआईपीई बैरी रेसिन, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, आरपीआईसी राजदुराई माइकेल और पीडीजी ISAK नज़र।

सहयोग देना चाहता था, लेकिन यदि मेरा यह कदम एक प्रेरणा बन सकता है तो मुझे उदाहरण बनकर अगुवाई करने में प्रसन्नता होगी,'' जॉली ने कहा। उन्होंने याद किया कि कैसे रश्मि ने क्लब बैठकों में हिस्सा लेकर चलन स्थापित किया था। ''आज यह कोई नई बात नहीं है। लेकिन तब, महिलाओं को सहर्ष शामिल नहीं किया जाता था। तब से हमने काफी तरक्की कर ली है। अब महिलाएं हमसे भी कई अधिक अग्रसक्रिय है,'' उन्होंने आगे कहा।

पीआरआईडी अशोक महाजन, जिनका यह गृह नगर है, ने कहा, छोटे एवं बड़े दान द्वारा रोटेरियन और गैर-रोटेरियन संस्थान का समर्थन कर रहे है, इस विश्वास के साथ कि संस्थान के उद्देश्य काबिल एवं विश्वसनीय हाथों में है। ''इस विश्वास का उपयोग एक शक्ति के रूप में करना चाहिए जो सभी रोटरी परिवारों को समझ कर बेहतर सहायता को प्रोत्साहित करेगी। मंदी, युद्ध, संघर्ष और आपदाओ के बावजूद भी, टीआरएफ बहुत अच्छी तरक्की कर रहा है। बहुत से रोटेरियन ऐसे है जिन्हें संस्थान द्वारा प्रायोजित विशेष कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं की पूरी समझ नहीं है, तब भी वे योगदान देते है क्योंकि वे समझते है कि संस्थान प्रभावी रूप से एवं निपुणता के साथ संसार में अच्छा कर रहा है।''

पीआरआईडी भरत पंड्या, डीजीएन हरजीत सिंह तलवार, RISAD से टीआरएफ प्रबंधक शकुंतला राहा, RRFC विजय जालान, पूर्व गवर्नर और अन्य AKS सदस्य एवं प्रमुख दानकर्ता भी मौजूद थे। रोटरी क्लब मुंबई डाउनटाउन सीलैंड की प्रीती शाह संयोजक थी। डीजीई शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

चेन्नई की ओर

अगले दिन दोनों रोटरी नेतृत्वकर्ता मंडल 3000, 3231 और 3232 के नवनिर्वाचित अध्यक्षों एवं सचिवों को उनके डीजीईयों और SETS में प्रेरित करने के लिए चेन्नई में थे। एटलांटा से आरआईडीएन फ्लॉयड लेंसिया और उनकी पत्नी बेट ने भी कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

डीजी आर श्रीनिवासन ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया और DRFC सागर ने मंडल की सेवा परियोजनाओं पर रोशनी डाली। उनके कोष में 750,000 डॉलर होने के साथ, मंडल 3232 एक मिलियन डॉलर के वार्षिक लक्ष्य को हासिल करने की राह पर है, उन्होंने कहा।

रेसिन और सी भास्कर ने AKS सदस्यों एवं प्रमुख दानकर्ताओं का अभिनंदन किया। जहाँ डीजीएनडी मुत्तु पालनीअप्पन अघड लीग से जुड़े, वहीं पीडीजी जे बी कामदार अब तक 410,000 डॉलर के कुल योगदान के साथ दूसरे स्तर - चेयर सर्किल - में कदम रखने की तैयारी कर रहे है, पीडीजी राजा सीनिवासन ने उनके द्वारा पूर्व में किये गए 281,000 डॉलर के योगदान में और 10,000 डॉलर शामिल किये। पीडीजी ISAK नज़र दूसरे स्तर के प्रमुख दानकर्ता बने, और रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन के रोटेरियन अंबालावनन तीसरे स्तर के प्रमुख दानकर्ता बने। कार्यक्रम ने अनेक नए प्रमुख दानकर्ताओं को भी सम्मानित किया।

आरआईपीई रेसिन ने कहा कि भारत में उनके हफ्ते भर के दौरे के दौरान उनके द्वारा की गई चार शहरों - दिल्ली, जयपुर, मुंबई और चेन्नई - की यात्रा में वह रोटेरियनों की सहभागिता एवं जोश देखकर

प्रभावित हुए। पोलियो उन्मूलन के लिए भारतीय रोटेरियनों द्वारा किये गए असाधारण कार्य की उन्होंने तारीफ की। ''जब दुनिया ने सोचा कि आपका देश पोलियो खत्म करने वाला आखिरी देश होगा, तब रोटरी ने उन सभी को गलत साबित किया। इस देश को पोलियो-मुक्त बनाने के लिए आपके द्वारा किये गए अद्भुत कार्य के लिए आपका धन्यवाद। शीर्ष के लेने वाले देश से, आपने स्वयं को शीर्ष के देने वाले देश में विकसित किया है। बधाइयाँ।''

दिन की शुरुआत में किये गए VHS अस्पताल के उनके दौरे की बात करते हुए, उन्होंने कहा कि वह रोटरी द्वारा उसके 3H अनुदान के माध्यम से किये गए कार्य से विस्मित हुए। ''आपके अच्छे कार्य के कारण लोगों को अब केवल 11 डॉलर में एक विस्तृत रक्त प्रोफाइल मिलेगी। मेरे देश में, इसकी लागत 400-500 डॉलर पड़ेगी।''

वह तब द्रवित हो गए जब VHS ब्लड बैंक में रक्त-आधान करवा रही एक 12 वर्षीय लड़की बिस्तर से उठी और ''एक बड़ी मुस्कान देते हुए मुझसे अपना हाथ मिलाया। वह हर चार हफ्ते में रक्त-आधान करवाने ब्लड बैंक जाती है और रोटरी उसे, और प्रतिदिन उसके जैसे 20 लोगों को, यह सुविधा प्रदान करती है। यह आपके दिल को छूता है। यह आपको छूता है। वे सब ऐसा इसलिए कर सके क्योंकि आप संस्थान को दान देते है। आप उन्हें उम्मीद दे रहे है,'' उन्होंने भावपूर्वक कहा।

संस्थान में निधियों के प्रवाह के बारे में बात करते हुए उन्होंने समझाया कि कैसे टीआरएफ को दान किये गए 100,000 डॉलर में से 50 प्रतिशत वापस मंडल में आता है। ''मैं ऐसे किसी अन्य परोपकारी संगठन को नहीं जानता जो मेरे द्वारा दिए गए दान का 50 प्रतिशत वापस देता हो और कहता हो कि तीन साल बाद आप इसे जिस परियोजना पर चाहे खर्च कर सकते है। और इससे भी अधिक, हमारी मदद के लिए हमारे पास वैश्विक अनुदान भी है। क्या कोई अन्य संगठन है जो ऐसा करता है? नहीं। यही बात हमें अनोखा बनाती है।''

आपके अच्छे कार्य के कारण लोगों को अब केवल 11 डॉलर में एक विस्तृत रक्त प्रोफाइल मिलेगी। मेरे देश में, इसकी लागत 400-500 डॉलर पड़ेगी।

अधिकतर वैश्विक अनुदान परियोजनाओं के माध्यम से स्वास्थ्य एवं उपचार पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए निदेशक भास्कर ने मंडल 3232 की प्रशंसा की और कहा कि देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों के लिए चेन्नई चिकित्सीय उपचार का एक प्रमुख केंद्र है। ''यह आश्चर्य की बात है कि उत्तर-पूर्व से चेन्नई आने वाले अधिकांश मुसाफिर चिकित्सीय मदद के लिए आते है और रोटरी इनमें से ज्यादातर अस्पतालों को जीवन-रक्षक उपकरण देकर उनकी सहायता कर रहा है। क्लब अध्यक्षों को ऐसे उदाहरणों को आपके परिचितों को बताना चाहिए ताकि संस्थान में दान देने के लिए उन्हें प्रेरित किया जा सके,'' उन्होंने कहा, आगे कहते हुए कि उन्हें यह अवश्य सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक सदस्य भी टीआरएफ में कम से कम 100 डॉलर का दान दे।

चित्र : जेयश्री

रोटरी और लेखन दोनों उनके जुनून हैं

रशीदा भगत

वह एक प्रतिबद्ध और जुनूनी रोटेरियन ही नहीं बल्कि एक उत्साही लेखक भी है, जो 1972 में ओरिएंट पेपरबैक्स द्वारा प्रकाशित पहली पुस्तक आकर्षक शीर्षक '*ए हैण्डबुक फ़ॉर द हाउसवाइफ़*' के साथ लगभग 50 पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

उसके बाद अन्य किताबें भी जल्दी आईं, अनगिनत विषयों को छूती हुई गुजरती है पीडीजी (मंडल 3080) प्रेम भल्ला की घुमावदार लेखन यात्रा, प्रेरणादायक पुस्तक श्रृंखला जैसे ''वे टू ...'' और ''हाउ टू सक्सीड इन ...'' और पाक कला पर भी एक पुस्तक से ले कर वर्तमान में धार्मिक विषयों पर, जिस में उनकी गहरी रुचि है।

गृहिणियों के लिए ही पुस्तिका क्यों, इस सवाल के जवाब में, वैसे वो किताब काफी अच्छी रही वे कहते हैं, ''मुख्य कारण यह था कि मैंने बहुत सी उच्च शिक्षित महिलाओं को देखा था, हमारे अपने परिवार के भीतर भी, जो पढ़ी लिखी तो बहुत थी लेकिन मुझे लगा कि घर चलाने, बच्चों व पति की देखभाल करने और ससुराल वालों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के लिए उन्हें

पीडीजी प्रेम भल्ला, छात्रों के साथ, एक गढ़वाल स्कूल में।

मार्गदर्शन की जरूरत है, और वो भारतीय घरों में परिवार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं । मैंने तब विचार किया था, और अभी भी सोचता हूँ, कि एक गृहणी का काम अनंत है और उसे घर को सुचारू रूप से चलाने के लिए बहुत से कार्यों में दक्ष होना चाहिए।'' दिलचस्प बात यह है कि पहला अध्याय प्रसन्नता पर है और यह इस बात पर ज़ोर देता है कि हर महिला को खुश रहने का अधिकार है।

जब वे थे पुस्तक लिख चुके और यह सफल भी हो गई, तो कई लोगों ने कहा कि एक किताब पुरुषों के लिए क्यों नहीं, ''इसलिए मैंने पुरुषों के लिए लिखी - *ए हैण्डबुक फॉर द प्रोगेसिव मैन* इसके बाद जैको बुक्स, बॉम्बे द्वारा प्रकाशित *ए हैण्डबुक फॉर यंग पीपल* फिर एक और जिसका शीर्षक है *ए कम्पलीट गाइड टु कैरियर्स फॉर यंग पीपल* ।

भल्ला से पूछने पर कि इतनी सारी किताबें लिखने के लिए उन्हें प्रेरणा या ऊर्जा कहाँ से मिलती है, और एक ही क्षण में वह रोटरी में बिताए 56 वर्षों के अतीत में चले गए। ''मझे लिखने के लिए प्रेरित करने में रोटरी ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है, जिस तरह रोटरी में हम हमेशा सेवा करते रहे हैं, तब मैंने यह सोचा कि युवाओं को ज्ञान देना और उनके लिए लिखना भी एक प्रकार से सेवा ही तो है।''

रोटरी की यात्रा

संस्थापक सदस्यों में भल्ला एकमात्र जीवित सदस्य हैं आर सी हरिद्वार के, जिसकी शुरुआत 1962 में हुई थी। उनकी उम्र सिर्फ 26 साल थी जब वो इसके सदस्य बने, ''मैंने सोचा कि सेवा करने का यह एक अच्छा मौका है और सीखने के लिए एक विशाल मंच। सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि जितना मैं किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय से सीख पाता उस की अपेक्षा रोटरी से मैंने कहीं अधिक सीखा है।''

उनके परिवार को हम वास्तव में ''रोटरी परिवार'' कह सकते हैं; वह और उनके पिता, दोनों आरसी हरिद्वार के स्थापना सदस्य थे व उनके पिता संस्थापक अध्यक्ष। उनके बेटे ने भी रोटरी के अनुराग को आत्मसात कर लिया है और वो आरसी रानीपुर के संस्थापक सदस्य हैं। वे कहते हैं ''इससे पहले वह एक रोटारेक्टर था; उन्होंने उसे रोटरीयन बनने के लिए आमंत्रित किया और आज रोटरी में वह बहुत सक्रिय है। बदले में उसने अपने बच्चों को रोटरी का जज़्बा सौंप दिया है।''

भल्ला 34 साल की उम्र में क्लब अध्यक्ष और 42 में मंडलाध्यक्ष (डीजी) बन गए थे। हमेशा एक सक्रिय और जोशीले रोटरीयन ने, पिछले रो ई निदेशक सुदर्शन अग्रवाल द्वारा सुविधाहीन लड़कियों

मुझे लगता है कि जितना मैं किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय से सीख पाता उस की अपेक्षा रोटरी से मैंने कहीं अधिक सीखा है।

के लिए शुरू किये गए हिम ज्योति विद्यालय को विकसित करने में अत्यन्त सक्रिय और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ''मैंने शुरुआत से ही वहां काम किया है और कुल मिला कर हमने ₹62 लाख के तीन टीआरएफ अनुदान किये, जिसमें स्कूल के लिए फर्नीचर,भोजन, बस तथा वैन और पानी गरम करने के लिए सौर उपकरण लगाए हैं।''

नौ साल तक वह स्कूल ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष रहे। प्रारम्भ से ही, ''हमारी सभी लड़कियां प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हैं, और 8 से 10 लड़कियां तो हर साल 90 प्रतिशत से अधिक लाती हैं।''

एक और मेगा प्रोजेक्ट है जहां उनके जुनून, अनुभव और कड़ी मेहनत की मदद से केदारनाथ में 2013 की बाढ़ के बाद गढ़वाल हिमालय के तहस-नहस हुए इलाकों में स्कूलों का पुनर्निर्माण किया गया। ''हमने वहां 32 स्कूल बनाए जिसमें यश (पिछले रोई निदेशक वाई पी दास) और मैं पूरी तरह से शामिल थे; मैंने उनके साथ ठेकेदारों, सप्लायरों के साथ साथ निर्माण कार्य भी देखा।''

पीडीजी भल्ला और उनके लंबे संबंध के बारे में, पिछले रो इ अध्यक्ष राजेन्द्र साबू बताते हैं कि महान मंडलाध्यक्ष ''सोम ढींगरा के नेतृत्व में, हम दोनों एक ही वर्ष (1970-71) के दौरान अपने अपने क्लब के अध्यक्ष रहे थे । इन वर्षों के दौरान मैं प्रेम (भल्ला) के साथ निरन्तर यात्रा करता रहा हूँ और रोटरी और मानवता की सेवा के लिए उनके पूर्ण समर्पण का मैं सम्मान करता हूं, उतना ही लेखन में उनकी योग्यता का भी सम्मान करता हूं। उन्होंने सदैव रोटरी के आदर्शों को सर्वोपरी रखा और उनकी मूल्य-आधारित जीवन यात्रा व इसमें सहयोगी रही उनकी पत्नी उमा के लिये भी मेरे ह्रदय में विशिष्ट सम्मान है।''

हिंदू धर्म पर पुस्तकें

चलिए लेखक भल्ला की तरफ लौटते हैं, वे केवल अंग्रेजी में लिखते हैं, हालांकि उनकी कुछ पुस्तकों का अनुवाद किया गया है जो फ्लिपकार्ट और अमेज़ॅन पर उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा, ''गृहिणियों पर लिखी किताब भारत सरकार द्वारा प्रायोजित की गई थी और वो सभी सरकारी पुस्तकालयों में उपलब्ध है।''

इन वर्षों में *सेवन स्टेप्स टू सक्सेस* की कुछ श्रृंखलाएं - टाइम मैनेजमेंट, इफेक्टिव कम्युनिकेशंस, लीडरशिप, टीम बिल्डिंग, बैटर रिलेशनशिप्स, आदि करने के बाद उन्होंने आध्यात्मिक और धार्मिक लेखन में प्रयास किया, जिसका परिणाम है हिंदू धर्म पर पुस्तकें।

यह सब तब हुआ जब एक लम्बे अंतराल के बाद, 2003 में उन्होंने फिर से लिखना शुरू किया, और पुस्तक महल, नई दिल्ली के लिए पुस्तकों की एक श्रृंखला की, जिसमें *द कम्पलीट मैन* और *पोटरेट ऑफऐटिकेट एंड गुड मैनर्स* शामिल हैं।

उनकी पृष्ठभूमि हरिद्वार होने की वज़ह से, प्रकाशक की यह इच्छा थी कि भल्ला को हिंदू धर्म पर भी कुछ लिखना चाहिए। लेकिन शुरू में वह खिलाफ थे क्योंकि ''विषय पर पर्याप्त जानकारी की कमी थी'' लेकिन एक शाम संपादक ने हिंदू धर्म पर हिंदी में कुछ सामग्री भेजी और उनसे अंग्रेजी में किताब लिखने का अनुरोध किया।

पीआरआईडी वाई पी दास के साथ पीडीजी प्रेम भल्ला गढ़वाल, हिमालय में एक स्कूल साइट पर।

पूर्व रोई अध्यक्ष कार्ल स्टेनममेर, भरत के वरिष्ठ रोटरी नेताओं के साथ। (दाएं से : पीआरआईपी राजेन्द्र के साबू, पीआरआईडी सुदर्शन अग्रवाल और पी आरआईडी वाई पी दास।) पीडीजी प्रेम भल्ला गणमान्यों के पीछे खड़े हैं।

लेकिन एक अड़चन थी; ''1947 में, जब भारत स्वतंत्र हुआ, तब मैं पांचवीं कक्षा में था, और इससे पहले स्कूलों में हम अंग्रेजी के साथ-साथ उर्दू पढते थे, न कि हिंदी। केवल कक्षा 5 से 10 तक ही मैंने हिंदी पढ़ी, लेकिन फिर भी मेरा हिंदी का ज्ञान निराशाजनक था।'' हिंदी में ज्ञान की कमी की वजह से वो रुक गए लेकिन उन्होंने कहा कम से कम एक कोशिश कर के तो देखो।

भगवान का भी संकेत समझ कर वो एक सच्चे योद्धा की तरह इसमें जुट गए और सिर्फ छः महीनों के अंदर एक पुस्तक - *हिन्दू राइट्स, रिचुअल्स, कस्टम्स एंड ट्रेडिशन्स* लिख डाली, ''जो प्रकाशक के लिए वास्तव में एक पैसा उगलने की मशीन बन गइ! सबसे पहले 2006 में प्रकाशित, इसके कई प्रिंट और कई संस्करण निकल चुके हैं और यह पूरी दुनिया में बेची जा रही है।'' भल्ला ने कहा, ''प्रकाशक ने इस पुस्तक पर वास्तव में बड़ी कमाई की है, इसकी हजारों प्रतियां बिक चुकी हैं और कई लोगों के लिए यह हिंदू धर्म पर एक संदर्भ पुस्तक भी बन गइ है।''

बस यहीं से शुरुआत हुई जिसके बाद हिंदू धर्म पर कुछ और किताबें लिखी; ''और मैंने सोचा कि यह भी तो सेवा थी ... हिंदी में उपलब्ध ज्ञान को अंग्रेजी पाठकों तक पहुंचाना।''

महाभारत का अनुवाद

उनकी लेखन यात्रा जारी है; वर्तमान में वह *महाभारत* का अनुवाद कर रहे हैं और ''महाकाव्य के उन पहलुओं को उजागर करने की कोशिश कर रहे है जिस से ज्ञान की प्राप्ति होती है। मेरा मानना है कि *महाभारत* भली भांति और आशावादी जीवन जीने पर एक सम्पूर्ण किताब है। मैं इसमें कई कहानियां बुन रहा हूं ताकि प्रत्येक कहानी को सरलता से पढ़ सकें और कहानी के संदेश को आसानी से समझ सकें।''

भल्ला ने इस का आधा सफर तय कर लिया है, और करीब एक साल में इसके पूर्ण होने की सम्भावना है। ''लगभग 50 पुस्तकों का मंथन करने के लिए ज़रूरी अनुशासन और भावी लेखकों के लिए उनका मशवरा,'' भल्ला ने कहा कि ''वह नियम से एक दिन में 500 शब्द लिखते हैं और ज़्यादातर समय इस नियम का पालन ईमानदारी से करते हैं। लेकिन, उन्होंने कहा, लिखने का काम मेरे लिए केवल खाली समय की गतिविधि है। मुझे रोटरी में अपने काम का ध्यान रखना पड़ता है और फिर अपने खेत में काम करता हूं। मूलतः मैं एक किसान हूं, और यही मेरी रोजी रोटी है।''

शुरू में, उनके परिवार के पास बहुत बड़ा खेत था, ''लेकिन मैंने अपने जीवनकाल में दो बार भूमि सीमांकन (लैंड सीलिंग) देखा है, जो मेरे जैसे लोगों के लिए बहुत कष्टदायक था, हमें भूमि का निपटान करना था और बांटाना था।'' अब उनके

अप्रैल 1978, बोका रटन में हुए अंतर्राष्ट्रीय असेंबली में निर्वाचित रोई अध्यक्ष क्लेम रेनौफ़ के साथ।

पास 15 एकड़ खेत बचा है जहां वह चावल और गेहूं उगाते हैं साथ ही एक छोटा सा आम का बाग भी है। चूंकि जमीन ऋषिकेश हरिद्वार हाईवे पर स्थित है, इसलिए इसके कुछ हिस्से में तीर्थयात्रियों के लिए सुविधा की योजना बनाई है।

आज 55 साल बाद भी, भल्ला रोटरी से जुड़े हुए हैं और परियोजनाओं में उनकी सक्रिय भागीदारी निरंतर कायम है। मिसाल के तौर पर रुद्रप्रयाग में 32 स्कूलों के निर्माण के बाद, ''हमारे पास कुछ पैसे बचे थे और मैंने यश (दस) को सुझाव दिया था कि हम सरकार के लिए एक सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) बनाते हैं, फाटा में, जहां से केदारनाथ जाने वाले सभी तीर्थयात्री गुजरते हैं और यहीं से केदारनाथ के लिए 7 मिनट की हेलीकॉप्टर की सवारी भी उपलब्ध है। पीएचसी पूरी तरह से जर्जर इमारत 12.5 में सथित था। हमने एक नई इमारत नहीं बनाई बल्कि स्टील के ढांचे के साथ इसे मजबूत किया और यह सुनिश्चित किया कि यह कम से कम 25 साल तक और उपयोगी रहे। हर महीने इस केंद्र में 32 प्रसव होते हैं। इस पर हमने ₹25 लाख खर्च किए, हमने सोचा था कि क्यों ना हम इस क्षेत्र में रोटरी की एक और निशानी छोड़ दें जहां हमने 2013 की तबाही के बाद इतना ज़्यादा काम किया।''

मैं अपने भोजन के प्रति बहुत ही अनुशासित हूँ। मेरे सामने कितना ही बढ़िया व्यंजन रखा जाये, मैं सिर्फ एक ही चम्मच ले कर रुक जाता हूँ।

खाने पर अनुशासन

उनके ज़िंदादिल होने व दुरूस्त काया के पीछे क्या रहस्य है, पीडीजी साफ़गोई से कहते है: ''मैं आपको बताऊँ कि मैंने अपने जीवन में कभी भी योग नहीं किया है ना ही सुबह की सैर पर गया, लेकि अपनी पूरी ज़िन्दगी मैं एक किसान रहा हूं । जब भी मैं खेत में होता हूं, तो मैं सभी जगहों पर टहलता हूँ। और यदि मुझे बैंक या आसपास जाना होता है, तो मैं कार में जाने की बजाये पैदल चलना पसंद करता हूं, क्योंकि जब आप पैदल चलते हैं तब लोगों से आपकी मुलाकात भी हो जाती हैं।''

एक और रहस्य यह है कि वह अपने भोजन के प्रति बहुत ही अनुशासित हूँ। ''मैं हमेशा सही समय पर सही भोजन करता हूँ और इसी वज़ह से चल रहा हूँ। मेरे सामने कितना ही बढ़िया व्यंजन रखा जाये, मैं सिर्फ एक ही चम्मच ले कर रुक जाता हूँ। एक बहुत ही अनुशासित भोजन करने वाला, मैं ज़्यादा खाने के बजाये कम खाना पसंद करता हूं।'' वह कहते हैं कि आम तौर पर भोजन ज्यादातर लोगों की कमजोरी होती है, जैसा कि उन्होंने अपने अधिकांश दोस्तों में देखा है। ''लेकिन अनुशासित भोजन के कारण ही मैं अपना वजन 65 से 70 किलोग्राम के बीच रख पाया हूं!''

साक्षात्कार के समापन पर, मैं उनसे कुछ अच्छी फोटो माँगी, पर उनके उत्तर से मैं अचंभित रह गइ, भल्ला कहते हैं, बावजूद इसके कि वह एक अच्छे फोटोग्राफर है, ''मेरे पास मेरे खुद के फोटो बहुत कम हैं। जब मैं डीजी था, जीएमएल के सभी 12 अंकों में, आपको मेरी या मेरी पत्नी की कोई तस्वीर नहीं मिलेगी। क्योंकि मैं हमेशा से मानता रहा हूं कि लोग अपनी तस्वीरें देखना चाहते हैं आपकी नहीं!''

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

District Wise TRF Contributions as on March 2018

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
			India				
2981	32,710	4,598	0	0	37,307	186	4.3%
2982	53,630	720	2,725	0	57,075	347	12.8%
3000	73,402	7,267	288,541	29,154	398,363	1947	38.5%
3011	79,968	414	89,068	15,000	184,450	217	7.1%
3012	39,251	6,693	112,590	3,016	161,549	213	6.1%
3020	37,923	18,914	49,950	42,478	149,266	87	2.0%
3030	923	22,724	1,050	0	24,697	3	0.1%
3040	8,585	15	47,538	0	56,138	35	1.6%
3053	7,883	78	22,129	0	30,090	22	0.8%
3054	6,978	203	275,317	1,000	283,499	24	0.4%
3060	100,531	1,365	39,133	22,492	163,520	815	21.4%
3070	36,104	198	25,794	789	62,886	188	6.3%
3080	104,713	15,301	21,078	92	141,185	174	5.3%
3090	608	0	2,500	0	3,108	3	0.1%
3100*	12,229	0	0	0	12,229	48	3.0%
3110	64,752	2,848	60,631	0	128,231	163	4.2%
3120	81,367	508	50,000	0	131,875	111	3.8%
3131	317,748	103	350,951	76,297	745,099	990	19.4%
3132	61,742	1,306	7,875	16,000	86,923	171	3.9%
3141	516,762	21,267	620,191	97,247	1,255,467	990	19.4%
3142	263,599	4,315	350	(1,000)	267,264	583	21.6%
3150	55,436	12,557	9,050	62,000	139,043	314	8.8%
3160	122,213	1,000	0	8,338	131,552	161	6.9%
3170	33,333	7,904	20,073	0	61,310	308	5.8%
3181	81,102	1,091	0	78	82,271	537	17.8%
3182	76,181	0	36,263	0	112,443	610	19.4%
3190	85,140	18,371	105,539	24,708	233,758	77	1.5%
3201	125,508	10,599	206,098	4,938	347,143	184	3.6%
3202	43,837	7,719	0	2,773	54,329	102	2.1%
3211	81,739	0	0	53,846	135,585	96	2.2%
3212	243,343	35,120	32,500	2,000	312,963	537	14.5%
3231	119,110	7,692	121,250	30,914	278,966	81	3.2%
3232	208,845	33,795	104,882	600	348,122	239	6.5%
3240	76,275	1,692	0	8,367	86,334	289	9.9%
3250	50,941	100	8,723	10,000	69,764	177	5.0%
3261	38,670	100	13,615	0	52,386	128	5.5%
3262	72,482	227	0	0	72,709	250	7.6%
3291	52,761	25,475	58,789	7,740	144,765	51	1.3%
India Total	**3,468,326**	**272,278**	**2,784,193**	**518,869**	**7,043,666**	**11,458**	**8.0%**
3220 **Sri Lanka**	106,475	10,293	6,840	1,217	124,826	508	26.7%
3271 **Pakistan**	39,401	70,699	2,100	0	112,199	84	5.9%
3272 **Pakistan**	16,677	1,595	0	1,000	19,272	52	1.9%
3281 **Bangladesh**	376,356	14,055	208,628	85,543	684,582	597	10.6%
3282 **Bangladesh**	93,382	1,816	0	1,000	96,197	415	11.0%
3292 **Nepal**	128,019	21,764	250,918	0	400,701	573	13.1%
South Asia Total	**4,228,635**	**392,499**	**3,252,680**	**607,629**	**8,481,443**	**13687**	**8.0%**
World Total	**86,872,326**	**26,093,399**	**12,772,623**	**18,182,140**	**143,920,488**		

** Non-districted*

Source: RI South Asia Office

आप जो करते है उसके लिए आपको धन्यवाद: बैरी रेसिन

किरण ज़ेहरा

सफ़ेद और ग्रे सूट पहने हुए मंडल 3231 के नवनिर्वाचित अध्यक्ष और रोटेरियन, अपनी पत्नियों के साथ जिन्होंने पट्टू साड़ी पहनी हुई थी, आरआईपीई बैरी रेसिन और रोई निदेशक सी भास्कर का पारंपरिक स्वागत करने के लिए जैसे ही हॉल के बरामदे में खड़े हुए, ढोल और नादस्वरम बजने लगे। यह आरआईपीई का ''भारत में छटवां PETS सत्र था और दुनियाभर में छह हफ़्तों में 74वां PETS लेकिन उनका जोश देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह उनके पहले PETS को संबोधित कर रहे हो। बैरी यहाँ इसलिए है क्योंकि वह आपका (अध्यक्ष-निर्वाचितों का) आत्मविश्वास बढ़ाना चाहते है और यह सुनिश्चित करना चाहते है कि रोटरी वर्ष 2018-19 का निष्पादन कुशलता से हो,'' भास्कर ने कहा।

एक श्रव्य-दृश्य प्रस्तुतीकरण ने पिछले वर्ष दो शाखाओं में विभाजित होने के बाद से मंडल की यात्रा का वृत्तांत प्रस्तुत किया, और इसके बाद TRF योगदान प्रतिबद्धता सत्र की झलकियाँ दिखाई गई। ''2018-19 के अध्यक्ष अगले वर्ष तक 4 मिलियन, डॉलर 120 प्रमुख दानकर्ताओं और 8 AKS सदस्यों को सम्मिलित करने के लिए प्रतिबद्ध हुए है, तालियों की गड़गड़ाहट के बीच डीजी जवारीलाल जैन ने कहा।

नवनिर्वाचित रोई अध्यक्ष को उनके बीच देख प्रसन्न होकर, नवनिर्वाचित डीजीई सी आर चंद्र बॉब ने कहा, ''हमारा मंडल नया है और चूंकि हमारे अधिकतर क्लब छोटे कस्बों और गाँवों में है, वर्ष 2018-19 में क्लबों को मजबूत बनाना हमारी प्राथमिकता है।'' वह उनके क्षेत्र में रोटारेक्ट क्लबों की संख्या में वृद्धि कर उन्हें 55 से 100 करना चाहते है।

भास्कर ने नवनिर्वाचित अध्यक्षों को याद दिलाया कि ''एक नेता की सर्वोत्तम विशेषता उसके सदस्यों में से प्रत्येक को अपने विचार रखने का अवसर प्रदान कर उन्हें सुनने की होती है।'' उन्होंने कहा कि उन्हें लगातार इस सवाल ''रोटरी क्या है?'' के लिए विभिन्न जवाब प्राप्त हो रहे है, और उन्होंने आगे कहा, ''हम सभी को रोटरी को एक ही प्रकार से परिभाषित करने के काबिल होना चाहिए। अगली बार जब आपसे पूछा जाए, कृपया यह उत्तर दें: विचारों का आदान-प्रदान करने एवं समुदाय को बेहतर बनाने के लिए काम करने हेतु रोटरी नेतृत्वकर्ताओं को एक साथ लाती है।''

डीजी जैन की दृढ़ता की सराहना करते हुए, रोई निदेशक ने आगे कहा कि उनका 2 मिलियन का टीआरएफ लक्ष्य ''दिल्ली और मुंबई से नहीं आया, बल्कि एक अर्ध-ग्रामीण इलाके से आया है और, इस बात ने भारत में बहुत से रोटेरियनों को चौंका दिया है।'' उन्होंने आगे कहा कि अगले 52 हफ्ते अध्यक्षों के लिए परिवर्तनकारी होंगे, और उन्होंने उन्हें इस अवसर का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए प्रेरित किया। ''सुनिए, सीखिए और अपने कौशलों को निखारिये। आपको आपके समुदाय में एक अच्छे नेतृत्वकर्ता के रूप में पहचाना जाना चाहिए।''

पूरा कक्ष तालियों से गूँज उठा जब आरआईपीई रेसिन ने अध्यक्षों का ''वणक्कम'' बोलकर अभिवादन किया। उन्होंने उनसे उत्साहशील होने के लिए कहा ''क्योंकि उत्साह संक्रामक होता है और इससे आपके सदस्य और अधिक करना चाहेंगे। नवगठित मंडल के पहले वर्ष में, आप संस्थान को 4 मिलियन डॉलर देना चाहते है। यह बहुत बड़ा लक्ष्य है लेकिन, हासिल किया जा सकता है। हमें साहसी होना पड़ेगा। आप सभी को शुभकामनाएं।''

रेसिन ने वहाँ एकत्रित रोटेरियनों से इस बात पर चिंतन करने के लिए कहा कि क्यों रोटेरियन रोटरी को छोड़कर जा रहे है, और क्या ''हम कुछ गलत कर रहे है।'' यही सवाल रोटरी से जुड़ने वाले 5 प्रतिशत से भी कम रोटारेक्टरों पर भी लागू होना चाहिए। ''सक्रिय और जोशीले रोटारेक्टरों'' को शामिल करने की जरुरत को समझाते हुए उन्होंने कहा, ''ये युवा पेशेवर रोटरी का भविष्य है और अगर हम स्वयं को नेतृत्वकर्ता कहते है तो हमें आगे आना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ये रोटारेक्टर सुखपूर्वक रोटरी से जुड़े। मुझे खुशी है कि आपका

आरआईपीई बैरी रेसिन और आरआईडी सी भास्कर के साथ डीजी ज़वारीलाल जैन, डीजीई सी आर चन्द्र बॉब, डीजीएन श्रीधर बलरामन, पीडीजी ए संपत कुमार और मंडल 3231 के अन्य क्लब अध्यक्ष और सचिव।

मंडल 100 रोटारेक्टर क्लबों की शुरुआत करने की योजना बना रहा है।''

उन्होंने कहा ''आपके देश में CSR एक उत्तम अवसर है, और भारतीय कंपनियों के लिए रोटरी से बेहतर साझेदार और कौन हो सकता है!'' उन्होंने अध्यक्षों से इस अवसर का लाभ उठाने का आग्रह किया। ''काश मैं इस कानून को दुनिया के हर देश में ला सकता। तो फिर हमने पहले जितनी भी सेवा की है उससे और अधिक सेवा करने में हम सक्षम होते।''

आरआईपीई बैरी रेसिन और आरआईडी सी भास्कर का पारंपरिक रूप से स्वागत।

उन्होंने आगे कहा कि उनके वर्ष में वे रोटेरियनों के अंदर नेतृत्व कौशलों को विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। ''समुदायों में बहुत से लोग सोचते है कि हम एक लंच क्लब है। हमें इसे बदलने की आवश्यकता है। हमें आवश्यकता है कि हम सामाजिक मीडिया पर मजबूती के साथ उपस्थित रहे और जो भी परियोजनाएं हम कर रहे है उसके बारे में बात करें। हम कहाँ और कैसे बैठक कर रहे है की तस्वीरें साझा करने के बजाय, हम जिन बच्चों की मदद कर रहे है, जिन स्कूलों का निर्माण कर रहे है, जिन नि:शक्तजनों की हम सहायता कर रहे है, उनकी तस्वीरों को हमें साझा करना होगा।''

अफ्रीका में रोटरी के द्वारा बनाए गए एक स्कूल के एक छोटे लड़के द्वारा उन्हें धन्यवाद देने के एक किस्से को याद करते हुए, आरआईपीई ने कहा, लड़के ने उसकी कक्षा, शौचालय और जल व्यवस्था के लिए रोटरी को धन्यवाद दिया। आज मैं इस अवसर का लाभ उठाना चाहता हूँ और उन बच्चों की तरफ से जिनकी आपने मदद की है और जिनसे आप कभी नहीं मिलेंगे और उन लोगों की तरफ से जो रोटरी पर आश्रित है, मैं आप में से हर एक को दुनिया को बेहतर बनाने के लिए आपके द्वारा दिए गए योगदान के लिए धन्यवाद देता हूँ।'' ■

रंग और वैभव से भरा सम्मेलन

रशीदा भगत

ऐतिहासिक शहर आगरा में रोटरी क्लब जयपुर साउथ द्वारा आयोजित, नवगठित मंडल 3054 का मंडल सम्मेलन, *आनंदोत्सव*, गंभीर बातों एवं शानदार तड़क-भड़क का मिश्रण था, जिसे गरबा और भंगड़ा, मुख्य अतिथि इंग्लैंड से रोई निदेशक ब्रायन इस्टोयल और न्यूज़ीलैण्ड से एक पूर्व रो ई निदेशक एवं आरआईपीआर स्टुअर्ट हील, एवं उनकी पत्नियों को सवारी करवाती हुई बग्गी के एक भव्य जुलूस, और एक कैटवाक ने पूर्ण किया था जिसमें डीजी, डीजीई, पीडीजी, और उनके जीवन साथियों ने हिस्सा लिया था।

एक डीजी के रूप में अपनी 224 दिनों की अभी तक की यात्रा का रिपोर्ट कार्ड देते हुए, मौलिन पटेल ने कहा कि इस वर्ष का उनका लक्ष्य 500 नए सदस्यों को जोड़ने का था; 480 सदस्य पहले ही शामिल किये जा चुके है और पाँच नए क्लब जोड़े जा चुके है। 500,000 डॉलर के टीआरएफ लक्ष्य के लिए, लगभग आधी राशी का योगदान दिया जा चुका है, और ''मुझे लगता है कि इस रोटरी वर्ष के अंत तक हम 600,000 डॉलर के लक्ष्य तक पहुँच सकते है। साथ ही, मंडल को 1.6 मिलियन डॉलर की अब तक की सर्वाधिक अनुदान राशी प्राप्त हुई है और जून अंत तक यह 3 मिलियन डॉलर के आंकड़े को पार कर सकती है।''

सेवा परियोजनाओं पर, उन्होंने कहा कि क्लबों ने पौधारोपण, WinS, रक्तदान, साक्षरता, युवा आदान-प्रदान और बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्रियों के वितरण के साथ-साथ अनेक स्वास्थ्य परियोजनाओं का बीड़ा उठाया है।

सभा को संबोधित करते हुए, आरआईपीआई स्टुअर्ट हील ने कहा, ''भारत में रोटरी जो कार्य करती है उससे मैं पूरी तरह विस्मित हूँ। हमें आवश्यकता है कि दुनिया भर के रोटेरियनों को अहसास हो कि

डीजी मौलिन पटेल और पत्नी सोनल, आरआईपीआर स्टुअर्ट हील और पत्नी एड्रियाने,मंडल सम्मेलन के प्रक्षेपण में। चित्र में पीडीजी गण अशोक गुप्ता, प्रधुमन पटना, अजय कला, निर्मल सिंघवी और डॉ हर्षद उदेशी भी चित्र में शामिल हैं।

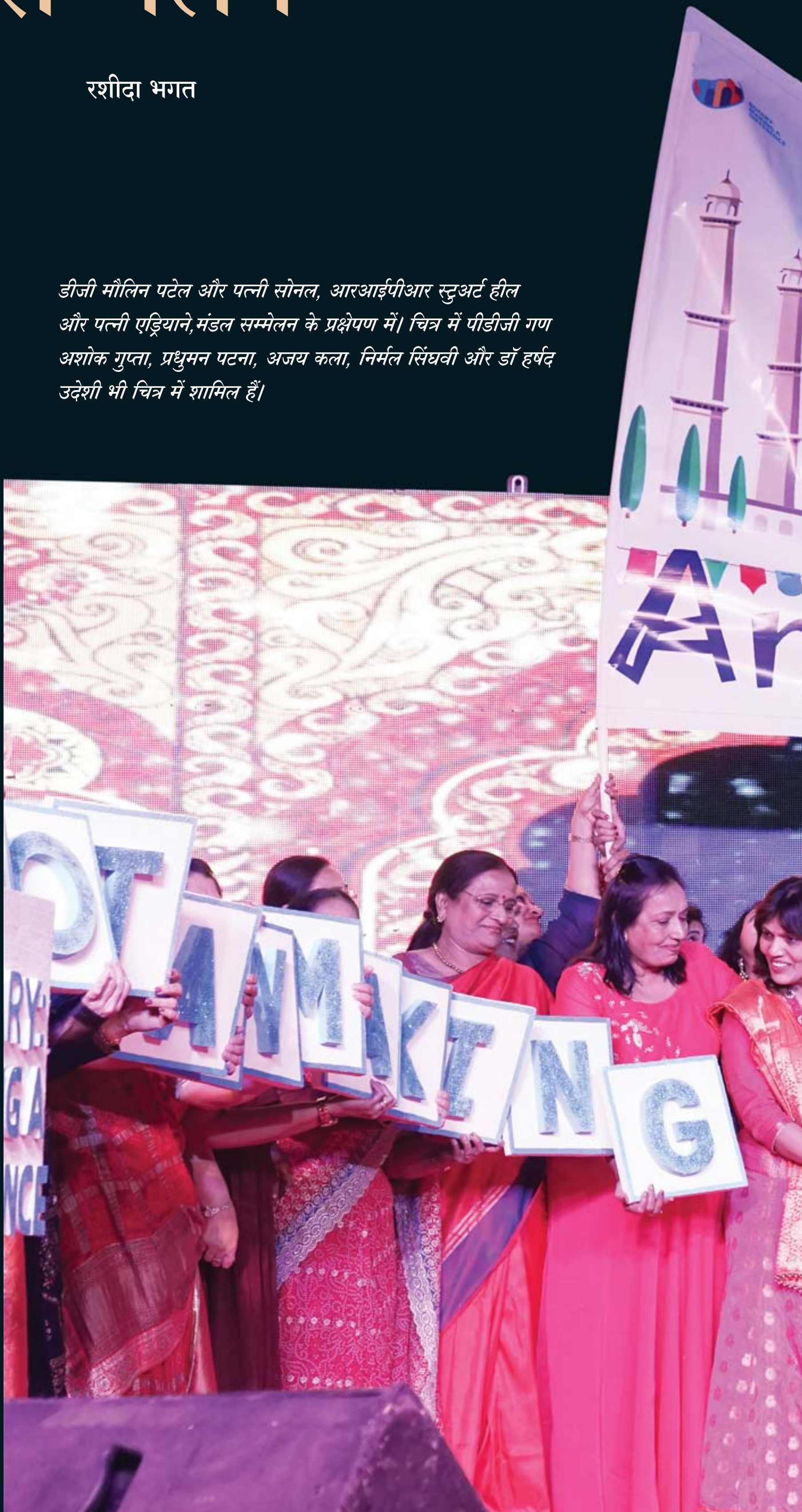

भारत में रोटरी जो कार्य करती है उससे मैं पूरी तरह विस्मित हूँ। हमें आवश्यकता है कि दुनिया भर के रोटेरियनों को अहसास हो कि रोटरी का एक हिस्सा होना कितना सौभाग्यशाली है।

आरआईपीआर **स्टुअर्ट हील**

रोटरी का एक हिस्सा होना कितना सौभाग्यशाली है और वे रोटरी में स्थानीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परिवर्तन लाने के लिए मौजूद है।'' उन्होंने आगे कहा यद्यपि रोटरी को हमेशा उद्विकासी होना चाहिए, कभी-कभार इसे क्रांतिकारी भी होना चाहिए और उन्होंने रोटरी के कार्यों के विकेंद्रीकरण का समर्थन भी किया।

उन्होंने एकत्रित हुए रोटेरियनों को ''क्षेत्रीय कार्यालयों की भूमिका पर पुनर्विचार करने और उन्हें अधिक सशक्त बनाने के लिए प्रेरित किया। अब समय रोटरी में नवप्रवर्तन का है। हमें वैश्विक स्तर पर सामुदायिक सेवाओं को लक्ष्य बनाना चाहिए क्योंकि आप परिवर्तन के विजेता है।'' रोई निदेशक ब्रायन इस्टोयल ने कहा कि वह ''रोटरी से स्वयं में एक परिवर्तन लाने के लिए जुड़े थे और उन्होंने रोटरी द्वारा उन्हें प्रदान किये गए सेवा अवसरों के बारे में बात की। रोटरी में आप लगातार आपके आस-पास के लोगों की भलाई के लिए सीखते है।''

सभा को संबोधित करते हुए पीआरआईडी मनोज देसाई ने कहा, ''एक जहाज बंदरगाह पर सुरक्षित रहता है लेकिन वह बनता तो तैरने के लिए है। इसलिए

बाएं से : *आरआईडी ब्रायन स्टोल और पत्नी मेक्सिन, आरआईपीआर स्टुअर्ट हील और पत्नी एड्रियाने, डीजी मौलिन पटेल और पत्नी सोनल, रोटरी क्लब जयपुर सौउथ की अध्यक्ष वंदना प्रकाश और और सम्मेलन के अध्यक्ष राजेंद्र प्रकाश।।*

को भी उनके घरों की सीमाओं को पार करके रोटरी की यात्रा तय करनी होगी। हमेशा की तरह, एक शायरी सुनाकर उन्होंने लोगों को उनकी उर्दू शायरी की रूचि से प्रसन्न किया: *ज़िंदगी दी है तो जीने का हुनर भी देना, पांव बख्शे है तो तौफ़िक-ए-सफ़र भी देना।'*'

उच्चाधिकारियों ने आर्च क्लम्फ सोसाइटी के सदस्यों के साथ-साथ उन्हें भी सम्मानित किया जिन्होंने टीआरएफ में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिनमें सुरेश पोद्दार और उनकी पत्नी किरण शामिल है, जिन्होंने इस वर्ष 50,000 डॉलर का योगदान दिया और वे दोबारा AKS सदस्य बनने की राह पर है।

आरआईपीआर स्टुअर्ट हील और एड्रियाने को डीजी मौलिन पटेल और सोनल ने सम्मानित किया।

पीडीजी अशोक गुप्ता और विजया, जिन्होंने 250,000 डॉलर का योगदान दिया, और पीडीजी रमेश अग्रवाल ₹1.65 करोड़; डीजी पटेल और सोनम, जो -घड सदस्य बने और पीडीजी अनुराग बंथिया और रोटेरियन महेंद्र बंथिया जिन्होंने 70,000 डॉलर का योगदान दिया, सभी को सम्मानित किया गया।

16 देशों से आए 26 युवाओं के इंटरनेशनल यूथ एक्सचेंज दल ने हिस्सा लिया और युवाओं ने मंडल में उनकी यात्रा के अनुभवों को साझा किया, और कहा कि उन्हें भारत ''तीखा और मीठा दोनों लगा। यह प्यार, उदारता और विश्वास के बारे में था।'' टीआरएफ की तरफ से पोलियो के लिए 'सराहनीय सेवा पुरस्कार' मिलने के लिए पीडीजी अनिल अग्रवाल को सम्मानित किया गया।

रोटेरियन मनु पालीवाल ने कार रैली का एक प्रस्तुतीकरण दिया जिसमें उन्होंने उनके भाई के साथ 161 दिनों में 23 देशों की यात्रा की, और उस दौरान उन्होंने पोलियोप्लस कार्यक्रम को बढ़ावा दिया।

डीजीई नीरज सोगानी ने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में उनके अद्भुत अनुभव के बारे में बात की। सम्मेलन अध्यक्ष राजेंद्र प्रकाश ने गुजरात और राजस्थान के 80 क्लबों से आए प्रतिनिधियों का स्वागत किया, और संयुक्त सचिव राजेश खत्री ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। ■

रोटरी-वीएचएस जिंदगी बचाता है:

बैरी रेसिन

वी मुत्तुकुमारण

चेन्नई में, आरआईपीई बैरी रेसिन, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर और रोटरी मंडल 3232 डीजी आर श्रीनिवासन ने अन्य रोटरी नेताओं के साथ, वीएचएस अस्पताल में रोटरी ब्लड बैंक का दौरा किया। उन्हें रक्त बैंक के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ वी मिथली ने विभिन्न सुविधाओं के बारे में बताया। सीएमओ ने अत्याधुनिक केंद्र में रक्त और रक्त घटकों के पृथक्करण, परीक्षण और भंडारण की प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया, जिसे वीएचएस अस्पताल, मद्रास सेंट्रल के रोटरी क्लब और टीटीके समूह कंपनियों के बीच संयुक्त प्रयास के तहत स्थापित किया गया था।

रेसिन ने रक्त बैंक के थैलेसेमिया ब्लॉक में उपचार प्राप्त करने वाले बच्चों के साथ बातचीत की और मातृ और शिशु स्वास्थ्य देखभाल के लिए नए खुले अभिमन्यु ब्लॉक का निरीक्षण किया। रेसिन, जो स्वयं एक स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर है, ने प्रत्येक विशेष वार्ड, क्लिनिक और क्यूबिकल का निरीक्षण किया और उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं देखभाल के बारे में पूछ-ताछ की।

प्रयोगशाला और नैदानिक ब्लॉक में भी, रेसिन ने तकनीशियनों और जैव रसायनविदों के साथ निर्देशित प्रश्नों के साथ चर्चा की।

बाद में, के एस संजीवी हॉल में चुनिंदा रोटेरियन को संबोधित करते हुए, उन्होंने ध्यान दिया कि वीएचएस अस्पताल को रोटरी ने सस्ती स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के मार्ग में आने वाली चुनौतियों से निपटने में सहायता दी थी। उन्होंने कहा कि वीएचएस के साथ साझेदारी में उन्होंने जो हासिल किया है, उसके बारे में रोटेरियन को गर्व हो सकता है।

बहमास में अस्पतालों में बडे.होने के बाद, जहाँ उनके पिता एक सर्जन और माँ नर्स थी, उन्होंने कहा, ''वीएचएस में होना और लैब सुविधाओं का दौरा करना और देखना एक अद्भुत खुशी है।'' उन्होंने कहा कि रक्त संक्रमण से पीड़ित बच्चों के चेहरे पर मुस्कुराहट लाने से बढ़ कर कुछ भी नहीं हैं।

बहामा में चिकित्सा सेवाओं की लागत की तुलना में - जहाँ सबसे सस्ती एक्स-रे का खर्च लगभग 200 डॉलर और सीबीसी परीक्षण का खर्च 50-60 डॉलर होगा - चेन्नई में हेल्थकेयर वास्तव में सस्ती है, उन्होंने टिप्पणी करते हुए कहा। ■

VHS अस्पताल के रोटरी ब्लड बैंक के थैलेसेमिया ब्लॉक में आरआईपीई बैरी रेसिन एक बच्ची का अभिवादन करते हुए। चित्र में बाए से आरपीआईसी राजादुराई माइकल (ज़ोन 5) रोटेरियन डॉ पी श्रीनिवासन, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, डीजी आर श्रीनिवासन और डीजीई बाबु पेरम।

वी मुत्तुकुमारण

एक प्रौढ़ का रोटरी में प्रवेश

रशीदा भगत

वह आपको अपनी सादगी, शिष्टता और मैत्रीपूर्ण स्वभाव और स्पर्श से सहज ही आकर्षित कर लेता है वहीं एक रोटरी इंटरनेशनल डायरेक्टर की सत्ता का संचालन सरलता से करते हैं। उन के प्रभावशाली परिचय में शामिल हैं - कमांडर, यूएस नौसेना के, जहाँ उन्होंने 20 साल अपनी सेवाएँ दीं और यूएस की विशाल रिटेलर कंपनी कोस्टको के वाईस प्रेसिडेंट, एचआर और जोखिम प्रबंधन में विशेषज्ञ और इस समय रोटरी में एक वरिष्ठ नेता। मर्सर आइलैंड रोटरी क्लब, कैलिफ़ोर्निया के जॉन मैथ्यूज़, न केवल मनोरंजक व्यक्तित्व के धनी हैं, बल्कि साक्षात्कार के लिए एक महत्वपूर्ण विषय हैं।

कुआलालम्पुर संस्थान में मैथ्यूज़ से मुलाकात के बाद हुई बातचीत में उन्होंने स्वीकार किया कि वह ''प्रौढ़ता में रोटरी में आये।'' और जाहिर है, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि अमेरिकी नौसेना में अपनी लम्बी अवधि के दौरान, रोटरी में शामिल होने, इससे भी महत्वपूर्ण, उन्हें अपने क्लब या मण्डल की गतिविधियों में संलग्न होने का वक़्त ही नहीं मिला ।

मैथ्यूज़ 1969 में अमेरिकी नौसेना में शामिल हुए; जब पूछा क्यों तो कहते हैं, ''मैं कॉलेज में था और उन दिनों अमेरिका में, अगर आप युवा हैं, तो विचारधारा यह थी कि प्रत्येक पुरुष नागरिक मिलिट्री सेवा में जाएगा। मेरे मन में भी था कि मैं सेवा में जाऊंगा,'' ठीक वैसे ही जैसे उनके पिता और भाई गए थे ।

इसलिए कॉलेज की पढ़ाई ख़त्म करने के बाद, वह नौसेना में शामिल हो गए जहाँ वो तीन साल रहे और इसे आगे जारी रखने का कोई इरादा नहीं था क्योंकि कोलंबिया ग्रेजुएट स्कूल में उन्हें प्रवेश की स्वीकृति मिल चुकी थी, जहां वह बैंकिंग पढ़ना चाहते थे। लेकिन जब उनके तीन साल का कार्यकाल समाप्त हो रहा था, ''मैंने अपने चारों ओर देखा और महसूस किया कि मैं जिनके साथ मैं काम कर रहा हूं उन का बहुत सम्मान करता हूं फिर मुझे एक चुनौती भी दी गई थी। और फिर विस्तारक (जो व्यक्ति आपको आस पास जाने में मदद करता है) ने मुझसे पूछा कि क्या आप ऑस्ट्रेलियाई नौसेना के बदले में सिडनी जाना पसंद करेंगे। मैं बाइक पर सवार हो सीधा घर गया और मैरिएना (उनकी पत्नी) से पूछा कि तुम सिडनी चलना पसंद करोगी और वह राज़ी हो गई।''

तब उनका कोई बच्चा भी नहीं था, इसलिए निर्णय लेना आसान था, और वे सिडनी चले गए, ''हम सब जगह घूमे और ऑस्ट्रेलियाई नौसेना के बदले में मिला वो अनुभव अद्भुत था।'' उनकी वापसी पर, इस बार विस्तारक ने उनसे पूछा कि क्या वह स्नातक विद्यालय जाना चाहता है। इसके लिए वे सहमत थे और उन्होंने वित्तीय प्रबंधन करने का फैसला किया। उन्होंने बताया कि अमेरिकी नौसेना का कई विश्वविद्यालयों के साथ प्रबन्ध है और वे वाशिंगटन डीसी में जॉर्ज वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी से स्नातक कोर्स कर सकते हैं। ''लेकिन उस समय, वियतनाम युद्ध अभी भी चल रहा था और परिसर में सामाजिक अशांति फैली हुई थी इसलिए नौसेना ने कैंपस कार्यक्रम से हाथ खींच लिए और मुझे बताया कि अब हम आपको वहाँ नहीं भेज रहे। इसलिए मैं उसे छोड़ नौसेना के पोस्ट ग्रेजुएट स्कूल में चला गया।''

मैथ्यूज़ ने कहा कि अमेरिकी नौसेना में ''कार्यकाल बहुत रोचक और मज़ेदार रहा और वहाँ लोग भी बहुत दिलचस्प थे। ऐसा नहीं कि मैंने वहां रहने की योजना बनाई हो और न ही मेरा

इथियोपिया में जिस तरह की रोटरी परियोजनाऐं तरह चल रही थीं उससे मैंने अपने जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन अनुभव किया था। और मैंने सोचा, हे भगवान, यह संगठन तो वास्तव में प्रभावशाली है और यह कई आश्चर्यजनक काम कर सकता है।

सालों तक वहां रहने का कोई इरादा था! बल्कि, मेरी माँ तो अक्सर पूछा करती थी कि नेवी छोड़ कर वापस घर कब आओगे?''

घर रोचेस्टर, न्यूयॉर्क राज्य में था, मैरिएना से उनकी मुलाकात न्यूयॉर्क में ही हुई थी और ''15 की उम्र में हमने डेटिंग शुरू कर दी थी; इसलिए कुछ वक़्त हमने साथ भी गुजारा है।''

नौसेना में, उन्होंने नाना प्रकार के काम किये, जिसमें से एक है, प्रसिद्ध विमान वाहक यूएसएस किट्टी हॉक के आपूर्ति कार्यालय में कमांडर। बाद में उन्हें वॉशिंगटन डीसी से नौसेना के संचालन का मौका भी मिला।

लेकिन एक ओर जहां उन्होंने अमरीकी नौसेना में अपने कार्यकाल का आनंद उठाया, वहीं 20 वर्षों में उन्हें 13 बार स्थानांतरित भी किया गया और ''मैंने देखा कि मेरे बच्चे किसी से भी करीबी रिश्ता नहीं बनाते थे क्योंकि वे जानते थे कि वैसे भी वे 18 महीने में तो छोड़ ही देंगे, तो ज़हमत क्यों उठाएं।'' तब मैंने ''ट्वाईलाइट टूर'' के लिये आवेदन किया, जिसे नौसेना की भाषा में, सेवानिवृत्ति से पहले आपकी अंतिम नियुक्ति कहते है। तब मैं सैन डिएगो में था; ''मैं 22 की उम्र में नौसेना में भर्ती हुआ और 42 में बाहर आया!''

रोटरी में प्रवेश!

तो वह रोटरीयन कैसे बने? ''मेरे पिता एक रोटरीयन थे, और मेरे अंकल पास्ट गवर्नर, इसलिए रोटरी के बारे में मैं जानता था और अंततः शामिल हो गया, लेकिन नौकरी में रहते हुए ऐसा नहीं कर सकता था।''

मैथ्यूज़ ने स्पष्ट किया कि यद्यपि अमेरिकी सैन्य कर्मियों को रोटरी में शामिल होने की इज़ाज़त है, लेकिन ये भी सच है कि आप वहां कभी नहीं जा पाते। ''इसलिए जब मैं सैन डिएगो में ट्वाईलाइट टूर के लिए गया, मैं कैलिफोर्निया में कोरोनाडो क्लब में शामिल हो गया था। यह बहुत बढ़िया क्लब है और मैंने यहाँ बहुत सारे मित्र बनाये हैं, लेकिन रोटरी की अधिकाँश चीजों से वास्तव में कभी नहीं जुड़ पाया था क्योंकि मैं सुबह काम पर जाता, फिर दोपहर का भोजन और फिर से काम पर। मैं जाता तो था, लेकिन वास्तव में जुड़ा कभी भी नहीं,'' वे कहते हैं।

कुछ साल बाद, 1995 में, वह कॉस्टको कम्पनी के साथ सिएटल चले गए, जिसमें वे नौसेना छोड़ने के बाद शामिल हो गए थे और उनके एक मित्र ने कहा कि वह एक प्रतिरक्षण अभियान के तहत इथियोपिया जा रहा था, ''और मैंने भी उनके साथ जाने का निर्णय कर लिया। मैं अभी अभी यहां पॉल नेट्ज़ेल (ट्रस्टी चेयर) को बता रहा था कि इथियोपिया में जिस तरह की रोटरी परियोजनाऐं तरह चल रही थीं उससे मैंने अपने जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन अनुभव किया था। और मैंने सोचा, हे भगवान, यह संगठन तो

पर मुझे लगता है कि सबसे बड़ी चुनौती यह समझना था कि आखिर रोटरी काम कैसे करती है। मुझे लगता था कि मेरा विचार बहुत बढ़िया है।

रोई निदेशक जॉन सी मैथ्यूज।

रोटेरियन श्रीधर भारती

आइये सदस्यता की बातचीत में हम निरंतरता का समावेश भी करें

रोई बोर्ड के सदस्य के रूप में, इसके एक निदेशक, जॉन मैथ्यूज का मानना है कि, ''यद्यपि सुधार के लिए जगह जगह से कई तरह के सुझाव आ रहे हैं, एक बड़ी चुनौती ये है कि हमने 112 वर्षों में ढाँचे जोड़ते तो गए पर इनमें से हटाया कुछ भी नहीं।''

हालांकि ''सदस्यता के बारे में बात करना सबसे आसान है, मुझे लगता है यह कहीं अधिक गंभीर विषय है और उस पर लगातार चर्चा ज़रूरी है। 80 साल तक हमने रोटरी फाउंडेशन को संचालित किया, लेकिन हमारी शब्दावली में स्थिरता शब्द नहीं था! इसलिए हमने परियोजनाएं तो बहुत अद्भुत करी हैं, लेकिन उनमें से कई असफल रहीं। जब हम व्यर्थ हो चुके समय, ऊर्जा, पैसा और अन्य संसाधनों के बारे में सोचते हैं, क्योंकि हमने निरंतरता का विचार नहीं किया था तो यह सब मूर्खतापूर्ण लगता है। यह बेवकूफी ही है कि आपने स्वच्छ पेयजल सुविधा जैसी एक अद्भुत परियोजना मुहैया करवाई और वो बिखर गई क्योंकि उस मशीन में कुछ टूट गया था और स्थानीय लोगों को यह नहीं पता था कि इसे कैसे ठीक किया जाए या वे इसमें शामिल ही नहीं थे। तो निरंतरता बनाए रखने के लिए टीआरएफ अभी जो कुछ कर रहा है, यह बहुत ही बढ़िया है।''

लेकिन, मैथ्यूज कहते हैं, ''समस्या यह है जैसा कि अधिकांश बड़ी संस्थाओं में होता है, संगठन के एक विभाग में जो काम होता है वह दूसरे विभाग को बताया नहीं जाता है। इसलिए यदि मैं स्थिरता के इस विचार को सदस्यता के सन्दर्भ में देखूँ तो स्थिति बहुत शोचनीय है। सदस्यों को बनाए रखने के लिए हम कोई बड़ा काम नहीं करते। लोग जुड़ते हैं और छोड़ जाते हैं और 23 साल से हम 1.2 मिलियन के आसपास ही घूम रहे हैं। तो कुछ न कुछ गलत ज़रूर है। क्योंकि आपके पास एक ही तो मूल काम है, वो है क्लब और यह आगे नहीं बढ़ रहा। वास्तव में, यह संकुचित हो रहा है। हम नए क्लब भी जोड़ते जा रहे हैं, लेकिन देखा जाए तो पिछले 10 सालों में क्लब की औसत सदस्य संख्या में 8 की कमी आई है और यह 42 से घटकर 34 रह गई है।''

ना केवल क्लबों में सदस्य संख्याएं स्थिर हैं बल्कि ज्यादातर क्लब नए क्लबों को चार्टर भी नहीं कर रहे हैं ''इसलिए हमें अपने वार्तालाप को नई दिशा देनी होगी होगी। आज टीआरएफ में, हम उम्मीद करते हैं कि प्रत्येक रोटेरियन हर साल कुछ ना कुछ योगदान अवश्य करेगा। लेकिन सदस्यता के सम्बन्ध में हमारी ऐसी कोई अपेक्षा नहीं है। हम सिर्फ यही कह कर संतुष्ट हो जाते हैं कि सदस्यता में वृद्धि महत्वपूर्ण है और हमें यह वृद्धि करनी ही होगी। लेकिन अब, हमें यह अपेक्षा निश्चित करनी पड़ेगी कि आप न केवल सदस्यता बढ़ाएं, बल्कि साल दर साल इसमें वृद्धि भी दर्ज करें। क्योंकि यदि आपका व्यापार पहले बढ़ता है और बाद में घट जाता है, तो इसे बढ़ना नहीं कहेंगे। इसलिए जब तक हम अपनी सदस्यता के वार्तालाप में 'निरंतरता ' नहीं डालेंगे, इस बात की कोई संभावना नहीं है कि आज से 50 साल बाद हम यहाँ होंगे या नहीं।''

मैथ्यूज़ कहते हैं कि प्रत्येक क्लब को सदस्यता की वृद्धि पर अपेक्षा सुनिश्चित करने के लिए कहा जाना चाहिए, और ''जब हम उन्हें PETS और SETS में प्रशिक्षित करते हैं, तो हमें उनसे आंखों में देख कर कहना चाहिए कि उम्मीद है आप इस साल और अगले साल तरक्की करेंगे और उससे अगले साल भी। और यदि आप आगे नहीं बढ़ सकते, तो एक नया क्लब चार्टर कर लें।''

और अब वो चौंका देने वाली बात कहते हैं, ''हमारे यहां ऐसे हजारों रोटरी क्लब हैं, जिन्होंने एक भी नया क्लब कभी चार्टर नहीं किया है।''

वास्तव में प्रभावशाली है और यह कई आश्चर्यजनक काम कर सकता है।''

यह 2002 की बात है, उस समय वह मर्सर आइलैंड रोटरी क्लब में शामिल हो चुके थे और इथियोपिया से लौटने के तुरंत बाद, ''मेरे डीजी रोज़मेरी ने फोन किया और कहा: 'हे जॉन, मुझे नए अवसरों के लिए 10,000 डॉलर का अनुदान मिला है। क्या आप इसका सदुपयोग करने में रूचि रखते हो?' मैंने तुरंत हाँ भर दी और कहा, ये मुझे दे दो।'' हालांकि तब तक उन्होंने कोई अनुदान नहीं किया था, पर उन्हें विश्वास था कि वह इसे समझ लेंगे और यह पैसा इथियोपिया की राजधानी, एडिस अबाबा में एक अस्पताल परियोजना के लिए दिया गया।

नेतृत्व की पदवियां

इसके बाद,वह अपने क्लब के फाउंडेशन चेयर बने, और 2006-07 में क्लब अध्यक्ष, फिर तुरन्त सहायक गवर्नर और तत्पश्चात 2010-11 में डीजी। ''तो जैसा कि आप देख सकते हैं मैं रोटरी में काफी देर से आया हूँ!''

मंडल अध्यक्ष के दौरान कोई विशेष बात, इस पर मैथ्यूज कहते हैं, ''हमने बहुत ही मजेदार चीजें कीं, लेकिन इस की प्रमुख विशेषता रही क्लब अध्यक्षों के साथ मेरे संबंध। वो एक अद्भुत समूह था, हम आज भी जुड़े हुए है और आगे भी जुड़े रहेंगे। और हाँ एक लाख डॉलर के डिनर का आयोजन भी!''

इसके अलावा, जब वह कॉस्टको के वाईस प्रेसिडेंट थे, वे ''पोलियो और इसे हटाने के लिए रोटरी का प्रयास पर कॉस्टको पत्रिका में एक लेख प्रकाशित करने में कामयाब रहे, जो पूरे विश्व में 70 मिलियन लोगों तक पहुंचती है!''

एक अच्छा बॉस सकारात्मक ऊर्जा कैसे प्रवाहित करता है, मैथ्यूज़ ने इस का उत्कृष्ट उदाहरण बताया, जब उन्होंने अपने बॉस को आश्वासन दिया था कि वह जम कर मेहनत करेंगे - तब कॉस्टको 100 बिलियन डॉलर की कंपनी होने जा रही थी - और अपनी नौकरी में रोटरी की जिम्मेदारी आड़े आ रही थी, ''उसने मुझे रोका, कन्धे पर हाथ रख कर कहा: 'जॉन, आपको इसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। यह हम देख लेंगे। आप समाज के लिए जो कार्य कर रहे हैं वह अधिक महत्वपूर्ण हैं। और हमें इसमें योगदान करना ही चाहिए।' यह एक प्रकार का आशीर्वाद था और इसे मैं कभी नहीं भूल पाया।''

कुछ साल पहले ही 25 साल काम करने के बाद, वो कॉस्टको से सेवानिवृत्त हुए हैं ।

सदस्यों को बनाए रखने के लिए हम कोई बड़ा काम नहीं करते। लोग जुड़ते हैं और छोड़ जाते हैं और 23 साल से हम 1.2 मिलियन के आसपास ही घूम रहे हैं। तो कुछ न कुछ गलत ज़रूर है।

रोटरी ने अक्सर हैरान किया

रो इ निदेशक के रूप में जो चुनौतियाँ सामने आईं उनके बारे में मैथ्यूज़ का कहना है कि वह दुनिया भर में सफ़र कर चुके हैं, ''सारी दुनिया में विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के साथ तारतम्य या सामंजस्य बिठाना कोई बड़ी चुनौती नहीं थी। पर मुझे लगता है कि सबसे बड़ी चुनौती यह समझना था कि आखिर रोटरी काम कैसे करती है। मुझे लगता था कि मेरा विचार बहुत बढ़िया है, लेकिन मैं रोज़ाना कुछ ना कुछ जो नया सीखता हूँ, उस पर मुझे कई बार आश्चर्य होता है। यह एक मजेदार काम है और सीखने में मुझे मज़ा आता है। पर ऐसा भी है होता है ... आप मुझसे मजाक तो नहीं कर रहे ... मुझे कैसे पता नहीं चला?''

क्या अमेरिकी नौसेना और कॉस्टको दोनों के अनुभव से उन्हें रोटरी के सफ़र में मदद मिली है, मैथ्यू कहते हैं, ''ज़रूर, और इसके विपरीत भी। रोटरी ऐसी चीज़ें भी करता है जिनका इस्तेमाल कॉस्टको में किया था।''

मसलन, उनमें से एक है अनुस्थापन (ओरिएंटेशन) जो अमेरिका में रोटरी क्लब अपने नए सदस्यों के लिए करते हैं ताकि वे वास्तव में रोटरी के साथ जुड़ सकें। इसका उपयोग मैंने कॉस्टको

दाएं से : रोई निदेशक जॉन मैथ्यूज़ और उनकी पत्नी मेरी एलिन, पूर्व रोई अध्यक्ष राजेन्द्र के साबू के साथ।

में सदस्यों को बनाए रखने के लिए किया था।

डीजी से रो इ निदेशक के स्तर तक, रोटरीयन को किस तरह के नेतृत्व के गुणों की आवश्यकता है, मैथ्यूज़ कहते हैं, ''मुझे लगता है कि रोटरी प्रोत्साहन, हौसला अफ़ज़ाई पर चलता है। नेतृत्व के पदों पर अधिकतर वो रोटेरियन्स हैं जिनको कभी ना कभी किसी ने कहा था कि आप यह काम अच्छी तरह से कर सकोगे; जाओ और इसे करो। यूँ देखें तो मेरी निदेशक बनने की कोई योजना नहीं थी, और रोटरी के लिए काम कर के मैं खुश था, जब तक कि मेरे मित्रों ने इसका विचार मेरे दिमाग में नहीं डाला!''

अंतिम प्रश्न उनके जीवनसाथी के बारे में तथा रोटेरीयन को शिखर तक पहुँचाने में उनका योगदान। तो रोटरी में उनकी सफलता में मैरिएना की भूमिका क्या रही, मैं पूछती हूं। ''मुझे लगता है कि हम दोनों की एक टीम बढ़िया हैं, वह बहुत सरल, सुलभ और व्यावहारिक हैं, और कोई भी, रोटेरियनों या गैर- रोटेरियनों दोनों ही इन से आसानी से मिल सकते हैं।''

वो खुद भी एक रोटेरीयन हैं और ''क्या आप उनका वर्गीकरण जानते हैं? वह एक स्कीइंग और स्नो बोर्ड प्रशिक्षक हैं ... बेहतर वर्गीकरण में से एक। उसने 15 साल स्कीइंग पढ़ाई है!''

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

संक्षिप्त समाचार

मंडल 3052 पीडीजी और आईएनपीपीसी सदस्य अनिल अग्रवाल को पोलियो मुक्त संसार के लिए अंतरराष्ट्रीय सेवा पुरस्कार के लिए टीआरएफ की अंतर्राष्ट्रीय पोलियोप्लस कमेटी द्वारा चुना गया है। जून में टोरंटो, कनाडा में होने वाले रोटरी कन्वेंशन में उन्हें पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

मंडल 3131 पीडीजी दीपक शिकारपुर को आरआईपीई की हालिया यात्रा के दौरान आरआईडी सी भास्कर और डीजी अभय गाडगील की उपस्थिति में, आरआईपीई बैरी रेसिन ने स्वयं से बढ़कर सेवा पुरस्कार प्रदान किया।

आदित्य बिड़ला फाउंडेशन फॉर कम्युनिटी इनिशिएटिव्स एंड रूरल डेवलपमेंट के अध्यक्ष राजश्री बिड़ला ने पीआरआईडी अशोक महाजन को भारत में रोटरी द्वारा किए गए चेचक रोग और रूबेला कार्यक्रम के लिए 50 लाख रुपये का चेक प्रस्तुत किया।

धमतरी

में एक सफल RAHAT शिविर

रशीदा भगत

पीआरआईपी राजेन्द्र साबू के नेतृत्व में, रोटरी क्लब यमुना नगर (रोई मंडल 3080), रोटरी क्लब रायपुर ग्रेटर एवं रोटरी क्लब रायपुर मिलेनियम (मंडल 3261) ने मिलकर, छत्तीसगढ़ सरकार की मदद से, मार्च में रायपुर से लगभग 80 कि मी दूर स्थित धमतरी में एक अन्य रोटरी चिकित्सा मिशन का आयोजन किया।

मिशन के निदेशक पीडीजी सुभाष गर्ग ने कहा कि इस दस-दिवसीय मिशन में नेत्र विज्ञान,

प्लास्टिक सर्जरी, सामान्य सर्जरी, प्रसूति-विज्ञान एवं स्त्रीरोग-विज्ञान, हड्डी चिकित्सा, निश्चेतन विज्ञान, त्वचा विज्ञान, ENT एवं दन्त सर्जरी के क्षेत्रों से आएं 21 विशेषज्ञों एवं सर्जनों, 10 इंटर्नों और 10 स्वयंसेवकों के एक दल ने भाग लिया। स्वयंसेवकों में पीआरआईपी साबू और उनकी पत्नी उषा साबू भी शामिल थी।

रायपुर एयरपोर्ट पर स्वागत होने के पश्चात्, रोटेरियनों के दल का राज्य सरकार द्वारा अभिनन्दन किया गया और वे उसी दिन धमतरी के लिए रवाना हो गए।

इस विशेष चिकित्सा मिशन की पृष्ठभूमि के बारे में बताते हुए, पीडीजी शशि वारवंडकर, जो इस मिशन के समन्वय-अध्यक्ष थे, ने कहा, ''धमतरी में केवल एक सरकारी ज़िला अस्पताल है जिसमें बड़े ऑपरेशन के लिए कोई विशेषज्ञ नहीं है और यहाँ केवल नेत्र सर्जरी और कुछ अन्य छोटी सर्जरियाँ की जा सकती है। इस अस्पताल में सर्जनों की कमी को ध्यान में रखते हुए, राज्य स्वास्थ्य मंत्री ने हमसे धमतरी में एक चिकित्सीय मिशन को आयोजित करने का आग्रह किया।''

पीआरआईपी राजेन्द्र साबू और उषा साबू RAHAT चिकित्सा मिशन, धमतरी की टीम के साथ।

कैंप में पंजीयक लोगो के लिए भोजन की सविधा।

मिशन स्कूल मैदान पर एक विशाल तम्बू (90 फीट 240 फीट) स्थापित किया गया था, जिसमें पंजीकरण के लिए आठ अलग कार्यस्थल थे और मरीजों की जाँच करने, तत्काल सर्जरी या किसी अन्य प्रक्रिया की आवश्यकता वाले मरीजो का चयन करके उन्हें अलग करने और बाहरी मरीजों की तरह इलाज करवाने वालों के लिए 20 केबिन थे।

दो भिन्न स्थलों - धमतरी ज़िला अस्पताल और क्रिस्चियन अस्पताल धमतरी - में 1,883 की विशाल संख्या में सर्जरियाँ की गई, जिसमें 149 बड़े ऑपरेशन, 393 नेत्र सर्जरियाँ, 106 प्लास्टिक सर्जरियाँ, 880 दन्त सर्जरियाँ, 35 मेरुदंड संबंधित प्रक्रियाएं और अन्य ऑपरेशन शामिल थे। 4 मार्च को छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री अजय चंद्राकर द्वारा मिशन का उद्घाटन किया गया।

एम्स, रायपुर के गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज, छत्तीसगढ़ के राम कृष्ण केयर हॉस्पिटल के डॉक्टरों के साथ-साथ कुछ स्थानीय डॉक्टरों ने भी बड़ी संख्या में पधारने वाले बाहरी मरीजों की जांच एवं उनका इलाज करने वाली विसिटिंग टीम की सहायता की।

चिकित्सीय मिशन में आने वाले सभी मरीज़ों को मुफ्त दवाइयां दी गई, और मिशन के दिनों के दौरान सभी मरीज़ों एवं उनके सहायकों को खाना प्रदान किया गया। नर्सिंग कॉलेज, फ्लोरेंस कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग, आर्ट ऑफ़ लिविंग फाउंडेशन और स्थानीय वाणिज्य मंडल के स्वयंसेवक, ओपीडी कोष्ठ प्रबंधन एवं भोजन वितरण में पूरी जी-जान से सहायता कर रहे थे।

पीडीजी वारवंडकर ने कहा कि कुल मिलाकर 22,700 मरीज मिशन में आएं, और इनमें से लगभग 100 मरीज़ों को आगे की जांच एवं उन्नत सर्जरियों के लिए एम्स और रायपुर मेडिकल कॉलेज भेजा गया। रोटरी क्लब रायपुर मिलेनियम और रोटरी क्लब रायपुर ग्रेटर ने यह अतिरिक्त जिम्मेदारी उठाई और मुफ्त आवागमन एवं खाने का प्रबंध करके उन्हें एम्स और रायपुर में मेडिकल कॉलेज में भर्ती करवाया।

पीडीजी गर्ग ने कहा, ''इस मिशन का श्रेय पीआरआईपी साबू और उषा साबू, रोटरी यमुना नगर (मंडल 3080) से पीडीजी डॉक्टर आर. एस. परमार (चिकित्सीय मिशन प्रमुख), मंडल 3261 के डीजी हरजीत सिंह हूरा, पीडीजी विवेक तनखा (सांसद), पीडीजी शशि वारवंडकर, पीडीजी राकेश चतुर्वेदी (प्रबंधन प्रमुख), पीडीजी आर. एस. शर्मा और मंडल 3261 के अनेक रोटेरियनों, विशेषरूप से अमित जैसवाल की अध्यक्षता वाले रोटरी क्लब धमतरी के रोटेरियनों को जाता है जिन्होंने कड़ी मेहनत की।''

स्थानीय मीडिया ने मिशन पर अनेक रिपोर्टें छापी, जिससे रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि हुई। ■

रोटेरियन अपनी आत्मा को जगाईये: बैरी रेसिन

वी मुत्तुकुमारण

एक पल के लिए वापस जाएं और देखें व समझें कि एक बाहरी व्यक्ति रोटरी को कैसे देखता है, क्या वह आपके क्लब में शामिल होने में रुचि दिखाता है, तो अपने के क्लब के अध्यक्ष के रूप में, आप सही रास्ते पर हैं। लेकिन दूसरी तरफ, अगर लोग क्लब की गतिविधियों में कोई उत्साह नहीं दिखाते हैं, तो कुछ गलत है और हमें सुधार करने की आवश्यकता है,'' आरआईपीई बैरी रेसिन ने चेन्नई में मंडल 3000 और 3232 के PETS और SETS को संबोधित करते हुए कहा।

हालांकि, उन्होंने भारत में रोटरी के सदस्यों द्वारा अपने समुदायों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीके से प्रभावित करने वाले कार्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। ''अब जबकि सीएसआर निधि ने भारत में रोटरी क्लब के लिए नए अवसरों का सूत्रपात किया हैं, तो आपको अपने मंडलों के साथ समन्वय और संयुक्त कार्यक्रमों की योजना बनाने की जरूरत है,'' उन्होंने आगे कहा।

भारतीय विद्यालयों में निष्पादित किए गए WASH परियोजनाओं को, जिसे उन्होंने अपने फेसबुक पेज पर पोस्ट किया था, उन्हें दुनिया भर से जबर्दस्त प्रतिक्रिया प्राप्त हुई थी। ''कई रोटेरियन ने उनसे विवरण उपलब्ध कराने का आग्रह किया और पूछा कि भारतीय क्लब इन परियोजनाओं को कैसे कार्यान्वित कर रहे हैं।''

प्रत्येक रोटेरियन को यह महसूस करना चाहिए कि इस वैश्विक स्वैच्छिक संगठन से जुड़े होने का एक निहित मूल्य है। ''अपने सदस्यों से पूछें कि उन्हें क्या पसंद है, वे क्या चाहते हैं और वे आपके क्लब के कार्यों को और बेहतर कैसे बना सकते हैं। आखिरकार, रोटरी कार्यशील लोगों का ऐसा समूह हैं, जो परिवर्तनकारी परियोजनाओं को निष्पादित करने में तल्लीन हैं,'' उन्होंने आगे कहा।

प्रेरणादायक नेतृत्व

महत्वपूर्ण नेतृत्व के गुणों को सूचीबद्ध करते हुए, रेसिन ने कहा कि ये गुण समाज में ''परिवर्तनकारी परियोजनाओं को निष्पादित करने में मदद करेंगे जो एक स्थायी प्रभाव छोड़ालता हैं।'' रोटरी के नेताओं के पास केवल दो विकल्प हैं; ''अपने अस्तित्व को बनाएं रखने के लिए अपने कार्यों को जारी रखें या अपने सदस्यों के समझ निजी उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने क्लबों को प्रोत्साहित करके अपने क्लबों

मंडल 3232 के PETS में आरआईपीई बैरी रेसिन और आरआईडी सी भास्कर के साथ (बाएं से बैठे) रोटेरियन श्रीधर, पीडीजी सी आर राजू, ए एस वेंकटेश, एस कृष्णस्वामी, डीजी आर श्रीनिवासन, पीडीजी जे बी कामदार, डीजीई बाबू पेरम और पत्नी अनिता, नलिनी और पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, और आरपीआईसी राजदुरै माइकल और अन्य रोटेरियनों और एनज़।

आरआईपीई बैरी रेसिन को मंडल 3000 के डीजीई आर वी एन कण्णन एक उपहार प्रस्तुत करते हुए। चित्र में आरआईडी सी भास्कर, PETS की अध्यक्ष आर आनन्ता ज्योती और SETS के अध्यक्ष जे अरविन्दन भी शामिल हैं।

का सबसे अच्छा अध्यक्ष बनने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।'' ऐसा करने के लिए, नेता को सभी सदस्यों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना चाहिए और ''उन्हें यह पता होना चाहिए कि आप उनसे बेहद प्यार करते हैं।'' आप

में ऊर्जा और प्रेरणा का संक्रामक गुण होना चाहिए और आपको क्लब के लिए ''दुस्साहसिक लक्ष्य'' निर्धारित करने में सक्षम होना चाहिए।

रेसिन ने नव-नियुक्त अध्यक्षों का आह्वान किया कि युवा प्रतिभाओं को निखारने के लिए उन्हें नेतृत्व कार्यक्रम शुरू करना चाहिए, जिससे वे कठिन से कठिन जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में सक्षम बन सके। बहामास में रोटारेक्टर ने युवाओं के उत्साह का लाभ उठाने और उनके नेतृत्व कौशल को विकसित करने के लिए टोस्टमास्टर्स क्लब के सदस्यों के साथ हाथ मिलाया है। ''लेकिन हमें रोटारेक्टर को लुभाने के लिए और रोटरी क्लबों के साथ उनकी यात्रा को जारी रखने के लिए प्रेरित करने के विषय पर ध्यान देना होगा।''

रोटेरियन केवल स्वपनदर्शी ही नहीं हैं, ''बल्कि हम स्थायी परियोजनाओं के माध्यम से समुदाय में चिरंतन परिवर्तन लाने के लिए काम करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से हम जो अद्भुत काम करते हैं, और दुनिया को बदलने वाले परिवर्तनकारी परियोजनाओं के बारे में लोगों को बताएं,'' रेसिन ने कहा। उन्हें आशा है कि वर्ष 2018-19 पोलियो के कुछ अंतिम मामलों सामने आयेंगे, और उसके बाद से ''विश्व अगले तीन वर्षों में पोलियो से मुक्त हो जाएगा ताकि WHO द्वारा उसे प्रमाणित किया जा सके।''

200 से अधिक देशों में मौजूद 1.2 मिलियन- सदस्यों वाला मजबूत संगठन ने वैश्विक कल्याण के लिए बचाव के प्रयासों सहित अनेक सामुदायिक परियोजनाओं को सफलतापूर्वक निष्पादित किया हैं। चाहे वह न्यूजीलैंड में एक परेशान पिता को राहत देने का कार्य हो, जिसकी बेटी हैती भूकंप (जनवरी 2010) में मलबे के नीचे दफन हो गई थी या मलावी में एक अफ्रीकी बच्चे की मदद करने का कार्य, जो मुस्कुराते हुए मेरे पास आया और ''मुझे नए स्कूल की इमारत, शौचालयों, स्वच्छ पानी और स्वच्छता सुविधाओं के लिए धन्यवाद दिया,'' इस प्रकार रोटरी हमेशा दुनिया को एक बेहतर स्थान बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है।

हालांकि, उन्होंने ''रोटेरियन की आत्मा को जगाने'' की आवश्यकता पर बल दिया और मजबूत क्लब का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित किया जो प्रभावी परियोजनाओं को सफलतापूर्वक निष्पादित कर सके। इसलिए, भावी रणनीति संबंधी विवरण - 2018-19 के लिए *प्रेरणा बनें* - अपने लोगो पर एक लहर की छवि, प्रकृति की एक शक्ति को प्रदर्शित करता करती है, जो स्थायी परिवर्तनों की सूत्रपात करती है, उन्होंने आगे कहा।

एक संवादात्मक परिचर्चा के दौरान, रोई के निदेशक सी भास्कर ने भावी नेताओं से गंभीरता से सीखने और प्रशिक्षण लेने का आग्रह किया क्योंकि केवल ''इस प्रक्रिया के माध्यम से आप जो नहीं जानते है, उसके बारे में जानकारी मिलती है। जीवन पूर्ण रूप से आप क्या और कैसे सीखते हैं और फिर उसे कार्य रूप में कैसे परिणत करते है, इन्ही बातों का लेखा-जोखा हैं।''

कुछ रोटेरियन द्वारा प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के संचालन पर बढ़ते व्यय पर चिंता व्यक्त किए जाने पर, उन्होंने उन्हें सलाह दी कि ''प्रशिक्षण पर किए जाने वाले व्यय को निवेश के रूप में विचार करें क्योंकि यह परियोजनाओं को बेहतर ढंग से कार्यान्वित करने के

लिए आपके कौशल को सुधारने का अवसर प्रदान करेगा।''

PETS एक अनूठा प्रशिक्षण कार्यक्रम है जो एक सामान्य व्यक्ति को नेतृत्व कौशल के गुणों से लैस कर सशक्त बनाता है, उन्होंने टिप्पणी करते हुए कहा और नव-नियुक्त अध्यक्षों से आग्रह किया कि वे अपने क्लब के सदस्यों को प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें। ''अगर आप के पास लागू करने के लिए एक मास्टर प्लान नहीं है तो 365 दिन 365 मिनट की तरह बीत जाएंगे। सबसे पहले, एक अच्छी टीम बनाएं जो आपके दृष्टिकोण और विचारों को साझा करते हुए आपके साथ काम करेगी।''

डीटीए (मंडल प्रशिक्षण सम्मेलन) में पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त करना आवश्यक है। उन्होंने कहा, ''क्लब के अध्यक्ष सफलता की 70 प्रतिशत संभावना के साथ शुरू करेंगे, यदि वे अपने अधिकारियों को योग्यता के आधार पर चुनते हैं, और डीटीए कार्यशालाओं में भाग लेने के अनिच्छुक लोगों को हटा देते हैं,'' उन्होंने कहा।

श्रीलंका से विभाजित होने के बाद सिर्फ 32 क्लबों के साथ मंडल 3000 के विकास के याद को ताजा करते हुए, आरआईडी ने कहा कि उनका गृह मंडल ''ताकतवर बन कर उभर चुका है, अब अधिक संगठित है और उनका प्रदर्शन स्तर नए ऊंचाइयों पर पहुंच गया हैं, जिसका श्रेय पीडीजी और भूतपूर्व अध्यक्षों को जाता है, जिन्होंने अपने क्लबों के विकास और संवर्द्धन करने के लिए अपने समय और ऊर्जा का सदुपयोग किया था।''

भास्कर ने टिप्पणी करते हुए कहा, ''आरआईपीई रेसिन बड़ी संख्या में रोटेरियन को यूनिफार्म में देख कर बहुत आश्चर्यचकित थे,'' जो केवल नए पदाधिकारियों के अनुशासन की ओर संकेत करता है। उन्होंने सावधानीपूर्वक योजना बनाने के बाद PETS के कार्यान्वयन के लिए डीजीई आरवीएन. कन्नन को बधाई दी।

मंडल 3232 के PETS में बोलते हुए, आरआईएड भास्कर ने कहा कि सदस्यों की संख्या में वृद्धि होने के कारण इस क्षेत्र के अधिक से अधिक निदेशकों का रोई बोर्ड में प्रतिनिधित्व होगा। अगले 2 वर्षों में मंडल की मौजूदा सदस्य संख्या 4,200 के बढ़कर दोगुनी होने की उम्मीद है। ''एक क्लब के नेता को कम बोलना चाहिए, दूसरों को बैठकों और परियोजनाओं में भाग लेने और उन्हें विकास के लिए नवीन विचारों को लाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।'' अभिनव परियोजनाएँ रोटरी वह सार्वजानिक छवि देंगी जिसका यह हकदार है।

लिंग असमानता

भारत में महिला रोटेरियन की कम संख्या पर चिंता व्यक्त करते हुए, भास्कर ने कहा कि अफ्रीका में 49 प्रतिशत महिला रोटेरियन की तुलना में हमारे यहाँ केवल 11 प्रतिशत ही महिला रोटेरियन है। ''पाकिस्तान में एक महिला गवर्नर और बांग्लादेश में एक महिला डीजीई है; हमें अपने क्षेत्रों में अधिकाधिक महिला गवर्नरों की जरूरत हैं। हमें

चेन्नई में मंडल 3000 के PETS सम्मेलन में आरआईपीई बैरी रेसिन और आरआईडी सी भास्कर के साथ डीजी पी गोपालकृष्णन और पत्नी नीलावती, डीजीई आर वी एन कण्णन और पत्नी सरला, डीजीएन ज़मीर पाशा, PETS की अध्यक्ष आर आनन्ता ज्योती और SETS के अध्यक्ष जे अरविन्दन और अन्य पूर्व गवर्नर्स और होनेवाले क्लब नेतागण।

आरआईपीई बैरी रेसिन और आरआईडी सी भास्कर के साथ मंडल 3232 के डीजीई बाबु पेरम, पीडीजी एसवी आरएम रामनाथन और पत्नी नल्लम्मै।

अधिक से अधिक महिला सदस्यों को आमंत्रित करने और नेतृत्व की भूमिकाओं को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, क्योंकि वे निधि प्रबंधन के बेहतर गुण के साथ सेवा के प्रति कही बेहतर समर्पित हैं,'' उन्होंने कहा।

उन्होंने रोटेरियन से एंड पोलियो अभियान के लिए ₹1,000 दान में देने का आग्रह किया, और डीजीई बाबुपरम ने कहा कि इसे लागू किया जाएगा।

मंडल 3000 के सम्मेलन को संबोधित करते हुए, डीजीई कन्नन ने कहा कि 27 वर्षीय मंडल में एक ऊर्जावान दल है, और ''हम लोगों को सशक्त बनाने और उन्हें रोटरी के समर्थन से समृद्ध बनाने के लिए गांवों में जा रहे हैं ताकि उन्हें खुशहाल गांवों में बदला जा सके।'' मंडल में 104 रोटरी क्लब हैं, जिनमें 5,000 से अधिक सदस्य हैं।

प्रशिक्षण सत्र को संबोधित करते हुए डीजी आर श्रीनिवासन ने कहा कि विभाजन के बाद पहले साल मंडल 3232 के लिए वास्तव में अच्छा रहा है और सभी 104 क्लब उत्साह और समर्पण से सेवा परियोजनाओं को निष्पादित कर हैं। ''सदस्यता के मामले में हमारा मंडल जोन 5 में इस वर्ष अब तक 500 रोटेरियन को शामिल कर पहले स्थान पर रहा है। क्लब के सभी सदस्य उस अध्यक्ष के पीछे चलेंगे जो प्रेरणादायक है और आगे बढ़कर नेतृत्व करता है।'' उनके मंडल में तीन क्लबों में सदस्यों की औसत आयु 30 वर्ष से भी कम थी और ''कुछ क्लबों में नए सदस्यों के लिए प्रतीक्षा अवधि तीन वर्ष थी।''

डीजीई पेराम ने दुबई इंस्टीट्यूट में भावी रणनीति संबंधी विवरण को याद किया और कहा कि अगले वर्ष के लिए उनका सदस्यता विकास लक्ष्य 15 प्रतिशत है और वह रोटरेक्टर के लिए रोटरी क्लब शुरू करने की योजना बना रहे है। ''हम रोटारेक्टर और पिछले डीआरआरएस के साथ मिलकर परियोजनाओं को निष्पादित कर रहे होंगे क्योंकि हमारे पास 150 रोटारेक्टर क्लब हैं और नए रोटारेक्ट क्लब की स्थापना अगले साल हमारे क्लबों द्वारा की जाएगी।''

उन्होंने कहा कि प्रत्येक क्लब सीएसआर निधि की मदद से अगले साल 15,000-20,000 की लागत वाली परियोजना को निष्पादित करेगा। वर्ष के लिए, डीजीई ने टीआरएफ में 2 मिलियन डॉलर दान देना का लक्ष्य रखा है जबकि 5 मिलियन डॉलर की लागत वाली सेवा और सामुदायिक परियोजनाओं को कार्यान्वित किया जाएगा। पीडीजी एसवी आरएम रामनाथन को अगले दो वर्षों में टीआरएफ में 500,000 डॉलर का दान देने की घोषणा करने पर रेसिन द्वारा सम्मानित किया था। पीडीजी जे बी कामदार को फाउंडेशन में 250,000 डॉलर का दान देने की घोषणा करने और एकेएस-लेवल 2 तक पहुंचने के लिए भी सम्मानित किया गया।

चित्र : वी मुत्तुकुमारण

प्यासे पक्षियों के लिए एक रोटरी पहल

रशीदा भगत

हर साल गर्मी में चढ़ते पारे की मार झेलने वाला सबसे बदतर राज्य है राजस्थान, और भारत के इस रेगिस्तानी राज्य के नागरिकों से बेहतर पानी की कीमत और कौन समझेगा?

परन्तु रोटरी क्लब बीकानेर मरुधरा के 58 सदस्यों ने एक पहल की शुरुआत की जो गर्मी में इंसानों की प्यास बुझाने की सोच से आगे का सोचती है। लगातार चौथे वर्ष, इस साल भी, जैसे ही गर्मी पड़ी, रोटेरियन छोटे टेराकोटा के पात्र, जिन्हें राजस्थान में *मिट्टी के पलासिया* के नाम से जाना जाता है, बीकानेर के निवासियों को इस अपील के साथ बाँट रहे है: इन पात्रों को ताज़े पानी से भरकर अपनी बालकनी, बरामदे, छत या बगीचे में रखिये, ताकि जब गर्मी में पारा चढ़े तो पक्षी इनसे अपनी प्यास बुझा सकें।

''हमने इस परियोजना की शुरुआत 2015 में समाज के विभिन्न तबकों में केवल 400 ऐसे पात्र बांटकर की थी, और यह वाकई लोकप्रिय हुई। इस वर्ष हमारा क्लब पहले ही ऐसे 4,000 पात्र लोगों को बाँट चुका है,'' क्लब के नवनिर्वाचित सचिव रोटेरियन राजेश बवेजा कहते है। एक बड़े पशु एवं पक्षी प्रेमी होने के नाते, यह परियोजना उनके दिमाग की उपज है ताकि ''हमारे शहर के बेजुबान पक्षियों के लिए कुछ किया जा सके। टेराकोटा के पात्र बनाने का काम हम स्थानीय कुम्हारों को देते है। प्रत्येक पात्र की कीमत 20 रुपये आती है, जिसमें वितरण लागत शामिल है, और हम

पक्षियों के लिए पानी उपलब्ध कराने रोटेरियन मिटटी से बने कटोरों का वितरण करते हुए।

सुनिश्चित रूप से सड़कों या ट्रैफिक जंक्शन पर इन पात्रों के वितरण के दौरान हमारे साथ स्कूली बच्चों को ले जाते है, जिनमें हमारे स्वयं के बच्चे भी शामिल होते है।''

वह कहते है, ख़याल ना केवल युवा पीढ़ी को पशु एवं पक्षियों की देखभाल के प्रति संवेदनशील बनाने का है, बल्कि उनके अंदर सेवा की भावना जागृत करने का भी है। ''हम चाहते है कि उन्हें अहसास हो कि हमें केवल अपने बारे में ही नहीं, बल्कि हमारे आसपास मौजूद अन्य जीवों के बारे में भी सोचना चाहिए।''

बवेजा आगे कहते है, पिछले चार वर्षों में, इस तरह के लगभग 10,000 पात्र शहर में वितरित किये जा चुके है। वह प्रसन्न है कि प्राप्तकर्ता इनका अच्छा इस्तेमाल करते है और इन्हें साफ़ एवं पानी से भरा रखते है। ''कुछ लोग इन्हें पेड़ पर टांग देते है ताकि पक्षी आसानी से अपनी प्यास बुझा सकें।''

रोटेरियन पलासियों को मस्जिदों में रमज़ान के दौरान इफ़्तार के समय वितरित करते है क्योंकि जो उपवास कर रहे होते है उन्हें पानी के महत्व और उसकी कीमत का अधिक अहसास होता है।

तो क्या उनके क्लब के सभी सदस्य इन छोटे पात्रों को पानी से भरा रखते है?

''बेशक, ऐसा करना हर एक सदस्य के लिए अनिवार्य है।'' वह आगे कहते है, इससे कुम्हारों के लिए रोज़गार, हालाँकि मौसमी तौर पर, उत्पन्न होने का एक अन्य लाभ भी होता है। रोटेरियन पलासियों को बांटने का हर एक अवसर तलाशते है, जिनमें पूजा स्थल भी शामिल होते है। ''विशेषरूप से मस्जिदों में रमज़ान के दौरान इफ़्तार के समय, क्योंकि जो उपवास कर रहे होते है उन्हें पानी के महत्व और उसकी कीमत का अधिक अहसास होता है,'' बवेजा कहते है।

स्थानीय मीडिया ने इस परियोजना की सराहना की एवं इसका प्रचार किया, और हाल ही में ''हम 92.7 बिग FM के RJ को अपने साथ ले गए, और उन्होंने हमारा बहुत अच्छा कवरेज किया।'' उनके द्वारा मुझे भेजी गई ऑडियो क्लिप में शहर के लोगों के लिए एक आकर्षक सन्देश है - रोटरी क्लब से इन पलासियों को प्राप्त कीजिये और पात्र में पानी रखकर अपने घरों में परिंदों का स्वागत कीजिये, और पक्षियों की दुआएं लीजिये।

क्योंकि आखिरकार, RJ आगे कहते है, सभी को यह याद रखना चाहिए कि ''परिंदों की जिंदगानी; थोड़ी सी छाव, थोड़ा सा पानी।'' ■

रोई दक्षिण एशिया कार्यालय से सन्देश

कृपया हमारे नए पते को नोट करें: टेलीफोन और फैक्स नंबरों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।
रोटरी इंटरनेशनल दक्षिण एशिया कार्यालय, पुल्मैन/नोवोटेल कमर्शियल टॉवर,
प्रथम तल, एसेट न. 2, आतिथ्य मंडल, एरोसिटी (आईजीआई हवाई अड्डे के निकट), नई दिल्ली 110037

हमें यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि रोटेरियन के बैठकों/कार्यशालाओं के लिए विशेष रूप से समर्पित बैठक कक्ष (35 लोगों के बैठने की क्षमता) की व्यवस्था की गई है। हम जल्द ही आपकी मीटिंग रूम को आरक्षित करने की प्रक्रिया के बारे में आपको सूचित करेंगे। इसके अतिरिक्त, इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ 'दि रोटरीयन टेक सेंटर' के नाम से एक समर्पित कार्नर आने वाले रोटेरियन को आरआई वेबसाइट *www.rotary.org* के माध्यम से "My Rotary" खातों और अन्य संबद्ध एप्लीकेशन तक पहुंचने की सुविधा प्रदान की जाएगी। आप सदस्यता के लिए देय राशि का भी भुगतान कर सकते हैं और/या रोटरी फाउंडेशन (इंडिया) ऑनलाइन उपकरण का उपयोग कर सकते हैं।

★ टीआरएफ दान/अंशदान के भुगतान के लिए दिशा-निर्देश

a) ऑनलाइन भारतीय दाताओं द्वारा ऑनलाइन देना

रुपए-सक्षम ऑनलाइन भुगतान सेवा भारत में रोटरी फाउंडेशन (भारत) [आरएफ (आई)] वेबसाइट *www.rotaryfoundationindia.org* और रोटरी इंटरनेशनल वेबसाइट *www.rotary.org* के माध्यम से भारत में दाताओं के लिए उपलब्ध है। इससे रोटेरियन/गैर-रोटेरियन को ऑनलाइन योगदान करने और आयकर अधिनियम की धारा 80जी के तहत लाभ प्राप्त होगा।

b) चेक / डिमांड ड्राफ्ट के माध्यम से दान / योगदान

- नई दिल्ली में 'रोटरी फाउंडेशन (भारत)' के पक्ष में भुगतेय एक चेक/डिमांड ड्राफ्ट तैयार करें और इसे हमारे नए ऑफिस के पते पर भेजें।
- कृपया दाता का नाम स्पष्ट रूप से (अर्थात चेक के आहर्ता/बैंक ड्राफ्ट के प्रेषक), दाता का पता और दाता का स्थायी अकाउंट नंबर (PAN) को अंशदान फॉर्म/पत्र में स्पष्ट रूप से लिखें।
- चेक के आहर्ता के पक्ष में प्रति चेक एक रसीद जारी किया जाएगा।
- प्रत्येक डिमांड ड्राफ्ट/पे ऑर्डर के लिए एक रसीद प्रेषक के पक्ष में जारी की जाएगी यदि डिमांड ड्राफ्ट/पे ऑर्डर में उसका उल्लेख किया गया है।

★ पुनर्वसन (सुधार) योगदान के लिए रोटरी फाउंडेशन का दिशानिर्देश:

- फाउंडेशन अब पिछली रोटरी वर्ष(ओं) में दिए गए किसी उपहार पदनाम या प्रतिबंध से दूसरे में योगदान करने के लिए [सुधारों] को पुनः स्वीकार या संशोधित नहीं करता है उिदाहरण के लिए, एंडोमेंट में वार्षिक योगदान आदिं प्रभावी 1, जुलाई 2018, सुधार केवल उपहार रसीद की तारीख के 90 कैलेंडर दिनों के भीतर किए जा सकते हैं और उसी रोटरी वित्तीय वर्ष के भीतर किए जाने चाहिए। इन दिशानिर्देशों का अनुपालन वार्षिक लेखापरीक्षित वित्तीय रिपोर्ट की अखंडता और साथ ही मंडल नियुक्त निधि को बनाए रखेगा।

- वृक्षारोपण की चुनौति - यह शायद आपके क्लब के पेड़ों को लगाने का सबसे अच्छा समय है। न केवल वृक्षारोपण के लिए सबसे अच्छी चीजों में से एक, जिसे आप पर्यावरण के लिए कर सकते हैं, बल्कि यह आपको रोटरी प्रशस्ति पत्र प्राप्त करने के एक कदम निकट पहुँचाने का भी कार्य करता है। जब तक वे अपने दम पर पल्लवित-पुष्पित न हों, तब तक उनका ध्यान रखना सुनिश्चित करें। अध्यक्ष इयान रिसेली यह देखने के लिए उत्सुक है कि पृथ्वी को एक बेहतर ग्रह बनाने के लिए कितने रोटेरियन इस चुनौती, मेकिंग अ डिफ्रेंस सकारात्मक *परिवर्तन लाने* के माध्यम से पृथ्वी को एक बेहतर ग्रह बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। कृपया वृक्षों के बारे में रिपोर्ट करने के लिए कृपया रोटरी शोकेस पर विवरण दर्ज करें।
- अपने मंडलों/क्लबों के माध्यम से वैश्विक अनुदान परियोजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए रोटरी को अनेक कॉर्पोरेट साझेदारों से जुड़े होने पर गर्व है।

★ निकट आ रहे समय सीमा पर ध्यान दें:

- अनुदान रिपोर्टिंग की अंतिम समय सीमा - कृपया 31 मई, 2018 तक सभी खुले अनुदानों की गतिविधियों की अंतरिम रिपोर्ट 31 मई 2018 तक सकारात्मक रूप से प्रस्तुत करें; अन्यथा 01 जून, 2018 को प्रभावी ढंग से रिपोर्ट करने पर अनुदान अतिदेय हो जाएगा। यदि कोई अनुदान प्रायोजक किसी फाउंडेशन अनुदान के लिए एक अतिदेय रिपोर्ट रखता है तो नए अनुदान के लिए आवेदनों को फाउंडेशन द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा। लिंक *http://www.rotaryfoundationindia.org/reporting/* पर क्लिक करें
- वर्ष 2019-20 रोटरी शांति फैलोशिप कार्यक्रम के लिए आवेदन अब स्वीकार किए जा रहे हैं। शांति फैलोशिप आवेदन के बारे में अधिक जानने के लिए, लिंक *https://my.rotary.org/en/peace-fellowship-application* पर क्लिक करें। आवेदकों को अपने मंडल में आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की समय सीमा 31 मई 2018 है। मंडलों को 1 जुलाई को रोटरी फाउंडेशन द्वारा अनुमोदित आवेदन प्रस्तुत करना चाहिए। कृपया *rotarypeacecenters@rotary.org* को लिखें। ■

डिस्कन 3090 में मज़ेदार क्षण

टीम रोटरी न्यूज़

मंडल सम्मेलन में पंजाब के वन और वन्यजीव संरक्षण मंत्री साधु सिंह धरमसोट को सम्मानित किया गया।

हिमाचल प्रदेश के चेल में एक सुंदर पहाडी स्थल पर तारिका जंगल रिसॉर्ट्स में 3090 के तीन दिवसीय मंडल सम्मेलन, जिसका शीर्षक *एबोड ऑफ पीस* के नाम था, में महिला सशक्तीकरण, अंग दान, मानवता की सेवा और मनोरंजक सत्रों के साथ आनंद और फेलोशिप का मामला छाया रहा।

डीजी बाग सिंह पन्नू ने अपनी अनोखी शैली में सम्मेलन का नेतृत्व किया और रोटरी क्लब नभा द्वारा बरवाला, पेट्रन मिड्टाउन और समाना के रोटरी क्लब के सहयोग से अनोखी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में पंजाब के वन और वन्यजीव संरक्षण मंत्री साधु सिंह धरमसाट मुख्य अतिथि थे।

पहले दिन के कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण, रोटरी क्लब राजपुरा के रोटेरियन धरम पाल द्वारा डिजाइन और तैयार किया गया *34 साल की यादें*, एक पुस्तक के ई-संस्करण का शुभारंभ था। ई-संस्करण ने पुस्तक की झलकियों प्रदर्शित किया जिसमें मंडल के भूतपूर्व गवर्नरों के सभी समृतियों औरउनकी समाज सेवा को दिखाया गया था।

रोटेरियन डॉ संदीप चौहान ने अंग दान, इसके महत्व और इसके साथ जुडे. औपचारिकताओं पर इसका एक व्याख्यान दिया। सभा को संबोधित करते हुए, मंत्री धरमसोट ने ''समाज को उत्थान करने में निस्वार्थ सेवा'' के लिए रोटरी की सराहना की।

दूसरें दिन कुछ महत्वपूर्ण विषयों जैसे सदस्यता, मंडल में टीआरएफ और थळपड परियोजनाओं के महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया। रोटेरियन गुलबहार सिंह ने रोटरी लीडरशिप इंस्टीट्यूट पर चर्चा की, जबकि डीजी पन्नू ने अपने भाषण में यह बताया कि पॉल हैरिस बस्ट उन सभी क्लबों को वितरित किया जा रहा है जो अपनी जमीन या भवन बना रहे हैं।

मंडल के महिला रोटेरियन के लिए एक जीवनसाथी सत्र आयोजित किया गया जो सौंदर्य और व्यक्तित्व विकास के पहलुओं पर आधारित था। रोटेरियन डॉ. विनीता आहूजा ने महिला सशक्तिकरण पर एक प्रेरक भाषण दिया, जिसके बाद एजी देविंदर सिंह द्वारा RYLA और नैतिकता पर एक परिचर्चा आयोजित की गई। ब्रह्मा कुमारी ईश्वरिय ट्रस्ट के एक सदस्य द्वारा तनाव प्रबंधन पर ध्यान देने के साथ एक मस्तिषक आराम सत्र आयोजित किया गया।

अंतिम दिन, पीडीजी एसआर पासे ने सम्मेलन के प्रस्तावों को पढा, जिन्हें सभी रोटेरियन द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। मेजबान क्लब के सदस्यों को डीजी पन्नू ने सम्मानित किया, और रोटरी क्लब शिमला को पॉल हैरिस का बस्ट भी भेंट किया गया, जिसे मॉल रोड पर प्रदर्शित किया जाएगा। हिमाचल प्रदेश में जंगल रिसॉर्ट में 400 से अधिक रोटेरियन ने अपने साथी के साथ कार्यक्रम का आनंद उठाया। ■

फेयरी चिमनियों

जब भी आप तुर्की में घूमने की योजना बनाएं, तो बेशक ऐतिहासिक शहर इस्तांबुल, ओटोमन साम्राज्य की राजधानी (जिसका नाम पहले कांसटेंटिनोपल था), देखने अवश्य जाएं। लेकिन सालों तक, दक्षिण पश्चिमी तुर्की के अनातोलिया क्षेत्र के कप्पादोशिया में मौजूद खड़ी, संकरी और प्राकृतिक रूप से कटकर निर्मित हुई चट्टानों के ऊपर उड़ते हुए हॉट एयर बलून की सवारी की सुहावनी तस्वीरों को देखने के बाद, गुब्बारे का अनुभव हमारी भ्रमण सूची में अनिवार्य रूप से शामिल था। तुर्की भाषा में कप्पादोशिया का मतलब होता है खूबसूरत घोड़ों की भूमि।

लेकिन एक ''गुफा होटल'' में रुकने का अवसर सोने पर सुहागा था, जो उस क्षेत्र में अधिक मात्रा में है। वास्तव में ये होटलें गुफाओं को काटकर निर्मित की गई है, और ये आधुनिक सहूलियतों के साथ प्राचीन युग में रहने के अहसास का सम्मिश्रण प्रदान करती है।

कप्पादोशिया में ''गुफा होटल'' में रुकने का अवसर सोने पर सुहागा था और ये आधुनिक सहूलियतों के साथ प्राचीन युग में रहने के अहसास का सम्मिश्रण प्रदान करती है।

इस्तांबुल के सबीहा गोक्चे हवाईअड्डे की उड़ान और फिर कायसेरी तक एक घंटे की छोटी घरेलू उड़ान ने हमें उर्गुप शहर के नज़दीक पहुँचा दिया था, जहाँ पर हम 60 मिनट की बस यात्रा करने के बाद पहुंचे। लेकिन चूंकि लगभग मध्य रात्रि हो चुकी थी, और सबीहा हवाईअड्डे पर थका देने वाली 6 घंटे की प्रतीक्षा के बाद, जब हम बेस्ट वेस्टर्न प्रीमियम होटल पहुंचे, तो हमें हमारे जादुई परिवेश - सुंदर भूदृश्य और लाखों सालों की ज्वालामुखीय गतिविधि द्वारा निर्मित चट्टानी संरचनाओं - का कोई अंदाजा नहीं था।

इस क्षेत्र में कायसेरी, नेवेशिर, उर्गुप और ओर्ताहिसर प्रमुख शहर है। कायसेरी शहर विलुप्त हो चुके ज्वालामुखी माउंट एर्सियस की

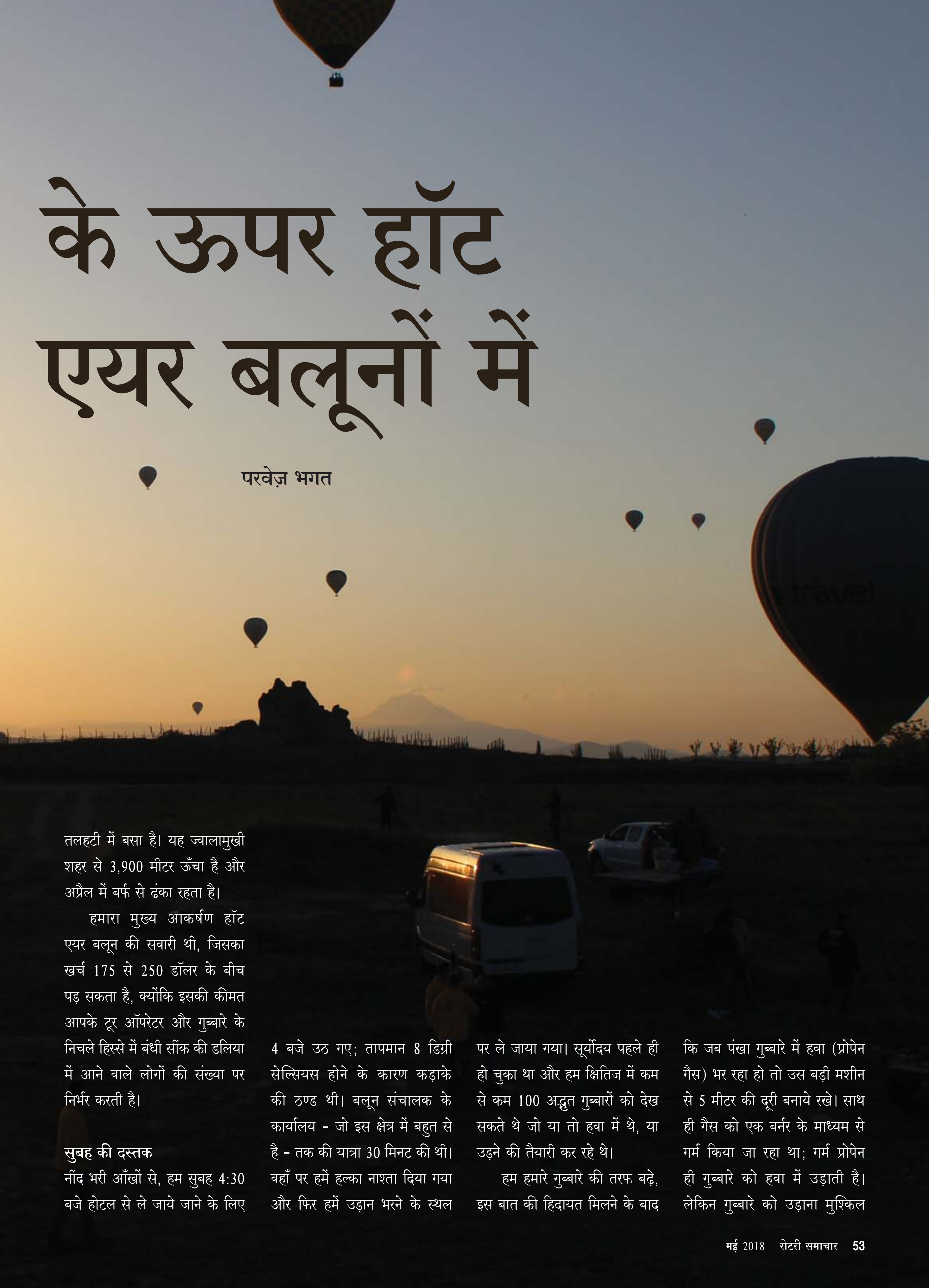

के ऊपर हॉट एयर बलूनों में

परवेज़ भगत

तलहटी में बसा है। यह ज्वालामुखी शहर से 3,900 मीटर ऊँचा है और अप्रैल में बर्फ से ढंका रहता है।

हमारा मुख्य आकर्षण हॉट एयर बलून की सवारी थी, जिसका खर्च 175 से 250 डॉलर के बीच पड़ सकता है, क्योंकि इसकी कीमत आपके टूर ऑपरेटर और गुब्बारे के निचले हिस्से में बंधी सींक की डलिया में आने वाले लोगों की संख्या पर निर्भर करती है।

सुबह की दस्तक

नींद भरी आँखों से, हम सुबह 4:30 बजे होटल से ले जाये जाने के लिए 4 बजे उठ गए; तापमान 8 डिग्री सेल्सियस होने के कारण कड़ाके की ठण्ड थी। बलून संचालक के कार्यालय – जो इस क्षेत्र में बहुत से है – तक की यात्रा 30 मिनट की थी। वहाँ पर हमें हल्का नाश्ता दिया गया और फिर हमें उड़ान भरने के स्थल पर ले जाया गया। सूर्योदय पहले ही हो चुका था और हम क्षितिज में कम से कम 100 अद्भुत गुब्बारों को देख सकते थे जो या तो हवा में थे, या उड़ने की तैयारी कर रहे थे।

हम हमारे गुब्बारे की तरफ बढ़े, इस बात की हिदायत मिलने के बाद कि जब पंखा गुब्बारे में हवा (प्रोपेन गैस) भर रहा हो तो उस बड़ी मशीन से 5 मीटर की दूरी बनाये रखे। साथ ही गैस को एक बर्नर के माध्यम से गर्म किया जा रहा था; गर्म प्रोपेन ही गुब्बारे को हवा में उड़ाती है। लेकिन गुब्बारे को उड़ाना मुश्किल

और पेचीदा कार्य है, और हमारे पायलट मेहमत ने विश्वास के साथ और कुशलतापूर्वक उसके अंतरिक्ष यान को हवा में उड़ाया। लेकिन इस बात की हिदायत हमें पहले नहीं दी गई कि गुब्बारे के उतरते वक्त अत्यंत सावधान रहें। हमें कहा गया, ''डलिया के किनारों पर लगे कुंदों को पकड़ लीजिये, घुटने के बल नीचे झुक जाइये क्योंकि डलिया तिरछी होकर उतरेगी और केवल इसके बाद ही उसे सीधा किया जायेगा।''

यह काफी आसान लगता है, और किसी अन्य चीज़ से अधिक, हम सभी हमारी 60 मिनट की सवारी करने को लेकर उत्सुक थे। जल्द ही गुब्बारा ऊपर उठने लगा, उड़ान की शुरुआत अकल्पनीय रूप से अच्छी थी, और 15 मिनट के अंदर हम विशाल घाटी में खड़ी किनारों वाली चट्टानों के ऊपर उड़ रहे थे। अब तक आसमान में सैकड़ों गुब्बारे उड़ान भर चुके थे और नीचे का भूदृश्य अत्यंत रमणीय था! सुबह के सूरज की सुनहरी रोशनी पूरी घाटी और उसकी चट्टानी संरचनाओं, पिजन होल गुफाओं, और मशरूम के आकार की फेयरी चिमनियों को प्रकाशित कर रही थी।

उड़ान की शुरुआत अकल्पनीय रूप से अच्छी थी, और 15 मिनट के अंदर हम विशाल घाटी में खड़ी किनारों वाली चट्टानों के ऊपर उड़ रहे थे।

फेयरी चिमनियाँ

फेयरी चिमनियों के निर्माण के पीछे एक दिलचस्प कहानी है, हालाँकि इसमें किसी अलौकिक शक्ति का हाथ नहीं है! चिमनियाँ लाखों साल पहले शुरू हुई भूगर्भिक प्रक्रिया का परिणाम है, जब ज्वालामुखीय विस्फोटों ने पूरे क्षेत्र में राख की बारिश कर दी और यह राख धीरे-धीर कठोर होकर नर्म, छिद्रयुक्त चट्टान बन गई जिस पर बेसाल्ट की एक परत चढ़ गई। हजारों

उड़ान के लिए गुब्बारों में प्रोपेन गैस और गरमी भरी जा रही है।

TURCA

भूमिगत शहरों को आदिमानवों द्वारा कांस्य युग में निर्मित किया गया था और बाद में तीसरी शताब्दी में इस पर ईसाईयों द्वारा तब कब्ज़ा कर लिया गया जब वे रोमन शासकों से भागे थे।

वर्षों के अपरदन के कारण मुलायम हिस्सा घिस गया, और विभिन्न आकृति और आकर के स्तंभ बन गए, उनमें से बहुत से 130 फीट जितने ऊँचे है। कठोर बेसाल्ट का अपरदन बहुत धीरे हुआ, जिससे हर एक के ऊपर मशरूम की आकृति की टोपी बन गई। चूंकि ये किसी जादू से कम नहीं लगते, इसलिए ये फेयरी चिमनियाँ कहलाते है।

गुब्बारा धीरे-धीर घाटी के ऊपर से गुज़र रहा था, जब कभी भी वह नीचे आने लगता, पायलट उसमें थोड़ी गर्म हवा भरकर उसे फिर से ऊपर उठा देता। अंदर मौजूद रस्सियों को कुशलतापूर्वक खींचकर, मेहमत दक्षता से गुब्बारे को आगे ले जा रहा था और इस प्रकार मंद हवा की सहायता से हम उड़े। हम वाकई में सौभाग्यशाली थे कि मौसम शांत था, क्योंकि ख़राब मौसम आपको धक्के और झटके दे सकता है। अत्यंत ख़राब और तूफ़ानी मौसम में गुब्बारे की सवारी रद्द कर दी जाती है और पैसा वापस कर दिया जाता है।

अजीब सा मजाक करने की आदत वाले पायलट ने बताया कि हम अब ज़मीन से लगभग 1,500 फीट की ऊँचाई पर है, अगले ही पल उसने कहा, क्या आपने टाइटैनिक के बारे में सुना है? जैसे ही महिला घबराते हुए खिलखिलाई, उसने आगे कहा, क्या यह आपकी पहली उड़ान है? जैसे ही हमने अपना सर हिलाया, उसने आगे कहा, मेरी दूसरी है!!

कई बार उसने गुब्बारे को नीचे चिमनियों की चोटी के लगभग 20-50 फीट ऊपर तक आने दिया, और अक्सर हमें घाटी की गहराइयों में ले गया। लेकिन किसी भी वक्त हमें डर नहीं लगा, शायद इसलिए क्योंकि मौसम देवता ने उस दिन शांत रहना तय किया था।

अच्छी लैंडिंग

जल्द, बहुत जल्द, ज़मीन पर उतरने का समय हो गया था, और आयोजकों के पास लैंडिंग की भी एक पूरी प्रक्रिया थी। जैसे ही गुब्बारा नीचे आने लगा तो एक बड़ा पिक अप ट्रक आया और उसने गुब्बारे का कुछ मिनट पीछा किया, और चार बलवान-सशक्त आदमियों ने डलिया से झूलती रस्सियों को मजबूती से पकड़ा, और आहिस्ता से गुब्बारे को नीचे लाए, पिक अप ट्रक पर उसका मार्गदर्शन कर उसे एक उत्तम लैंडिंग बनाते हुए। पकड़ने या झुकने की कोई जरूरत नहीं पड़ी और हमने खड़े रहकर ही अहिस्ता से लैंडिंग की और एक-एक करके हमें डलिया से बाहर निकाल लिया गया।

वादे के अनुसार, शैंपेन टोस्ट समारोह शुरू किया गया। जश्न के साथ बोतल को खोलते हुए, कप्तान ने यह कहकर उत्साह को कम कर दिया कि शैंपेन मादक नहीं है! परन्तु हम सभी ने टोस्ट किया और उसे गटक लिया। हमारे लिए एक और सरप्राइज़ था; हमारी डलिया में एक हनीमून मनाने वाला जोड़ा था और टेबल पर एक केक लाकर उसे काटा गया और खाया गया। इस अनुभव का समापन हम में से हर एक को पदक देकर किया गया।

भूमिगत शहर

अगले दिन हमने कायमकली और देरिनकायु के भूमिगत शहरों की यात्रा की, जिन्हें आदिमानवों द्वारा कांस्य युग में निर्मित किया गया था और बाद में तीसरी शताब्दी में इस पर ईसाईयों द्वारा तब कब्ज़ा कर लिया गया जब वे रोमन शासकों से भागे थे। सारा समय

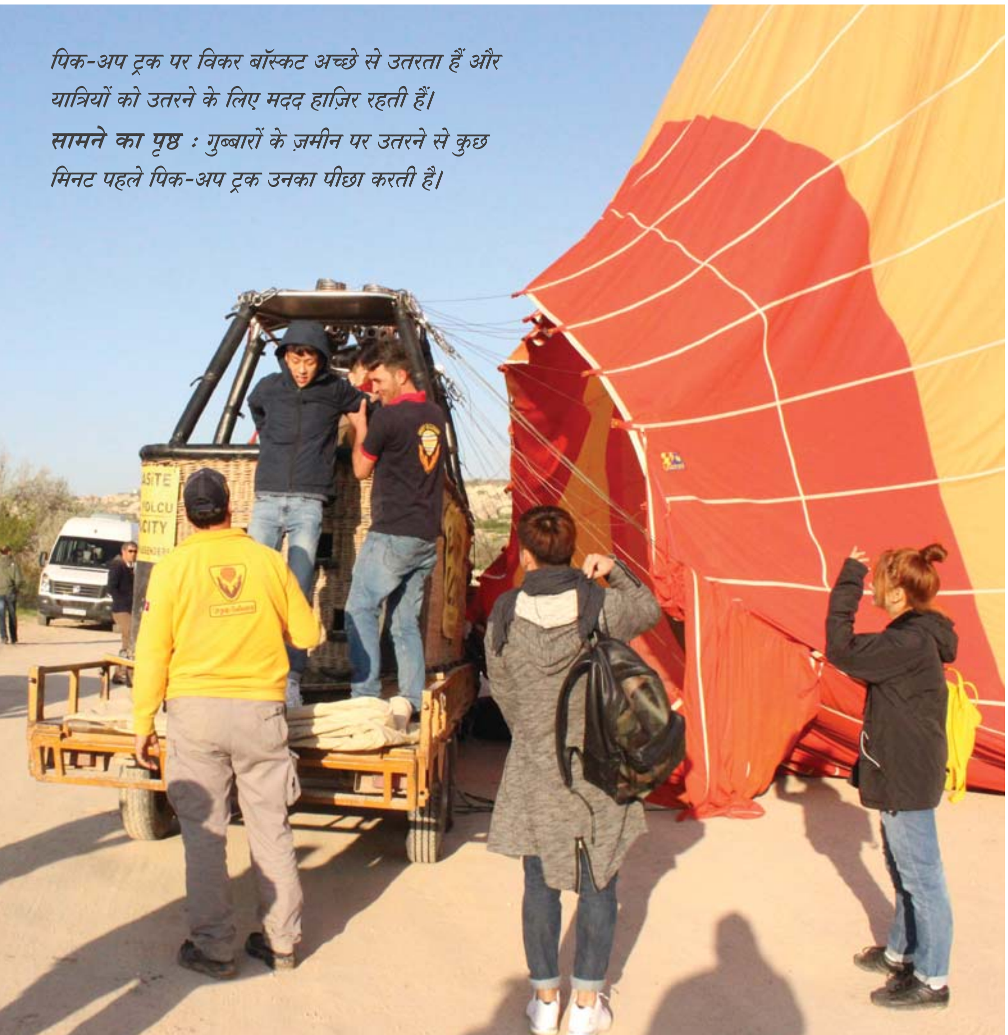

पिक-अप ट्रक पर विकर बॉस्कट अच्छे से उतरता हैं और यात्रियों को उतरने के लिए मदद हाज़िर रहती हैं।
सामने का पृष्ठ : *गुब्बारों के ज़मीन पर उतरने से कुछ मिनट पहले पिक-अप ट्रक उनका पीछा करती है।*

कप्तान मेहमेट सफल सवारी के पूरा होने का जश्न मानाते हुए बब्ली खोलते हैं।

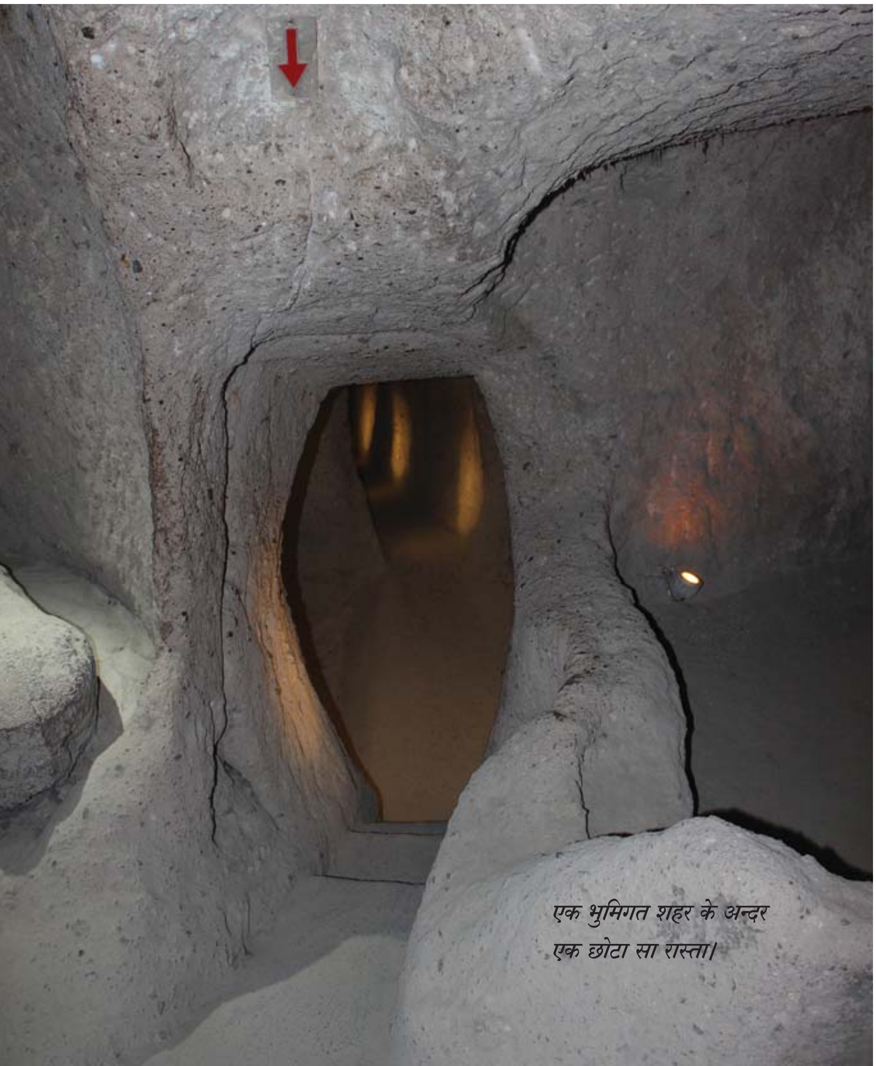

एक भुमिगत शहर के अन्दर एक छोटा सा रास्ता।

सर को बचाते हुए हम नीची और संकरी सुरंगों में से झुककर, दायें-बायें चलते हुए गुज़रे और आवास की बारीकियों को देखा, जैसे रसोईघर, शयनकक्ष, घुड़साल और तो और गिरजाघर भी।

देरिनकायु में, 160 वर्ग किमी के क्षेत्र में लगभग 200 छोटे 'गाँव' बसे हुए है, और वे सुरंगों, गुप्त रास्तों, ख़ुफ़िया कक्षों इत्यादि से परिपूर्ण है। किसी समय में यह शहर भूमिगत रहने वाले 20,000 निवासियों का घर था और 11 मंज़िल गहरा था।

पूरे तुर्की की तरह, कप्पादोशिया भी खाने के शौकीनों को लुभाता है। हमने विभिन्न प्रकार के कबाब, झींगे और मछलियाँ बुलाई, लेकिन शाकाहारियों के लिए भी यहाँ बहुत से विकल्प है। और भारतीयों के लिए, विशेष रूप से दक्षिण भारतीयों के लिए, अच्छी खबर यह है कि उनके लजीज पीटा ब्रेड के साथ ही, हर एक व्यंजन के साथ चावल दिया जाता है जिसे किसी किस्म के बीज या अन्य चीज़ के साथ पकाया जाता है।

वादे के अनुसार, कप्पादोशिया एक बढ़िया स्थान साबित हुआ, जहाँ खाने का भी एक बढ़िया अनुभव रहा!

चित्र: परवेज़ भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

TORONTO 2018

Rotary | ROTARY: MAKING A DIFFERENCE

Join the Traditional South Asian Reception

RI Convention, Toronto

Invite your global partners who support your service projects.
Bring your Rotary friends to show how Rotary works globally.
Opportunity to meet all the world leaders of Rotary.

Venue:
The Ritz-Carlton Hotel
Ball Room, 181, Wellington Street West, Toronto,
ON M5V 3G7, Canada. Tel: +1 416-585-2500

RID C. Basker
& Malathi Basker

We cordially invite
the Rotary family of South Asia
to a traditional reception
on Saturday, June 23rd, 2018
at The Ritz-Carlton Hotel
between 5.00 pm - 7.00 pm

Chairman - PDG R. Theenachandran
& Vasanthi Theenachandran

Registration Fee: INR 5,000 / US $ 75 per person

Payment can be made by cheque payable at par or DD favouring
R. THEENACHANDRAN payable at MADURAI, TAMIL NADU and send to:

PDG R. Theenachandran, Chairman - South Asian Reception
Devi House, 281-4, Sivagangai Main Road, Gomathipuram, Madurai - 625020 Tamil Nadu, India.
Tel: +91 452 4370027, Mob: +91 94430 53301 E-mail: theena3000@gmail.com

एलेप्पी मिट्टी-रहित खेती को बढ़ावा दे रहा है

जयश्री

एलेप्पी के एक इलाके में रोटेरियन निवासियोंको ग्रो बैग्स वितरित करते हुए।

"हमारे शहर में लोग अपने घरों के पिछवाडे. या छत में स्वस्थ सब्जियां उगा रहे हैं। यह प्रथा काफी तेजी से लोकप्रिय होती जा रही है।'' रोटरी एलेप्पी, मंडल 3211 के एक सदस्य ओमेन थॉमस कहते हैं, ''किसी भी वस्तु से अधिक, ये सब्जियां रासायनिक कीटनाशकों या उर्वरकों से मुक्त होती हैं।''

यह क्लब मंडल की महत्वपूर्ण परियोजना- आरईएपी (कृषि उत्पादन के लिए रोटरी का सशक्तिकरण) को उत्साहजनक रूप से बढ़ावा दे रहा है - जिसे डीजी सुरेश मैथ्यू द्वारा वर्ष के शुरु में लॉन्च किया गया था। क्लब ने कार्बनिक सब्जियों की खेती को बढ़ावा शहर के निवासियों के मध्य ग्रो बैग्स वितरित किया हैं। ये ग्रो बैग्स कई तरीकों से अनूठे होते हैं - वे खाद-समृद्ध कोको सामग्री से भरे हुए होते हैं; हल्के वजन वाले होते हैं और कम पानी का उपभोग करते हैं। इसके लिए मिट्टी की जरूरत नहीं होती हैं इसलिए लोग उन्हें अपनी छत पर भी रख सकते हैं। खाद प्राकृतिक रूप से अन्य चीजों के साथ मशरूम और 'एसोला', एक प्रकार के फर्न के साथ संसाधित होता है।

यह विचार क्लब अध्यक्ष कुमारस्वामी पिल्लई के मस्तिष्क की उपज थी जो 40 वर्षों की सेवा के बाद कॉयर बोर्ड, कोच्चि से सेवानिवृत्त हुए थे। ''कॉयर बोर्ड के अध्यक्ष सी पी राधाकृष्णन ने मेरी स्थापना समारोह की अध्यक्षता की और मैंने उनके साथ सब्जी की खेती के लिए ग्रो बैग्स को बढ़ावा देने पर विचार-विमर्श किया। पिल्लई कहते हैं, वह हमें सहयोग देने के लिए तैयार हो गए।'' कॉयर फाइबर के निष्कर्षण के दौरान प्राप्त होने वाला एक उप-उत्पाद कॉयर पिथ है। सेंट्रल कॉयर रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीसीआरआई) ने परियोजना की व्यवहार्यता पर एक क्षेत्रीय अध्ययन किया और बाद में, क्लब ने विगत दिसंबर में 1,000 ग्रो बैग्स वितरित करके कार्यक्रम शुरू किया और इसे जबर्दस्त समर्थन प्राप्त हुआ। अब तक, निवासियों को 2,500 बैग्स दिया गया हैं।

यूरोप में, विशेष रूप से नीदरलैंड्स में, कॉयर पिथ का उपयोग बडे.पैमाने पर सजावटी पौधों के साथ ही सब्जी की खेती के लिए भी किया जाता है। यह अत्यधिक छिद्र युक्त होता है और पानी को अपने वजन का तिनगुना पानी धारण कर सकता है और धीरे-धीरे पौधों के विकास के लिए मुक्त करता है। भारत में, खेती के लिए कॉयर पिथ का उपयोग सीमित है। अध्यक्ष कहते हैं कि प्रति वर्ष लगभग तीन लाख टन कॉयर पिथ केरल के तटीय बेल्ट में जमा होता है और इसे कचड़ा माना जाता है। समय बीतने के साथ यह निर्यात बाजार में पैसा कमाने का एक माध्यम बन गया है और पिछले वर्ष में ₹1,000 करोड़ के कॉयर पिथ का निर्यात किया गया है।

क्लब प्रत्येक लाभार्थी को 10 ग्रो बैग्स देता है जिसमें केरल सरकार की एक अनुसंधान और विकास संस्थान - केरल सब्जी और फल संवर्धन परिषद - से प्राप्त बीज और पौधे लगाए जाते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए लाभार्थी पौधे की अच्छी देखभाल करते हैं, क्लब प्रत्येक बैग से ₹15 जमा करवाता है।

ग्रो बैग्स के साथ अपने अनुभव का वर्णन करते हुए, एलेप्पी के रेजिडेंट मीरा और जयलक्ष्मी कहती हैं कि उन्हें टमाटर, बैंगन और मिर्च की खेती से लगभग चार किलोग्राम उपज प्राप्त होती है। वे आगे कहती हैं कि कार्बनिक खाद के उपयोग से पौधों की वृद्धि तेजी से होती हैं। ■

रोटरी ब्लड बैंक ने बीपी-डायबिटीज़ शिविर का आयोजन किया

वी मुत्तुकुमारण

रोटरी क्लब राजपलयम, मंडल 3212, द्वारा दक्षिण भारत में मदुरै के पास राजपालयम में पीएसीआर रोटरी ब्लड बैंक की स्थापना के सात वर्ष बीत चुके हैं। यह शहर एक विशेष नस्ल के - भव्य राजपलैयम कुत्ते लिए लोकप्रिय है।

रक्त बैंक के लिए आवश्यक सभी उपकरणों, जिनकी लागत ₹15,00,000 आई थी, के लिए रकम क्लब के चार्टर अध्यक्ष, पी आर रामसुब्रमण्य राजा द्वारा दान किया गया थों इसका नाम उनके पिता पीएसी सी रामसामी राजा की स्मृति में पीएसीआर रोटरी ब्लड बैंक रखा गया था।

औद्योगिक कर्मचारियों के लिए आयोजित एक बीपी और मधुमेह स्क्रीनिंग शिविर।

अस्पतालों और नर्सिंग होम से रक्त की बढती मांग को ध्यान में रखते हुए, क्लब ने हाल ही में 35,000 डॉलर के लिए एक वैश्विक अनुदान और मंडल 5580, यूएस और कनाडा के 10 क्लबों के साथ-साथ इनके सिस्टर क्लब - रोटरी क्लब फार्गो मूरहेड एएम, नॉर्थ डकोटा और टीआरएफ के सहयोग से ब्लड बैंक को पूरी तरह से सुसज्जित एंबुलेंस उपलब्ध कराया है।

जब रक्त संग्रह और वितरण के लिए एम्बुलेंस का उपयोग नहीं किया जा रहा है, तो इसका उपयोग मंडल में बीपी और मधुमेह पहचान शिविरों में किया जाता है। मंडल अनुदान उप-समिति के अध्यक्ष, डॉ एन गोपालकृष्णन ने बताया कि उन्होंने इस प्रयास पर कैसे ध्यान दिया, "पिछले साल हमने ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ ऐसी जाँच शिविरों का आयोजन किया था और यह बहुत ही चौंकाने वाला तथ्य था कि ग्रामीणों यह भी पता नहीं है कि वे मधुमेह से पीड़ित थे या उनका रक्तचाप बहुत अधिक था।" उनमें से कुछ में रक्त में शर्करा का स्तर 500-600 डीडीआईएलआर मिलीग्राम था, जबकि उनमें से कुछ की बीपी रीडिंग 200/120 के बराबर थी। "तत्कालीन डीजी, डॉ के विजयकुमार ने गरीबों के स्वास्थ्य मुद्दों को संबोधित करने के लिए वाहन के इस्तेमाल को विस्तारित करने का विचार सुझाया," वे आगे कहते है।

क्लब ने ग्लोबल अनुदान के लिए आवेदन करते समय सर्वेक्षण के परिणामों को शामिल किया था और गाँव वालों के लिए 50 बीपी, डायबिटीज कैंपों को आयोजित करने के आश्वासन के साथ, वस्तुओं की अपनी बजट सूची में, पारा और डिजिटल बीपी उपकरण, ग्लूकोटर और इसके संबंधित स्ट्रिप्स की अधिक से अधिक मांग की थी। गोपालकृष्णन कहते हैं, "बिना कोई प्रश्न पूछे थोड़े समय में जीजी को मंजूरी दी गई थी।"

वादा पूरा किया

क्लब ने अपना वादा पूरा किया और पांच महीनों की अवधि में में 50 बीपी और मधुमेह डिटेक्शन शिविरों का आयोजन किया, जिसमें विभिन्न गांवों में 7,500 से अधिक व्यक्तियों की जांच की गई। यह क्षेत्र एक औद्योगिक बेल्ट है, जहाँ के अधिकांश निवासी उद्योगों में कार्यरत है।

अब क्लब मूक हत्यारों - रक्तचाप और मधुमेह की समस्या को सुलझाने के लिए अपनी सेवाएं जारी रखने के लिए तैयार है - और इसके लिए नियमित शिविरों के माध्यम से ग्रामीणों को समय पर उपचार प्रदान किया जाएगा। डॉ गोपालकृष्णन कहते हैं, "वाहन का इस्तेमाल पूरे वर्ष भर चिकित्सा शिविरों के आयोजन के लिए मंडल के अन्य क्लबों द्वारा किया जा सकता है।" ■

वह मायने रखती है

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब सेनोरस जामनगर और रोटरी क्लब देवभूमि द्वारका द्वारा प्रायोजित एक इंटर क्लब महिला शिखर का आयोजन द्वारका में आरआई मंडल 3060 में महिलाओं की सदस्यता को बढ़ावा देने के लिए किया गया था और वोदा सम्मेलन के दौरान दो प्रमुख शब्दों पर जोर दिया था - ''वह मायने रखती।''

डीजी रुचिर जैन और उनकी पत्नी सोहांगी के मस्तिषक की उपज, इस सम्मेलन में पर्याप्त संख्या में लोगों ने भाग लिया था क्योंकि डीजी ने मंडल 3060 में रोटरी से जुडे. सभी महिलाओं को पुरूष रोटेरियन के साथ शामिल होने के लिए अनुरोध भेजा था।

अधिक से अधिक महिला सदस्यों को शामिल करने के अपने दृष्टिकोण पर जोर देने के लिए, डीजी जानी ने सदस्यता समिति के भीतर एक विशेष पद का सृजन किया था ताकि महिलाओं की सदस्यता पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया जा सके और यह जिम्मेदारी डॉ कल्पना खंधेरिया को दी गई। रोटरी में और अधिक से अधिक महिलाओं को शामिल करने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए उन्हें एक इंटर क्लब महिला शिखर सम्मेलन आयोजित करने को कहा गया।

इस सम्मेलन में रोटरी और अन्य नेताओं ने उत्साहजनक परिचर्चा में भाग लिया जिसमें इतिहास के प्रमुख भारतीय महिलाओं के सफल जीवन पर प्रकाश डाला गया। इसका मुख्य रेखांकित संदेश यह था कि एक महिला कुछ भी हासिल कर सकती है यदि वह अपने दिल और दिमाग को ऐसा करने के लिए लिए तैयार करती है। ■

डीजी रुचिर जानी, मंडल की माहिला रोटेरियनों के साथ।

इसका मुख्य रेखांकित संदेश यह था कि एक महिला कुछ भी हासिल कर सकती है यदि वह अपने दिल और दिमाग को ऐसा करने के लिए लिए तैयार करती है।

एक अभियान हेतु साइकलिंग और शांति को बढ़ावा

रशीदा भगत

टूर ड रोटरी, एक साइकिल रैली जिसमें 800 उत्साही भागीदार नारंगी रंग की सुरक्षा जैकेट पहने चेन्नई की सड़कों से गुज़रें, के रंग-बिरंगे चौथे संस्करण को ADG पी शैलेन्द्र बाबू द्वारा हरी झंडी दिखाई गई।

रैली तीन श्रेणियों - 10, 50 और 100 किमी में विभाजित थी और बाबू ने 100 किमी वाले स्लॉट का चुनाव किया था। ''सुबह 5 बजे तक उत्साही साइकिल चालक आयोजन स्थल पर एकत्रित हो गए और हमारे पास थल, जल और वायु सेना की विंग्स के 150 NCC कैडेट्स भी थे। कार्यक्रम में 30 स्कूली बच्चों ने भी हिस्सा लिया था,'' रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन की अध्यक्ष उषा कुमार कहती है, जिन्होंने इस कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें डीजी आर श्रीनिवासन मुख्य अतिथि थे।

इस रंगबिरंगी और जीवंत गतिविधि में वार्म अप और एनीटाइम फिटनेस द्वारा संचालित जुम्बा सत्रों ने चार चाँद लगाए। इस सश्रम गतिविधि को करने से पूर्व एक शानदार नाश्ते के अलावा, हर एक प्रतिभागी को एक पदक, एक उपहारों से भरा बैग और रीबोक की तरफ से 750 रुपये का एक गिफ्ट वाउचर मिला।

इस वर्ष का कारण कैंसर की देखभाल था और रैली विश्व कैंसर दिवस के दिन आयोजित हुई। क्लब ने जीवन स्टेम सेल फाउंडेशन, जो कैंसर के क्षेत्र में भी कार्य करता है, को प्रतीक दान के रूप में एक लाख रुपये दिए। इकठ्ठा हुई बाकि राशी को एक अच्छी कैंसर परियोजना के लिए इस्तेमाल किया जायेगा।

शांति और समझ

उषा ने आगे कहा कि क्लब ने एक अन्य परियोजना की थी जिसके लिए उन्हें पीआरआईपी गैरी हांग द्वारा प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ था। उन्होंने कहा कि शांति को बढ़ावा देना रोटरी के मूल उद्देश्यों में से एक है। प्रति वर्ष, रोटरी की वर्षगाँठ को रोटेरियनों एवं रोटरी परिवारों द्वारा 'विश्व शान्ति एवं समझ दिवस' के रूप में मनाया जाता है। ''चूंकि हमारी दुनिया छोटी-मोटी झड़पों, गलतफ़हमियों, सामुदायिक टकरावों, क्षेत्रीय असमानताओं और गुटबाजियों से पीड़ित है,'' जिनमें से सभी में विश्व शांति को धराशायी करने की क्षमता है, इसलिए उनके क्लब ने विश्व शान्ति और समझ को बढ़ावा देने का निर्णय लिया।

रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन के वर्तमान और पूर्व अध्यक्ष अंबालावनन ने साथ मिलकर रोटेरियनों द्वारा शांति को बढ़ावा देने की शपथ लेने और स्वयं को चार मार्ग परीक्षण पर पुनः समर्पित करने के लिए एक परियोजना की शुरुआत की। यह तय किया गया कि इस प्रकार की शपथ को उसी दिन लिया जायेगा जिस दिन रोटरी की पहली बैठक शिकागो में 23 फ़रवरी, 1905 को हुई थी।

फ़रवरी 18 को चेन्नई में मंडल 3232 के सम्मलेन में रोई निदेशक सी. भास्कर ने परियोजना की शुरुआत की। ■

एंड पोलियो नाउ के लिए 90 दिनों में रु30 लाख

वी मुत्तुकुमारण

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल और ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने डीजी आशा प्रसन्ना कुमार, पीडीजी गण मधुरा चतरापती और श्रीकांत चतरापती से चेक प्राप्त किया (चित्र में डीजीएन समीर हरियाजी, पीआरआईडी मनोज देसाई, पीडीजी (मंडल 3131) विनय कुलकर्णी, रोटेरियनों इलावरसन, प्रशांत, शोभा और पी पी रामदास भी शामिल हैं।

आप इसे रोटरी का जादू कह सकते हैं, लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि रोटरी क्लब बैंगलोर डाउन टाउन, मंडल 3190 के रोटेरियन, रोटारेक्टर और इंटरएक्टर्स की एक समर्पित टीम ने *एंड पोलियो नाउ* अभियान के लिए सिर्फ तीन महीने ₹30 लाख एकत्र किए।

पिछले वर्ष नवंबर में निधि संग्रह अभियान शुरू करने के बाद, क्लब के सदस्यों ने आरवीसीई नामक एक इंजीनियरिंग कॉलेज के रोटारेकटर और एमईएस किशोर केंद्र और पुलिस पब्लिक स्कूल के इंटरएक्टर्स को शामिल किया और पोलियो को समाप्त करने की प्रतिज्ञा करवाई। क्लब के अध्यक्ष रघु आलम ने कहा कि, ''हमने बेंगलुरु और उसके आसपास पोलियो को समाप्त करने के अविश्वसनीय परिणाम प्राप्त हुआ हैं।'' एंड पोलियो प्लेज के चैंपियन पीडीजी मधुरा छत्रपति ने अपने साथी पीडीजी श्रीकांत छत्रपति के साथ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म केट्टो पर एक ऑनलाइन क्राउड फंडिंग कार्यक्रम शुरू किया, जिसके अंतर्गत य1 लाख एकत्र किया गया।

> सहमत हुए प्रोटोकॉल के अनुसार, बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, जो पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम में रोटरी का साझीदार है, अर्थात ₹90 लाख फाउंडेशन में दान स्वरूप देगी ।
>
> **रघु आलम**
> **अध्यक्ष, रोटरी क्लब बैंगलोर डाउन टाउन**

बहुपक्षीय दृष्टिकोण

अल्म द्वारा ''यथासंभव धनराशि का योगदान देने का'' निर्देश दिए जाने के बाद, क्लब के सदस्यों ने एंड पोलियो नाउ अभियान पर ध्यान केंद्रित किया। ''जहाँ रोटेरियन ने ₹1.5 लाख का योगदान दिया, वही रोटारेक्टर और इंटरएक्टर्स के प्रयासों माध्यम से ₹50,000 की अतिरिक्त राशि एकत्र करने में सफल हुए, जिन्होंने शॉपिंग मॉल, कॉलेज हॉस्टल और हाउसिंग सोसाइटीज जाकर बड़े उत्साह से निधि एकत्र किया,'' आलम समझाते हुए कहते हैं। औद्योगिक क्षेत्र, कपड़े के कारखाने में काम करने वाले श्रमिकों ने ₹1.5 लाख का योगदान दिया, वहीं रियल स्टेट प्रमोटर प्रेस्टीज ग्रुप ने इस श्रेष्ठ कार्य के लिए ₹5 लाख का योगदान दिया। ₹50,000 की शेष राशि गैर-रोटेरियन से प्राप्त हुई, इस प्रकार कुल मिलाकर ₹10 लाख की राशि एकत्र की जा सकी।

इस राशि को टीआरएफ ट्रस्टी के अध्यक्ष पॉल नेट्ज़ेल को बेंगलुरु में आयोजित रोटरी-सीएसआर कॉन्क्लेव के दौरान दान में दिया गया। डीजी आशा प्रसन्ना कुमार ने स्वेच्छा से उसी मंच से ₹90 लाख का चेक पोलियो फण्ड में दिया - जो क्लब के योगदान का दुगुना था।

सहमत हुए प्रोटोकॉल के अनुसार, बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, जो पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम में रोटरी का साझीदार है, अर्थात ₹90 लाख फाउंडेशन में दान स्वरूप देगी, आलम कहते हैं।

वह कहते हैं कि ''क्लब के सदस्य इस बात को लेकर अत्यंत प्रमुदित है कि वे एक-साथ मिलकर इतनी विशाल राशि एकत्र करने में सफल हुए।'' ■

सितारों का सम्मेलन

टीम रोटरी न्यूज़

ठाणे के रेमंड मैदान में 2,500 लोगों के बैठने की क्षमता वाला, दो विशाल डाइनिंग हॉल, वीआईपी लाउंज और प्रदर्शन क्षेत्र में 60 स्टालों से युक्त 60,000 वर्ग फुट के विशाल मेगा सम्मेलन केंद्र का निर्माण किया गया था - इन सभी आकर्षणों के परिणामस्वरूप तारांगन- दि स्टार गैलेक्सी नामक मंडल सम्मेलन 3142 - ग्रेटर मुंबई क्षेत्र में सबसे अधिक चर्चित रोटरी सम्मलेन बन गया।

जबकि संयुक्त मंडल 3140 के अधीन सम्मेलनों का आयोजन मुंबई में किया जाएगा, दूरी अधिक होने के कारण इस क्षेत्र से प्रतिनिधियों की उपस्थिति बहुत कम रहा करती थी। अब रोटरी क्लब थाणे नॉर्थ एंड, डीजी बी एम शिवराज के गृह क्लब, द्वारा आयोजित दो दिवसीय डिसकॉन, में 2,400 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

डीजी शिवराज, उनकी पत्नी मनोनमनी, आरआईपीआर और पीडीजी (3190) राजेंद्र राय और उनकी पत्नी रेखा के साथ मुख्य अतिथि के रूप में लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने समारोह का उद्घाटन दीप प्रज्वलित किया। इस अवसर पर सम्मेलन के अध्यक्ष संदीप सालवी और मेजबान क्लब के अध्यक्ष हेमंत अरोड़ा और उनकी पत्नी संगीता भी उपस्थित थे।

अपने संबोधन भाषण में, सुमित्रा महाजन ने 'स्वयं से बढ़कर सेवा' अवधारणा की प्रशंसा की जो रोटेरियन को समुदाय के अन्य लोगों की भलाई और सुविधा की व्यवस्था करने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा, ''बहुत सारे लोग इस कार्य को एक तरीके से या अन्य तरीके से कर रहे हैं, परंतु जब आप एक संगठन के रूप में एक-साथ मिलकर कार्य करते हैं, तो इस प्रकार से की गई समाज सेवा का अधिक प्रभाव पड़ता है, तथा एक भिन्न प्रकार की शक्ति प्राप्त होती है और यह सर्वांगीण है।''महिलाओं की विशाल संख्या में उपस्थिति को स्वीकार करते हुए, वह कहती है, ''एक मजबूत समाज का निर्माण करने के लिए, महिलाओं को हमेशा पुरुषों के बगल में खडे होना चाहिए; उस कहावत का दिन समाप्त हो चुका हैं, जब कहा जाता था कि, महर सफल व्यक्ति के पीछे, एक महिला का हाथ होता है।'' आप कार्यों को एक-साथ मिलकर पूरा करते हैं। आप यही काम रोटरी में कर रहे है - आप अपने साथ अपनी पति/पत्नी को लेकर चल रहे है ताकि वह भी समझ सके कि आप क्या रहे हैं, साथ ही वह समाज और संसार को भी समझ सके जिसमें आप रहते हैं और यह एक शक्ति है।''

डीजी बी एम शिवराज, लोकसभा सभापति सुमित्रा महाजन को सम्मानित करते हुए। (दाएं से दूसरे) आरआईपीआर राजेन्द्र राज, पीडीजी उल्हास कोलहटकर और मनोनमनी शिवराज भी चित्र में शामिल हैं।

प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर ध्यान दें

रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष के संदेश को सूचित करते हुए, पीडीजी राजेंद्र राय ने कहा कि क्लबों को मजबूत करना, मानवतावादी परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित करना और रोटरी की सार्वजानिक छवि को बढाना प्राथमिकता वाला क्षेत्र हैं। उन्होंने अनेकों सामुदायिक परियोजनाओं जैसे कि चेक बांध, पानी और स्वच्छता, शौचालय ब्लॉक का निर्माण करने, वृक्षारोपण अभियानों, रक्त आधान केंद्र और अंग केंद्र को शु रूकरने के लिए मंडल क्लबों की सराहना की। ''अपनी मजबूतियों पर काम करना जारी रखें; इन परियोजनाओं में सुधार लाएं और बेहतर बनाएं'' उन्होंने सलाह दी।

डीजी शिवराज ने कहा कि मंडल ने रोटरी वर्ष में 1,000 से अधिक नए सदस्यों को जोड़ने और 30 नए क्लबों का निर्माण करने का लक्ष्य निर्धारित किया था। मंडल में टीआरएफ का लक्ष्य 3 मिलियन डॉलर है और इसकी सेवा परियोजनाओं की सीमा और पहुंच बढ़ाने की योजना है।

अतिथि वक्ताओं में स्वामी सुखाबोधानंदन, प्रेरक वक्ता विशेषज्ञ शिव खेरा और बीवीजी इंडिया के चेयरमैन हनमंत गायकवाड.शामिल थे, जिनके सम्मोहक और प्रेरक वार्ता ने दर्शकों को अपनी सीटों से चिपके रहने को मजबूर कर दिया। दिन की शुरुआत में रेत कलाकार मनीषा स्वर्णकर द्वारा रोटरी के चित्रण ने कार्यवाही को एक रचनात्मक स्पर्श दिया। कुल मिलाकर, रुचिकर विषयों पर बोलने के लिए रोटरी के भीतर और बाहर के 18 मुख्य वक्ता इस अवसर पर उपस्थित थे। प्रख्यात गांधीवादी पलाम कल्याणसुंदरम और केंद्रीय वाणिज्य मंत्री सुरेश प्रभु ने वीडियो संदेश के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, क्योंकि वे इस सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो सके। ■

Membership Summary

As on April 1, 2018

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract Clubs	Interact Clubs	RCC
5	2981	112	4,644	222	60	225	170
5	2982	67	3,008	101	61	112	43
5	3000	126	5,271	453	292	661	195
4	3011	76	3,370	650	57	109	25
4	3012	87	3,425	667	70	129	55
5	3020	92	4,228	210	117	461	351
4	3030	92	5,063	625	81	310	164
4	3040	94	2,070	223	56	123	137
4	3053	73	2,785	425	17	47	94
4	3054	130	6,363	1,007	94	307	469
4	3060	98	4,203	446	61	122	132
4	3070	103	3,055	294	68	157	54
4	3080	77	3,324	224	73	216	108
4	3090	80	2,169	90	32	36	122
4	3100*	74	1,718	73	11	72	146
6	3110	115	4,039	316	51	49	104
6	3120	77	3,304	359	37	58	51
4	3131	131	5,534	1,116	111	279	80
4	3132	105	4,118	428	66	203	140
4	3141	89	5,425	1,165	120	252	81
4	3142	83	3,151	483	69	195	65
5	3150	98	3,630	362	93	229	109
5	3160	70	2,461	131	27	48	81
5	3170	127	5,636	406	59	308	161
5	3181	71	3,135	232	33	179	104
5	3182	83	3,414	258	36	274	91
5	3190	129	5,144	610	150	355	50
5	3201	140	5,231	319	100	131	47
5	3202	128	4,857	242	104	435	46
5	3211	137	4,487	270	12	89	123
5	3212	97	3,964	296	113	277	122
5	3231	68	2,887	120	54	196	237
5	3232	104	4,164	579	145	310	80
6	3240	87	3,038	350	61	147	152
6	3250	98	3,779	672	49	207	180
6	3261	68	2,513	295	16	102	42
6	3262	96	3,325	382	44	69	75
6	3291	146	3,821	716	81	131	590
India Total		**3,728**	**145,753**	**15,817**	**2,781**	**7,610**	**5,076**
5	3220	69	1,938	244	84	200	75
6	3271	81	1,463	254	52	16	13
6	3272	155	3,159	460	43	36	37
6	3281	205	5,854	833	230	85	186
6	3282	140	4,024	388	132	45	39
6	3292	114	4,449	673	122	115	108
S Asia Total		**4,492**	**166,640**	**18,669**	**3,444**	**8,107**	**5,534**

**Non-districted.*

Source: RI South Asia Office

FIND A CLUB

ANYWHERE IN THE WORLD!

Get Rotary's free Club Locator app and find a meeting wherever you go!

www.rotary.org/clublocator

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians	:	12,31,653
Clubs	:	35,748
Districts	:	539
Rotaractors	:	2,52,931*
Clubs	:	10,997*
Interactors	:	5,21,180*
Clubs	:	22,660*
RCC members	:	2,24,549*
RCC	:	9,736*

* As on April 2, 2018

दरभंगा में रोटरी एलएन - 4 शिविर

टीम रोटरी न्यूज़

दरभंगा के रोटरी क्लब, मंडल 3250, ने गिनी ऑफ मोबिलिटी प्रोजेक्ट के अधीन एक एलएन -4, कृत्रिम हाथ फिट करने के लिए शिविर का आयोजन किया था। रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन, मंडल 3131, और एस वी अस्पताल के साथ साझेदारी में, लाहिरीसराय के आदर्श मध्य विद्यालय में एक दिवसीय शिविर का उद्घाटन बिहार खाद्य और उपभोक्ता मंत्री मदन साहनी ने विधायक संजय सरोजी और डीजीएन गोपाल खेमका की उपस्थिति में किया। क्लब के अध्यक्ष डॉ. गौरी शंकर झा ने कहा, ‘‘वे सभी खुश थे कि रोटरी इंडिया के इतिहास में पहली बार दरभंगा में कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर आयोजित किया जा रहा है।’’

इस शिविर में 100 से अधिक लोगों को एलएन - 4 कृत्रिम हाथ (कोहनी के नीचे) लगाया गया था। क्लब से पच्चीस रोटेरियन डॉक्टर ने शिविर में भाग लिया, जबकि दो विशेषज्ञों के साथ लहेरियासराय के एसवी अस्पताल के 7 सदस्यीय पैरामीकल स्टाफ ने एलएन -4 के तकनीकी प्रक्रिया की निगरानी की। ‘‘हमें यह देख कर प्रसन्नता है कि एलएन - 4 अंगों फिट होने के बाद लाभार्थी लिखने, वाहन चलाने और

अपने दैनिक कामों को में सक्षम हैं,’’ झा जी कहते हैं।

एलएन - 4 परियोजना को एक मासिक आयोजन बनाने के लिए, क्लब अप्रैल के अंत तक रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन और एसवी अस्पताल के साथ एक सम झौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करेगा। ■

सम्मेलन

अपनी इच्छा को बढ़ाएं

रेंडी ड्रूज़नि

क्या आप 23-27 जून तक आयोजित होने वाले रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के भाग लेने के लिए टोरंटो जा रहे हैं? कुछ उपयोगी मुफ्त ऐप्स डाउनलोड करें ताकि आप सम्मेलन और शहर दोनों का अधिकाधिक लाभ प्राप्त कर सके। आपके लिए यहां कुछ ऐप्स का उल्लेख किया गया हैं।

सम्मेलन को नेविगेट करने के लिए रोटरी ईवेंट आवश्यक एप है। इसके माध्यम से, आप अपने दैनिक कार्यक्रम की योजना बना सकते हैं, विशिष्ट वक्ताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, और सत्र का हैंडआउट डाउनलोड कर सकते हैं। यह आपको अन्य रोटेरियन से जुड़ने, फोटो साझा करने, सत्रों को रेटिंग देने, और सम्मेलन आयोजकों को फीडबैक भेजने में भी मदद कर सकता है। एप 18 मई को डाउनलोड करने के लिए उपलब्ध

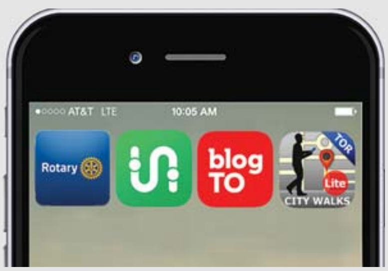

होगा; इसे ‘‘रोटरी इवेंट्स’’ के नाम से अपने एप स्टोर में ढूंढें।

ट्रांजिट ऐप कनाडा सहित 11 देशों में शहरों के चारों ओर आपको रास्ता खोजने में मदद करेगा। एप बसों, सबवे और स्ट्रीट कार्स के लिए निकटतम ट्रांजिट स्टॉप की जानकारी प्रदान करता है। एक गंतव्य स्थान का पता दर्ज करें, और एप सबसे आसान ट्रांजिट मार्ग के बारे में सूचित करेगा।

एक टोरंटो-विशिष्ट एपजिसे Blog to कहा जाता है, आपको शहर के सर्वश्रेष्ठ रेस्तरां, बार और दर्शनीय स्थल ढूंढने में मदद करेगा, साथ ही साथ में ऐसे कार्यक्रमों के बारे में भी सूचित करेंगा जिसमें आप भाग लेना चाहते हैं।

टोरंटो मैप्स और वाइक आपको स्व-निर्देशित सैर के माध्यम से ले जाता है जिसमें विश्व प्रसिद्ध आकर्षण शामिल हैं और साथ ही कुछ कम-ज्ञात जगहें भी शामिल हैं।

रजिस्टर करने के लिए,
***riconvention.org* पर जाएं**

© *The Rotarian*

कहानियों के पीछे की कहानियाँ

संध्या राव

लिखी गई एवं बेची गई किताबों के क्यों और कहाँ और कैसे के संदर्भ में अनोखे तथ्य

मुझे स्वीडिश लेखिका एस्ट्रिड लिन्डग्रेन पसंद है। वह मुख्य रूप से बच्चों के लिए लिखती थी, लेकिन कई सालों तक उन्होंने पुस्तक संपादक के रूप में काम किया, और वह एक निर्भीक राजनैतिक समीक्षक भी थी। एक आधिकारिक स्वीडिश वेबसाइट पर डेविड विल्स का लिखा एक लेख है जिसका शीर्षक है: ''एस्ट्रिड लिन्डग्रेन ने कहा, लोगों ने सुना।''

जिज्ञासा जागृत हुई, मैंने लेख को पढ़ा, और यह पाया: ''68 वर्ष की उम्र में उन्होंने स्वीडिश दैनिक समाचार पत्र एक्स्प्रेसन को स्वीडिश टैक्स प्रणाली में मौजूद एक खामी के विषय पर अपने विचार भेजे। उस खामी का मतलब था कि एक स्व-नियोजित लेखिका के तौर पर, उन्हें उनकी कमाई पर 102 प्रतिशत कर देना था। एस्ट्रिड ने उस लेख को परियों की कहानी की शैली में लिखा था, और उसका तत्काल प्रभाव पड़ा। 1976 में प्रकाशित 'पोम्पेरीपोसा इन मोनिसमेनिया' मुख्य पृष्ठ की खबर बन गई और इससे ना केवल कर कानून में बदलाव हुए, बल्कि अंततः 44 सालों से सत्ता में रही सामाजिक लोकतान्त्रिक सरकार का पतन भी हुआ।''

ऐसा प्रतीत होता है कि पत्रकार इन मुद्दों पर उनकी राय जानना चाहते थे और जो वह कहती थी छापते थे। ''वाकई,'' विल्स लिखते है, ''वह इतनी प्रभावशाली थी कि स्वीडन की यूरोपीय संघ में प्रस्तावित सदस्यता - जिसका उन्होंने विरोध किया - के मुद्दे पर यूरोपीय संघ समर्थित प्रेस ने उनसे बात ना करने के लिए कहा था। जैसा कि हम जानते है,'' स्वीडन यूरोपीय संघ का हिस्सा है।

यह वही एस्ट्रिड लिन्डग्रेन है जिन्हें एक नौ साल की, चित्तीदार चेहरे वाली, लाल बालों वाली एक लड़की पिप्पी लॉन्गस्ट्रंप के बारे में एक बच्चों की किताब लिखने के लिए प्रसिद्धि मिली थी। कुछ 70 भाषाओं में अनुवादित यह किताब, जिसमें *पिप्पी लेम्बमोज़* नामक हिंदी संस्करण शामिल है, जब पहली बार 1940 के दशक में प्रकाशित हुई, उस किताब ने 'उचित' समाज को इतना अधिक नाराज किया कि कुछ लोगों ने इस किताब को वर्जित करवाने के लिए अपना पूरा ज़ोर लगा दिया। हाल ही में, श्रृंखला की तीसरी किताब, *पिप्पी इन दी साउथ सीज़,* को इसके जातिवादी लेखन के कारण स्वीडिश पुस्तकालयों से हटा लिया गया। यद्यपि, रोचक बात यह है कि पिप्पी का किरदार वास्तव में एस्ट्रिड की बेटी के ख्यालों में जन्मा था।

केरिन लगभग 9 या 10 साल की थी, बीमार और उदास अपने बिस्तर पर लेटी हुई थी जब उसने अपनी माँ को ''पिप्पी लॉन्गस्ट्रंप की कहानी सुनाने'' के लिए कहा था। बाकि सब इतिहास बन गया।

लेखक अमीश त्रिपाठी की कहानी भी उतनी ही नाटकीय है जिन्होंने शिवा-त्रयी - इंसान के रूप में शिव की एक पुन: कल्पित देवगाथा - लिखकर प्रसिद्धि हासिल की। कई वर्ष पूर्व, मैंने 14/15 वर्ष के कुछ बच्चों को किताबें (*दी इमॉर्टल्स ऑफ़ मेलुहा, दी सीक्रेट ऑफ़ दी नागास, दी ओथ ऑफ़ दी वायुपुत्रास*) मुझे पसंद ना आई कहकर घोर पाप कर दिया। जाहिर था, वे नाराज हो गए। फिर भी भारतीय किशोर (कम से कम उस समय के) शिष्ट हुआ करते थे, वरना कई अपराधों के लिए मेरी हत्या की जा चुकी होती।

सूत्रों के मुताबिक, अमीश त्रिपाठी ने अपनी पत्नी प्रीती के प्रयासों के कारण जबर्दस्त विपणन युक्ति अपनाई थी। उनकी पहली किताब, *दी इमॉर्टल्स ऑफ़ मेलुहा,* के लोकार्पण पर, प्रीती ने सुझाव दिया कि किताबों की दुकानों को पहले अध्याय की प्रति मुफ्त में देना चाहिए। इससे पाठकों में उमंग जागी; स्वाभाविक रूप से उन्होंने किताब खरीदी, और लगभग एक हफ्ते में किताब बेस्टसेलर बन गई। अब, उनके नाम पर कई अन्य किताबें होने के साथ ही, त्रिपाठी को निश्चित रूप से निष्ठावान पाठक एवं लाखों में किताबों की बिक्री दोनों मिलेंगे।

ठीक है, तो यह आधुनिक समय है। लेकिन प्राचीन समय में क्या होता था? उदाहरण के लिए, *रामायण* के समय में क्या होता था? लगभग 500 ईसा पूर्व में लिखी गई, *रामायण* का श्रेय वाल्मीकि

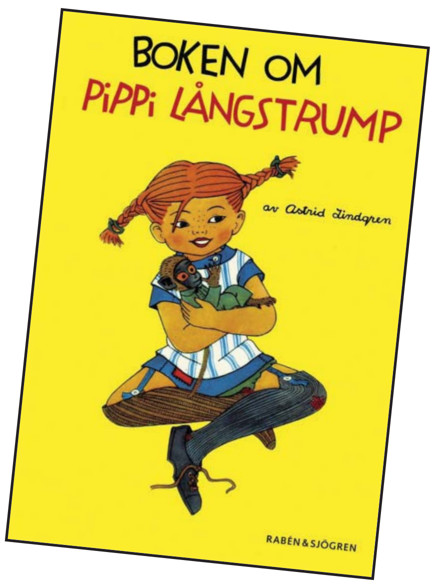

वहाँ, एक दीवान पर मार्गरेट मिशेल बैठी हुई थी, और उनके बाजू में मेरे द्वारा देखी गई अब तक की सबसे बड़ी पाण्डुलिपि थी। पन्नों का ढेर उनके कन्धों तक पहुँच चुका था। वह उठी और उन्होंने कहा: ङ्कमेरा मन बदलने से पहले इसे ले जाओ।

मैकमिलन संपादक हेरोल्ड एस लाथम

को जाता है जिन्होंने इस ग्रन्थ को संस्कृत में लिखा था। वाल्मीकि की रामायण को सर्वमान्य रूप से 'वास्तविक' समझा जाता है। फिर भी, *रामायण* के कुछ 300 संस्करणों के होने के प्रमाण है: तमिल में कंबर द्वारा रचित *कम्ब रामायण*; तुलसीदास द्वारा अवधि में लिखी *रामचरितमानस*; एकनाथ द्वारा मराठी में लिखी *भावार्थ रामायण*; बंगाली में कृत्तिबास ओझा द्वारा लिखित *कृत्तिवासी रामायण*; और भी कई। थाई *रामकेन*, खमेर *रीमकेर*, और लाओ *फरा लाक फरा लाम*, के साथ-साथ लोक, आदिवासी एवं शास्त्रीय संस्करण भी मौजूद है।

रत्नाकर के रूप में जन्म लेने के बाद वाल्मीकि कैसे वाल्मीकि बने यह अपने आप में एक कथा है। ऐसा माना जाता है कि वह एक डाकू थे। एक दिन, एक ज्ञानी द्वारा उन्हें नई शुरुआत करने की सलाह दी गई। आत्मविश्लेषण करने पर, रत्नाकर को अहसास हुआ कि उनके डाकू बनने का उद्देश्य उनके परिवार का भरण-पोषण करना था। इसलिए, ज्ञानी से मुलाकात होने के बाद, उन्होंने उनकी पत्नी और बच्चों से कहा: मैं देख रहा हूँ कि तुम मेरे द्वारा लूटे गए धन से जीवन यापन करके प्रसन्न हो, तो क्या मैं यह मान सकता हूँ कि तुम मेरे पापों में भी हिस्सेदारी लोगे?

उनकी पत्नी और बच्चों ने एतराज़ किया और रत्नाकर स्तब्ध रह गए। जैसे ही सच्चाई उनके सामने आई उन्हें अहसास हुआ कि उन्हें क्या करना है। उन्होंने अपने लिए एक अच्छा स्थान ढूँढा और अत्यंत गंभीर प्रकार के मुद्दों पर ध्यान लगाना शुरू किया। वह समाधि में लीन हो गए और उन दीमकों से अनजान हो गए जिन्होंने उनके चारों ओर बांबी (वल्मीक) बनाना शुरू कर दिया था। इस प्रकार उन्हें उपनाम वाल्मीकि मिला -- संस्कृत के ङ्कवाल्मिकफ शब्द से जिसका मतलब है दीमक।

जब पदली बार 1936 में 1037 पन्नों वाली *गॉन विथ द विंड* प्रकाशित हुई, तो उसकी कीमत पूरे तीन डॉलर थी। वार्षिक मुद्रास्फीति के हिसाब, इंटरनेट स्रोतों और गणना करने वालों के अनुमान से यह आज के समय के लगभग 54 डॉलर के बराबर होती! यह वाकई एक सस्ती किताब नहीं थी! 1981 में एडविन मेकडोवेल द्वारा *न्यू यॉर्क टाइम्स* में लिखे गए एक लेख के अनुसार, एक बार तो ऐसा लगा कि किताब प्रकाशित नहीं होगी क्योंकि लेखिका स्वयं इस पर तीन वर्षों तक काम करने के बाद हार मान चुकी थी। मैकमिलन के संपादक हेरोल्ड एस. लाथम 1935 में एटलांटा स्थित उनकी होटल में हुई एक मुलाकात को याद करते है: ''...वहाँ, एक दीवान पर मार्गरेट मिशेल बैठी हुई थी, और उनके बाजू में मेरे द्वारा देखी गई अब तक की सबसे बड़ी पाण्डुलिपि थी। पन्नों का ढेर उनके कन्धों तक पहुँच चुका था। वह उठी और उन्होंने कहा: ङ्कमेरा मन बदलने से पहले इसे ले जाओ।फ और अंदाजा लगाइए क्या? उन पन्नों में स्कारलेट ओफ्हारा के बजाय पेंसी थी!''

मार्गरेट मिशेल क्यों अपनी पाण्डुलिपि बताने के लिए अनिच्छुक थी? मेकडोनेल कहते है कि उन्होंने उनकी ''अनिच्छा के बारे में कहा... 'मैं विश्वास नहीं कर सकती कि एक उत्तरी प्रकाशक राज्यों के मध्य युद्ध पर दक्षिणी दृष्टिकोण से लिखे एक उपन्यास को स्वीकार करेगा'।''

नाइजीरियाई लेखक चिमामांडा नगोज़ी आदिची ने *सेलॉन* को दिए गए एक साक्षात्कार में कहा था, ''मेरे बहुत से लेखक मित्र अप्रसन्न हो जाते है जब

मेरे बहुत से लेखक मित्र अप्रसन्न हो जाते है जब उनसे कहानी के पीछे की कहानी के बारे में पूछा जाता है। मैं नहीं होती। कल्पना आसमान से नहीं टपकती; आपको किसी चीज़ के साथ काम करना पड़ता है।

चिमामांडा नगोज़ी आदिची

उनसे कहानी के पीछे की कहानी के बारे में पूछा जाता है। मैं नहीं होती। कल्पना आसमान से नहीं टपकती; आपको किसी चीज़ के साथ काम करना पड़ता है। मेरी कल्पनाएं मेरे जीवन से आती है, लेकिन उससे भी अधिक दूसरे व्यक्तियों के जीवन से आती है।''

हाँ, कहानियों के पीछे की कहानियाँ आकर्षक होती है। आपके पसंदीदा लेखक की कहानी को ऑनलाइन देखिये और मैं वादा करती हूँ कि आप आश्चर्यचकित रह जायेंगे। अमिताव घोष मेरे पसंदीदा लेखकों में से एक है। बहुत से लोगों को भारत और चीन, एवं ईस्ट इंडिया कंपनी के मध्य अफीम के व्यापार के बारे में लिखी उनकी इबिस त्रयी बोझिल लगती है (*सी ऑफ़ पॉपीस, रिवर ऑफ़ स्मोक, फ्लड ऑफ़ फायर*)। मैं सहमत हूँ, यह आसान नहीं है, लेकिन जिस दुनिया की उन्होंने रचना की और जिस तरह से की वह अद्भुत है। जाश सेन ने उनके बारे में *scroll.in* में यह कहा: मुझे अब तक की सबसे अच्छी प्रशंसा मेरे दोस्त और शानदार लेखक, स्वर्गीय सुनील गंगोपाध्याय, द्वारा मिली थी जिन्होंने मेरे एक उपन्यास का विमोचन करते वक्त कहा था, 'ई तो देख्वी बांग्ला बोई, शुधु इंग्रिजित लेखा!' (यह तो बंगाली किताब है, केवल अंग्रेज़ी में लिखी गई है!)'' इससे बेहतर और कुछ कहा नहीं जा सकता था।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

आप कितने युवा है?

शीला नाम्बियर

उम्रवृद्धि के दो पहलू होते है। जितने वर्ष आप इस गृह पर गुजारते है वह आपकी कालानुक्रमिक उम्र होती है। परन्तु आपकी जैविक या वास्तविक उम्र बुनियादी कोशिकीय स्तर पर आपके क्रियात्मक शरीर की वर्तमान अवस्था से संबंधित है। जरुरी नहीं है कि ये दोनों उम्र समान हो। हो सकता है कि एक व्यक्ति की कालानुक्रमिक उम्र 30 वर्ष हो, लेकिन उसका शरीर और दिमाग 55 वर्ष की उम्र के एक व्यक्ति जितना हो। वह लचर मांसपेशियों, कमजोर याददाश्त, कम उत्पादन क्षमता और कम स्टैमिना वाला होने के। बीमारियों एवं उन्हें ठीक करने के लिए दवाइयों की लंबी सूची होने के साथ वह तनावग्रस्त, अवसादग्रस्त हो सकता है।

व्यक्ति कालानुक्रमिक रूप से 50 वर्ष की उम्र का हो लेकिन ऊर्जा, बल, ताकत, और जीवन के असली आनंद के मामले में उसकी वास्तविक उम्र 35 वर्ष की हो।

कौन से घटक आपकी वास्तविक या जैविक उम्र को सुनिश्चित करते है?

रक्तचाप, हृदय गति और अन्य चयापचय मापदंड जैसे ब्लड शुगर और कोलेस्ट्रॉल, दृष्टि, फेफड़े, हृदय, स्वर-रज्जु, त्वचा स्फीत, ऊर्जा स्तर, शारीरिक उपस्थिति, आपकी मांसपेशियों की तान एवं स्थिति, मानसिक तीक्ष्णता, स्मरण शक्ति, आत्मनिर्भरता का स्तर, वसा का अनुपात, दुबला शरीर और फिटनेस स्तर (हृदयवाहिनी की मजबूती, लचीलापन, शक्ति, चपलता, सजगता, संतुलन, समन्वय इत्यादि) जैसे घटक।

आपकी वास्तविक या जैविक उम्र कैसे निर्धारित होती है?

एक अच्छे या खराब गुणवत्ता वाले शरीर के लिए मंच तैयार करने का कार्य जीन्स करते है। हालाँकि उम्रवृद्धि की प्रक्रिया पर अंतिम निर्णय जीवन शैली के चुनाव का होता है। आपके जीन्स कितने भी अच्छे क्यों ना हो, अगर आपने अपने शरीर को तनावग्रस्त करने वाले घटकों जैसे तम्बाकू, शराब, ड्रग्स, दैनिक स्तर पर घटिया जीवन शैली जैसे अस्वास्थ्यकर भोजन एवं पर्याप्त कसरत की कमी, के अधीन किया हुआ है, तो तेज़ी से बूढ़ा होना निश्चित है। आपके जीन्स बन्दूक में गोली भरते है लेकिन आपकी जीवनशैली ट्रिगर दबाती है।

यहाँ जीवनशैली के कुछ मापदंड है जो उम्रवृद्धि की प्रक्रिया को रोक सकते है और साथ ही उसे उलट भी सकते है:

- उचित भोजन - एंटी-ऑक्सीडेंट्स, मिनरल्स, विटामिन्स और फाइबर से भरपूर भोजन खाएं। फल, सब्जी, बेर, नट्स, बीज एवं दालें, प्रोटीन और अच्छी गुणवत्ता वाले वसा प्रदान करते है। संसाधित और संशोधित भोजन, तम्बाकू और अत्यधिक शराब से दूर रहें।
- सही ढंग से व्यायाम करें - एक अच्छी तरह से तैयार की गई फिटनेस दिनचर्या में दौड़ने, तेज चलने, साइकिल चलाने या एरोबिक सत्रों जैसी हृदयवाहिनी गतिविधियाँ भी शामिल होना चाहिए। इसे मांसपेशियां बनाने वाले शक्ति प्रशिक्षण रूटीन और मांसपेशियों के लचीलेपन को बनाए रखने के लिए एक स्ट्रेच रूटीन के साथ संतुलित होना चाहिए। हरकत करने के लिए मांसपेशियां महत्वपूर्ण होती है इसलिए उन्हें अनुकूलत बनाये रखने एवं उन्नत करने के लिए प्रतिरोध (चाहे बाहरी वजन हो या स्वयं के शरीर का वजन) के विपरीत कार्य करने की आवश्यकता होती है। लचीलेपन को

बरकरार रखने के लिए उन्हें तानने की आवश्यकता भी होती है।

मांसपेशी अपक्षय और उम्र के साथ होने वाली कमजोरी एवं अनुपयोग, गतिशीलता में कमी के प्रमुख कारण है। योग और पूरे शरीर को तानने जैसे तौर-तरीक शरीर को लचीला बनाते है, दर्द को रोकते है और मांसपेशियों के असंतुलन से बनने वाली खराब मुद्रा को ठीक करते है।

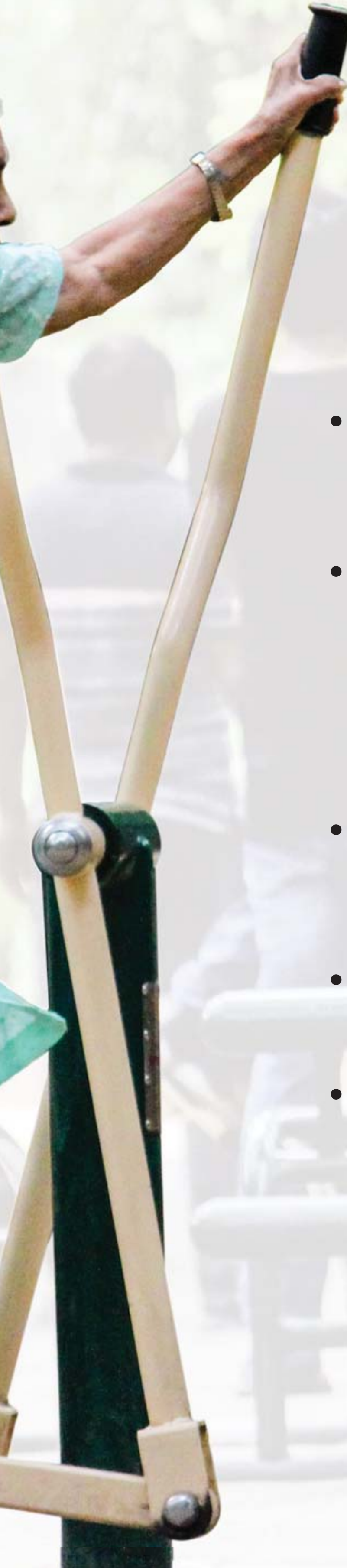

हमें अब तक मिले उम्र कम करने के उपायों में निश्चित रूप से कसरत ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है। महँगी त्वचा क्रीमें जो झुर्री मुक्त त्वचा का वादा करती है, कॉस्मेटिक सर्जरी, लेज़र अपक्षरण, बोटॉक्स आदि केवल उम्रवृद्धि के बाहरी लक्षणों का समाधान करते है। वे नियमित रूप से धड़कते दिल और एक सुनियोजित कसरत के रूटीन से प्राप्त होने वाले लाभों का मुकाबला नहीं कर सकते।

- अपने शरीर के वजन को संतुलित रखिये - उम्र के साथ वज़न का बढ़ना अनिवार्य नहीं है। सही पोषण एवं कसरत द्वारा अपने शरीर के वजन को संतुलित रखने के साथ-साथ अपने शरीर की गुणवत्ता को बेहतर बनाना भी संभव है।
- तनाव से बचे - तनाव हमारे दैनिक जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। इसे पूर्ण रूप से खत्म करना बेशक बहुत अधिक की अपेक्षा करने जैसा है। हालाँकि, ध्यान, आराम करने की तकनीक, समय प्रबंधन द्वारा एवं दिमाग को परिस्थितियों और तनाव को अलग-अलग प्रकार से सँभालने के लिए प्रशिक्षित करके तनाव से प्रभावी रूप से बचना संभव है।
- एक रूचि/शौक को विकसित करें - जिस चीज़ से आप प्यार करते है या जिसका आपको जूनून है, पर काम करना उम्रवृद्धि को लेकर किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण को परिवर्तित कर सकता है।
- मजबूत संबंधों को कायम रखें - परिवार या नजदीकी मित्रों के साथ गहरे संबंध अत्यंत ही लाभप्रद अनुभव प्रदान कर सकते है जो आपके जीवन को अर्थपूर्ण बनाते है।
- अच्छी नींद ले - नींद ना केवल आराम देने वाली बल्कि स्वास्थ्यकर भी होती है। लम्बे समय तक नींद की कमी का संबंध टाइप 2 मधुमेह, मोटापा, उच्च रक्तचाप, अवसाद और तो और याददाश्त एवं ध्यान संबंधी समस्याओं के साथ होता है। काम से संबंधित नींद की दुष्क्रिया (जैसा कि पाली में काम करने वाले, डॉक्टर और नर्स के साथ होता है), सुखद नींद प्रदान करने वाली आदतों में खराबी, तनाव, मोटापा, सोने से पहले ज्यादा खाना, ये सभी खराब नींद के कारण बनते है। अच्छी गुणवत्तापूर्ण नींद का एक अच्छे गुणकारी, लाभकर जीवन से नजदीकी संबंध होता है।

आप अपनी वास्तविक उम्र का आंकलन कैसे करते है? बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि आप स्वयं को कितना युवा महसूस करते है। स्वयं से निम्न सवाल पूछिए -

- क्या आप जीवन का आनंद लेते है? क्या आप ख़ुशी-ख़ुशी अपने दिन को व्यतीत करते है?
- क्या आपके मजबूत और गहरे संबंध है?
- क्या आपके द्वारा किये कार्य का आनंद लेते है?
- क्या आप नियमित रूप से व्यायाम करते है, अच्छी नींद और पौष्टिक आहार लेते है?
- क्या आप सुबह बिस्तर से उतरने के लिए उत्तेजित रहते है? (इस बात को मानते हुए भी कि कभी-कभी हम में से कुछ लोग इतना थक जाते है कि उत्तेजना की अनुभूती नहीं कर पाते और बस कुछ और क्षण सुखद नींद लेने की चाह रखते है, लेकिन यह चर्चा का पूर्ण रूप से अलग विषय है।)
- क्या आपको लगता है कि आपके पास जीवन में उद्देश्य और अर्थ है या आप जीवन की धारा में यह आश्चर्य करते हुए बहे जा रहे है कि क्या करें?
- क्या आप किसी चीज़ या शौक का जुनून रखते है?

अपनी फिटनेस का आंकलन करें -

- क्या आप सीढ़ियों पर दौड़ या सिर्फ चल कर ऊपर जा सकते है और चढ़ने के बाद में (या बीच में) आप ऐसा महसूस तो नहीं करते जैसे आपके प्राण निकल रहे हो?
- क्या आप खड़े होकर बिना घुटने मोड़े ज़मीन को छू सकते है?
- आप एक मील की दूरी कितना जल्दी चलकर पूरी कर सकते है और फिर हांफने के बाद कितना जल्दी सामान्य हो पाते है? (व्यायामशाला में वन माईल वाक टेस्ट के नाम से जाने जाने वाले व्यायाम से इसका आंकलन किया जा सकता है)।
- आपका वजन, वसा अनुपात और आपकी कमर की परिधि कितनी है?
- कितने पुशअप्स और उठ्ठक-बैठक लगा सकते है?
- कितनी दवाइयां आप रोज़ाना लेते है?

उम्रवृद्धि मानव शरीर की सबसे स्वाभाविक प्रक्रिया है और बेशक इसे पूरी तरह से रोका नहीं जा सकता। हालाँकि, आत्मनिर्भर एवं उपयोगी बने रहने, भले ही स्वयं के प्रति हो, के लिए हर संभव प्रयास करके इसे मनोहर ढंग से किया जा सकता है।

लेखिका, एक प्रसूति-विज्ञानी और स्त्रीरोग-विशेषज्ञ, एक फिटनेस और जीवनशैली सलाहकार है, उन्होंने दो किताबें - गेट साइज़ वाइज; गेन टू लूज़ - प्रकाशित की है।
www.drsheela.nambiar.com

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

बी एन राघवेन्द्र राव

जीवन का नृत्य

सीता रत्नाकर

क्या आपने कभी समुद्र की लहरों को हिलोरें लेते हुए, मंद हवा में पत्तियों को लहराते हुए, मूसलाधार वर्षा के बाद आसमान में बिजली को कड़कते हुए, मोर को मनमोहक ढंग से नाचते हुए, पक्षियों के झुंड को उड़ते हुए या रेंगते हुए साँप को देखा है और अद्भुत ढंग से आयोजित प्रकृति के नृत्य को देखकर आश्चर्यचकित हुए है? प्रत्येक जीव में चंचलता, लय और आकर्षण होता है और यह सिद्धांत मनुष्यों पर भी लागू होता है। उस अदृश्य नृत्य-निर्देशक ने हम सभी को एक समान ताल - धड़कन - दी है और जब हम इस ताल के साथ अपने विचारों और गतिविधियों का तालमेल बिठाते है, तो यह जीवन के नृत्य में परिवर्तित हो जाता है। दुनिया को दिया गया वोल्टेयर का व्यावहारिक सन्देश था, ''चलिए पढ़ते है और नृत्य करते है; ये दो मनोविनोद दुनिया को कभी हानि नहीं पहुँचाएंगे।''

भारतीय शास्त्रीय नृत्य एक तरह की सजीव कला है जो मौखिक रूप से गुरु द्वारा शिष्य को सौंपी गई है। जॉन रस्किन ने टिप्पणी की थी, ''महान राष्ट्र उनकी आत्मकथा को तीन पांडुलिपियों - उनके कर्मों की किताब, उनके शब्दों की किताब और उनकी कला की किताब - में लिखते है।'' भारत में हम कला पर लिखित एक महान व्यापक पुस्तक, भरथा की *नाट्यशास्त्र,* के गौरवान्वित उत्तराधिकारी है। ऐसा माना जाता है कि कला के प्रदर्शन की व्याख्या करने वाले 6,000 काव्यात्मक छंदों वाली इस किताब को 200 ईसा पूर्व लिखा गया था। यह प्राचीन ग्रंथ इस बात पर ज़ोर देता है कि मनोरंजन का मूल उद्देश्य दर्शकों को ऐसी जगह ले जाना होता है जहाँ वे अपनी स्वयं की चेतना के सार का अनुभव करते है और आध्यात्मिक एवं नैतिक प्रश्नों पर चिंतन करते है।

शास्त्रीय कला को भारत में बहुत ही सम्मानित दर्जा प्राप्त हुआ क्योंकि अधिकांश शासक कला के बड़े संरक्षक थे। वे दरबार नर्तकों, संगीतकारों और कवियों के रूप में सर्वश्रेष्ठ कलाकारों को नियुक्त किया करते थे और उनके सहयोगात्मक कार्य के

परिणामस्वरूप अनेक महान कृतियों का जन्म हुआ। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, चार प्रतिभावान भाई, चिन्नय्या, पोन्निया, शिवनन्दम और वादिवेलु थे जो भरतनाट्यम में पारंगत थे। तंजावुर क्वार्टेट के नाम से प्रसिद्ध उन भाईयों को 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में तंजावुर में मराठा शासक सर्फोजी द्वितीय के दरबार में नियुक्त किया गया और बाद में वे त्रवणकोर में कवि/संगीतज्ञ राजा स्वाति तिरुनल के दरबार में चले गए। उनके नृत्य संयोजनों का आज भी नियमित रूप से प्रदर्शन किया जाता है और इसे कलाकार की योग्यता मापने का एक पैमाना समझा जाता है।

संगीत और नृत्य मंदिर के अनुष्ठानों एवं पूजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे और इस कला की संरक्षिकाओं को देवदासी कहा जाता था। जब देश पर विदेशी शासकों का आक्रमण हुआ, तो दरबार की नृत्यांगनाओं को जबरदस्ती गणिका बनने पर मजबूर किया गया और यह कला जो कभी अत्यधिक सम्मानित हुआ करती थी कलंकित हो गई। 1930 में अंग्रेजी शासन के दौरान, देवदासी उन्मूलन अधिनियम लाया गया और यह 1947 में पारित हुआ और मन्दिर की नर्तकियों को मंदिरों में नृत्य करने से रोक दिया गया। उनमें से बहुत सी नृत्यांगनाएं गरीब हो गई और शास्त्रीय नृत्य लगभग विलुप्त हो गया। सौभाग्य से, यह कुछ साहसी व्यक्तियों और पारंगत देवदासियों के बच्चों की हठ के कारण बच गया जो शहरों में पलायन कर गए और नृत्य शिक्षक एवं प्रदर्शक बन गए।

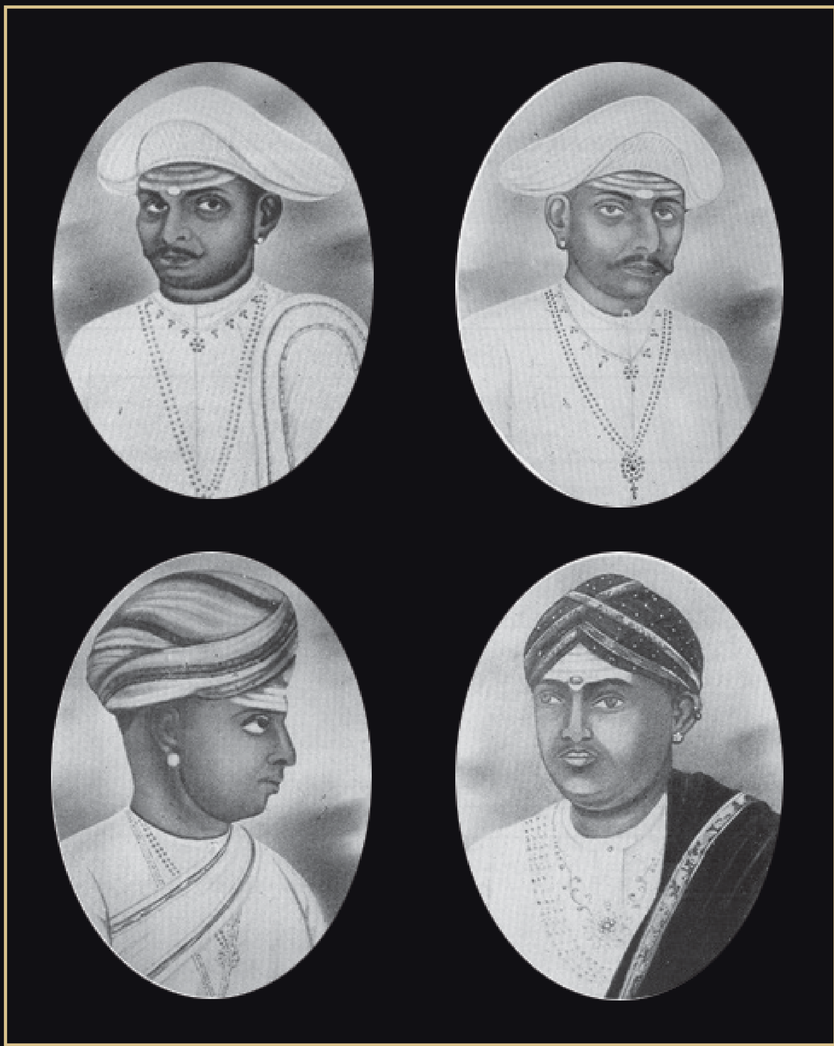

19वीं शताब्दी के तंजावुर के चौरागा : (दक्षिणावर्त) चिनआइया, वडिवेलु और शिवानन्दम।

संगीत और नृत्य मंदिर के अनुष्ठानों एवं पूजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे और इस कला की संरक्षिकाओं को *देवदासी* कहा जाता था।

शुरुआत में, सम्मानित घरानों की केवल कुछ साहसी महिलाएं नृत्य सीखने हेतु आगे आई लेकिन उन्हें प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा। कलाक्षेत्र स्कूल ऑफ़ फाइन आर्ट्स की संस्थापिका-निदेशिका रुक्मणी देवी अरुंडेल और टी बालासरस्वती जैसी बहादुर महिलाओं के संगठित प्रयासों ने इस महान कला शैली के लिए समर्थन जुटाया और इसकी प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया। तंजावुर बालासरस्वती, मंदिर नर्तकियों एवं संगीतज्ञों के एक पारंपरिक मातृवंशीय परिवार की सातवीं पीढ़ी की नर्तकी, एक प्रतिष्ठित उदाहरण है जिन्होंने 20वीं सदी की शुरुआत में भरतनाट्यम करने एवं इसकी खोई हुई प्रतिष्ठा को लौटाने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना किया। नृत्य के लिए स्वीकृति और सम्मान को प्राप्त करने की यात्रा कठिन रही लेकिन आज हम गर्व के साथ कह सकते है कि इसे महान शास्त्रीय कला समझा जाता है।

भारत के विभिन्न शास्त्रीय नृत्यों को मौटे तौर पर आठ शैलियों में विभाजित किया जा सकता है जो देश के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित है - तमिलनाडू से भरतनाट्यम, आंध्रप्रदेश से कुचिपुड़ी, केरल से कथकली और मोहिनीअट्टम, उड़ीसा से ओड़िसी, उत्तरप्रदेश से कत्थक, मणिपुर से मणिपुरी और असम से सत्रीय। सभी शैलियों का आधार *नाट्यशास्त्र* पर आधारित है लेकिन इनमें से प्रत्येक ने अपनी स्वयं की पहचान विकसित की है क्योंकि इनमें इनके क्षेत्रीय सांस्कृतिक गुण सम्मिलित है। नृत्य ज्यादातर पौराणिक कथाओं, लोकगाथाओं पर आधारित होते है और स्थानीय कथाएँ इनमें क्षेत्रीय रंग भरती है। ऐतिहासिक पात्रों और पूजा स्थलों में विराजमान

देवताओं के कृत्यों और सद्गुणों की प्रशंसा करते हुए ये रीती-रिवाजों, वास्तुकला, क्षेत्रीय वनस्पतियों और जीवों की व्याख्या करते है।

गानों का विस्तार प्राचीन संस्कृत क्लासिक्स से लेकर स्थानीय भाषाओँ एवं बोलियों के आधुनिक लेखन तक होता है। संगीत उस क्षेत्र की शास्त्रीय विधा का होता है और इसके साथ उपयोग किये जाने वाले वाद्य यंत्र वे होते है जो परंपरागत रूप से संगीत समारोहों और अनुष्ठानों में प्रयोग किये जाते है। पहनावा क्षेत्र में बुने रेशम से बना होता है और गहने एवं अन्य आभूषण भी स्थानीय रूप से तैयार किए जाते है जो स्वदेशी स्पर्श प्रदान करते है। इन परंपराओं को ध्यानपूर्वक संरक्षित किया गया है और पीढ़ियों से गुरु द्वारा शिष्य को सौंपा गया है और प्रत्येक शास्त्रीय नर्तक अपने गुरु द्वारा दी गई शिक्षा का मान रखने का सतर्कतापूर्वक प्रयास करता है।

शुरुआत में, सम्मानित घरानों की केवल कुछ साहसी महिलाएं नृत्य सीखने हेतु आगे आई लेकिन उन्हें प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा। टी बालासरस्वती जैसी बहादुर महिलाओं के संगठित प्रयासों ने इस महान कला शैली के लिए समर्थन जुटाया और इसकी प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित किया।

मैं भाग्यशाली थी कि मैंने अपनी बहन, रत्ना (पापा) कुमार के साथ 'कलैमामणि' के जे सरसा के संरक्षण में भरतनाट्यम सीखा जो देवदासी वंश की थी। उन्होंने परंपरागत शास्त्रीय प्रदर्शनों में हमारे नृत्य कौशलों को निखारा और हमें समस्त भारत एवं विदेश में प्रस्तुति देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे चार दशक से भी अधिक समय पूर्व नृत्य त्यागना पड़ा लेकिन मेरी बहन ने नृत्य करना जारी रखा और वह पिछले 43 सालों से अमेरीका के टेक्सास के ह्यूस्टन शहर में स्थित अपने *अंजलि सेंटर फॉर परफोर्मिंग आर्ट्स* में नृत्य सिखा रही है। भविष्य के नर्तकों की पीढ़ी को तैयार करने के लिए वह इस महान परंपरा को आगे हस्तांतरित करते हुए लगातार हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रसार कर रही है।

हाल ही के वर्षों में, विभिन्न क्षेत्रों से और अधिक नृत्य शैलियों को शास्त्रीय विधा में शामिल

चूंकि नृत्य क्षेत्रीय से राष्ट्रीय से वैश्विक स्तर पर फैलता है यह भाषा एवं धार्मिक सीमाओं को तोड़कर अधिक समावेशी बन रहा है और इसे अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों में स्वीकृति मिल रही है।

कलाक्षेत्र फाउंडेशन की संस्थापक रूक्मणी देवी अरुंडेल।

किया जा रहा है, जैसे आंध्रप्रदेश से विलासिनी नाट्यम, उड़ीसा से मयूरभंज छउ, पश्चिम बंगाल से पुरुलिया छउ और झारखण्ड से सेरईकेला छउ। कई सदियों से इन जीवंत नृत्य शैलियों की मौलिक सुन्दरता को सुरक्षित रखने के लिए परम्पराओं के मुताबिक चलना मुख्य ताकत रही है।

चूंकि नृत्य क्षेत्रीय से राष्ट्रीय से वैश्विक स्तर पर फैलता है यह भाषा एवं धार्मिक सीमाओं को तोड़कर अधिक समावेशी बन रहा है और इसे अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों में स्वीकृति मिल रही है। आज, रचनात्मक भावों की प्रत्येक विधा का सम्मान किया जाता है, और परंपरा एवं प्रयोग संपूर्ण सामंजस्य में एक साथ मौजूद रह सकते है। ओशो संक्षेप में कहते है कि, रचनात्मक होने का अर्थ है जीवन के साथ प्रेम में होना। आप केवल तब रचनात्मक हो सकते है जब आप जीवन को इतना प्यार करें कि आप उसकी सुंदरता को बढ़ाना चाहते हो, आप उसमें थोड़ा और संगीत, थोड़ा और काव्य, एवं थोड़ा और नृत्य लाना चाहते हो। इस दुनिया की सुंदरता को बढ़ाने वाली प्रबुद्ध रसिका बनने के लिए चलिए हम नृत्य की थोड़ी और समझ एवं सौंदर्यशास्त्र की एक बेहतर सराहना के लिए प्रयत्न करें।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी क्लब कुंभकोणम ईस्ट - मंडल 2981

चोलपुरम शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पौधे लगाने की रूचि पैदा करने एवं पर्यावरण के प्रति जागरूकता को जागृत करने के लिए उन्हें लगभग 20,000 से अधिक बीज गेंदें प्रदान की गई।

रोटरी क्लब सेलम कॉसमॉस - मंडल 2982

उपनगर स्थित एक सरकारी प्राथमिक शाला में एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से शौचालय खण्ड का उद्घाटन किया गया जिसे रोई मंडल 5330, यूएस, रोटरी क्लब सलेम सेंट्रल और टीआरएफ द्वारा निष्पादित किया गया था। परियोजना की लागत ₹4 लाख आई।

रोटरी क्लब इन्द्रपुरम परिवार - मंडल 3012

₹1.40 लाख की लागत वाले एक बैटरी-चलित साइकिलरिक्शे को राजा बाबू को दान किया गया जिन्होंने बचपन में एक रेल हादसे में अपना एक पैर गँवा दिया था। अपंग होने के बावजूद भी, वह एक सफल क्रिकेटर है जो कानपुर के लिए खेलते है।

रोटरी क्लब अमरावती - मंडल 3000

करुर शहर के ऑटोरिक्शा चालकों के लिए एक चिकित्सीय शिविर का आयोजन किया गया। रोई निदेशक सी. भास्कर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया जिससे 200 ऑटो चालक लाभान्वित हुए। परियोजना की लागत ₹65,000 आई।

विधियाँ

रोटरी क्लब कोथापेटा - मंडल 3020

सुनने एवं बोलने में अक्षम लोगों के लिए एक विशेष शिविर में सुनने एवं बोलने की थेरेपी आयोजित की गई। 100 से भी अधिक लोगों ने शिविर में हिस्सा लिया जहाँ अप्पथा स्पीच एंड हियरिंग क्लीनिक ने मरीज़ों की जांच की। रियायती दर पर जरूरतमंदों को कान की मशीनें दी गई।

रोटरी क्लब ग्वालियर सेंट्रल - मंडल 3053

कक्षाओं में विद्यार्थियों को बैठने का उचित स्थान प्रदान करने के लिए क्लब द्वारा गोद लिए गए सरकारी स्कूल को बेंच और डेस्क दान में दी गई। समारोह में क्लब के अध्यक्ष श्याम अग्रवाल और IPDG भूपेन्द्र जैन और विद्याविद् अनीता अग्रवाल उपस्थित थे।

रोटरी क्लब बूंदी - मंडल 3054

विधायक-सह-रोटेरियन अशोक डोंगरा के जन्मदिवस के अवसर पर एक बहु-विशिष्टता वाले चिकित्सीय शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 21 डॉक्टरों ने 3,500 मरीज़ों का उपचार किया। जरूरतमंदों को दवाइयां भी प्रदान की गई।

रोटरी क्लब उधमपुर - मंडल 3070

थाठी गाँव के पंचायत घर में एक नेत्र शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 170 से अधिक मरीज़ों की जांच की गई। उनमें से बीस मरीज़ों का रोटरी ऑई एवं ईएनटी हॉस्पिटल में मोतियाबिंद का ऑपरेशन किया गया।

रोटरी क्लब बाराबांकी - मंडल 3120

महिलाओं को सिलाई एवं ड्रेस डिज़ाइन करने में प्रशिक्षित करने के प्रयासों के लिए एक बुटिक-मालकिन मीरा वर्मा का अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर क्लब द्वारा अभिनंदन किया गया।

मंडल गति

रोटरी क्लब मुंबई मालाबार हिल - मंडल 3141

मुंबई में कॉटन ग्रीन और सेवरी स्थित सैंट जूड इंडिया चाइल्ड केयर सेंटर्स में रोटेरियनों ने कैंसर पीड़ित बच्चों के साथ मकर संक्राति मनाई। पिछले वर्ष, क्लब ने 24 परिवारों को आवास प्रदान करने हेतु दो मंजिलों के निर्माण के लिए ₹1.80 करोड़ दान किये थे।

रोटरी क्लब बीदर न्यू सेंचुरी - मंडल 3160

क्लब ने सड़क किनारे बैठने वाले मोचियों को 30 छाते और पानी की बोतल दान दी ताकि वे गर्मी का सामना कर सकें। एजी बसवराज धन्नूर ने छाते प्रायोजित किये।

रोटरी क्लब मुदिगेरे - मंडल 3182

हैप्पी स्कूल परियोजना के अंतर्गत शहर के अंदर एवं इसके आसपास स्थित पाँच सरकारी स्कूलों में स्मार्ट कक्षाओं को स्थापित किया गया। इस सुविधा के लिए शिक्षकों ने आभार प्रकट किया क्योंकि यह क्लासरूम शिक्षा में सहायक होगा।

रोटरी क्लब बैंगलोर वाइटफील्ड सेंट्रल - मंडल 3190

रो ई की 113वीं वर्षगाँठ को चिन्हित करने के लिए एक 3 किमी की शांति पदयात्रा का आयोजन किया गया और कार्यक्रम का नौ क्लबों द्वारा समर्थन किया गया। डीजी आशा प्रसन्ना कुमार ने 200 से अधिक रोटेरियनों के साथ इस पदयात्रा की अगुवाई की। हाथों में एंड पोलियो के पोस्टर और बैनर भी थामे गए जिससे रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि हुई।

रोटरी क्लब पुत्तूर स्वर्ण - मंडल 3181

एक पोस्टर के अनावरण के साथ ही हिंदुस्तान पेट्रोलियम के साथ साझेदारी में एक सुरक्षित ड्राइविंग अभियान का शुभारंभ किया गया। डीजी सुरेश चेंगप्पा और HPCL - DGM वसंत राव ने मिलकर अभियान की शुरुआत की। टोल बूथों पर पैम्फ़लेट बांटे गए।

विधियाँ

रोटरी क्लब कोचीन मिलान - मंडल 3201

दरबार हॉल के निकट एक तालाब की सफाई के लिए रोटेरियनों ने एक गैर सरकारी संगठन अन्बोदु कोची के साथ हाथ मिलाया। मल और जमी हुई गन्दगी को साफ़ किया गया और लोगों को जलाशयों की देखभाल करने पर संवेदनशील बनाया गया। ज़िला कलेक्टर के. मोहम्मद वाय. सफीरुल्ला ने कार्यक्रम का लोकार्पण किया।

रोटरी क्लब सिवाकासी स्पार्कलर - मंडल 3212

विरुधुनगर ज़िले के स्कूली विद्यार्थियों के लिए *स्पार्कलिन स्टार* नामक एक युवा उत्सव का आयोजन किया गया। 25 स्कूलों के 600 से अभी अधिक विद्यार्थियों ने मिट्टी की मूर्ती बनाना, फूलों को सजाना, सुडोकू, जीके टेस्ट, फैंसी ड्रेस, नृत्य प्रतियोगिता और फैशन शो जैसे कार्यक्रमों में हिस्सा लिया।

रोटरी क्लब वेल्लोर नॉर्थ - मंडल 3231

क्लब ने वेन्नमपल्ली के एक सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में सेनेटरी नैपकिन को जलाने की भट्टी स्थापित की। इस स्वच्छता परियोजन से 400 से भी अधिक लड़कियां लाभान्वित होंगी।

रोटरी क्लब काटवा - मंडल 3240

क्लब के हैप्पी स्कूल कार्यक्रम के अंतर्गत पोस्टग्राम एफपी स्कूल को बेंचें दान दी गई। प्रत्येक सदस्य ने एक बेंच भेंट करने के लिए ₹2,500 का योगदान किया। अब तक बच्चे ज़मीन पर बैठ रहे थे।

रोटरी क्लब दमोह - मंडल 3261

शहर के कानितकर भवन में बच्चों के लिए एक चिकित्सीय शिविर का आयोजन किया गया। इस विचारपूर्ण भाव की अत्यंत सराहना की गई और कार्यक्रम से रोटरी की सार्वजनिक छवि में इजाफा हुआ।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

अच्छे समेरिटनों का निर्माण

किरण ज़ेहरा

स्नेहा थॉमस ने अपनी दोस्त को 108 पर फ़ोन लगाकर एम्बुलेंस बुलाने के लिए कहा, इसके बावजूद भी कि वह एक पुतले रुपी शरीर का सीना दबा रही थी और उसकी फुलाए जा सकने वाली चेस्ट कैविटी में मुँह-से-मुँह लगाकर साँस दे रही थी। यह दृश्य आपात स्थिति में बुनियादी प्राथमिक उपचार प्रदान करने को लेकर किये जा रहे एक नकली अभ्यास का हिस्सा था जिसे कोचीन के भवंस विद्या मंदिर स्कूल में आयोजित किया गया था। ''किसी दिन यह सच में हो सकता है और एम्बुलेंस के आने से पहले क्या किया जाए इसकी जानकारी जीवन और मृत्यु के बीच एक बड़ा फासला लाएगी,'' उस स्कूल की एक छात्रा स्नेहा कहती है, जो समेरिटन कार्यक्रम - अभिघातज परिस्थितियों में ज़िंदगियाँ बचाने को लेकर एक पूर्ण अनुस्थापन कोर्स - में हिस्सा ले रही थी। रोटरी क्लब कोचीन वेस्ट, मंडल 3201, वीपीएस लेकशोर अस्पताल, कोची और कोची सिटी पुलिस की यह संयुक्त पहल, क्लब के अध्यक्ष अजीत कुमार गोपीनाथ के दिमाग की उपज है।

एकाएक एक मित्र की मृत्यु ने आपातकालीन अभिघात के वक्त उसकी देखभाल करने के बारे में लोगों को शिक्षित करने की आवश्यकता को जन्म दिया। एक रेस्टोरेंट में रात्रिभोज करने के दौरान ''मेरी मित्र की दम घुटने से मौत हो गयी। बाद में डॉक्टरों ने कहा कि उसकी जान बचाई जा सकती थी यदि किसी ने उसकी धड़कन को फिर से चालू किया होता और उसे तुरंत एक उझठ दिया होता। बदकिस्मती से हम में से ज्यादातर लोग इसके बारे में अधिक नहीं जानते। प्राथमिक उपचार का ज्ञान होना बहुमूल्य जिंदगियों को बचाने के लिए अत्यंत आवश्यक है,'' अजितकुमार गोपीनाथ कहते है, जो कोचीन के स्कूली छात्रों और आम

पुनर्जीवन प्रशासन में प्रशिक्षित होती एक छात्र।

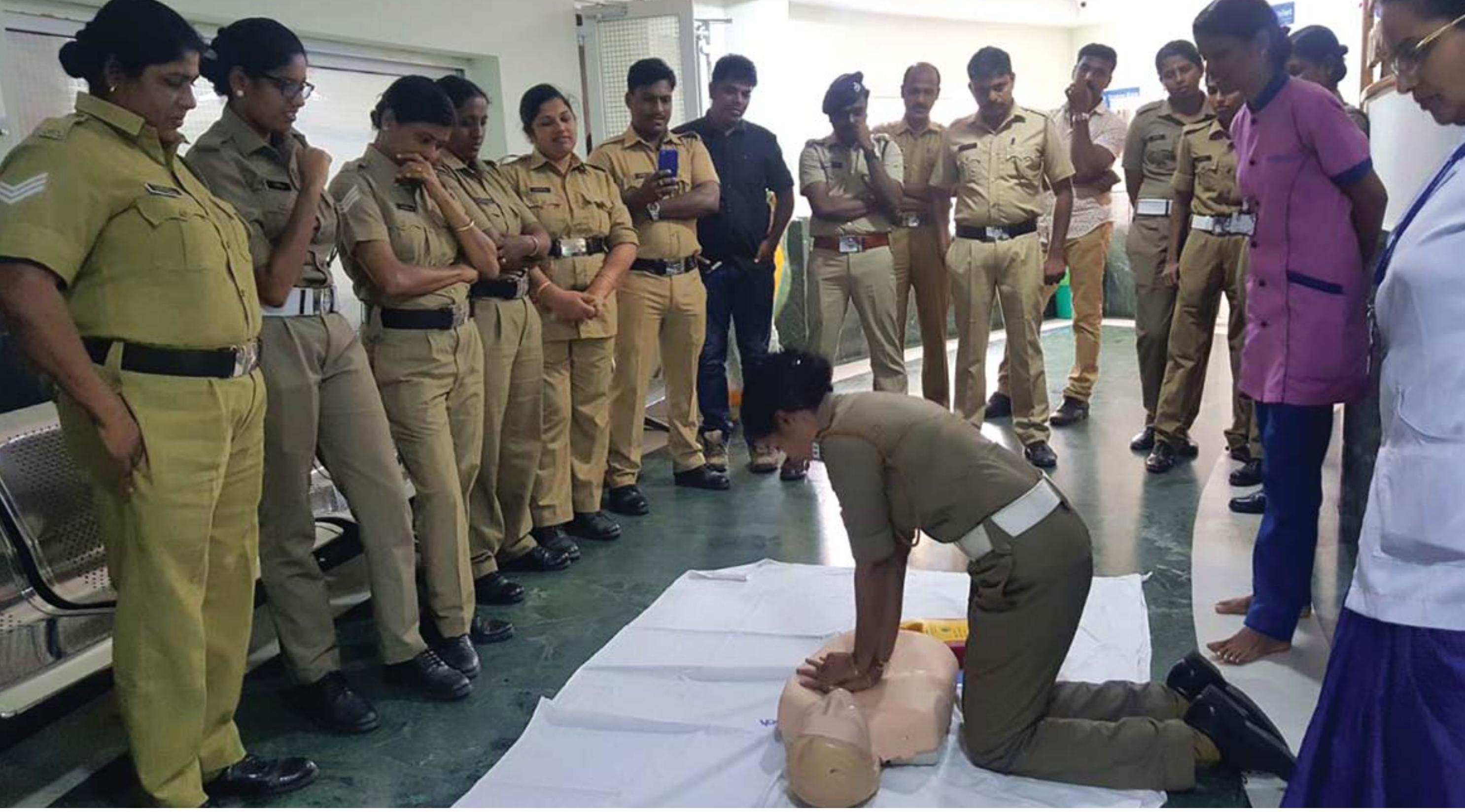

पुलिस कर्नियों का जीवन रक्षा तकनीकों में प्रशिक्षण सत्र।

नागरिकों के मध्य समेरिटन परियोजना का समर्थन कर रहे है।

लेकशोर अस्पताल के एक न्यूरो सर्जन डॉ अरुण ऊमेन और एक ओर्थपेडीक सर्जन डॉक्टर नज़र चांडी के साथ मिलकर, उन्होंने एक तीन-स्तरीय कोर्स तैयार किया जो किसी के भी द्वारा किये जाने वाले जीवन रक्षक कौशलों पर ज्ञान प्रदान करता है; इसमें किसी उपकरण या धन की आवश्यकता नहीं होती। इसका उद्देश्य स्कूलों एवं सार्वजनिक स्थलों में आपात तत्परता को बढ़ाना और आपात स्थितियों में लोगों के सहयोग में वृद्धि करना है। संक्षेप में, ''एक पुतले की सहायता से, यह श्रव्य/दृश्य कक्षा सहभागियों को एक जिंदगी बचाने हेतु प्रत्येक अवसर का उपयोग करने के लिए प्रेरित करती है,'' गोपीनाथ कहते है।

कार्यक्रम ने 40 से भी अधिक स्कूलों के 9,000 विद्यार्थियों को स्तर 1 में और लगभग 500 विद्यार्थियों को स्तर 2 में प्रशिक्षित किया है। ''बच्चे इस कौशल को बड़ी शीघ्रता से सीखते है,'' थेवक्कल स्थित विद्योदय स्कूल की प्रधानाध्यापिका एस्थर एग्नेस कहती है, जहाँ कार्यक्रम को पूर्व में संचालित किया गया था। ''वे मन लगाकर सीखते है और ध्यान देते है। इसके अलावा, यह कार्यक्रम उनके अंदर व्यावहारिक परिवर्तन को प्रोत्साहित कर रहा है। यह घर में, स्कूल में और विशाल समुदाय में अन्य लोगों को लाभान्वित करता जाएगा।'' इस कार्यक्रम ने देश भर के छह शहरों में स्थित केन्द्रीय विद्यालयों के 50 शिक्षकों को भी प्रशिक्षित किया है।

हाल ही में क्लब ने कार्यक्रम को सिटी ट्रैफिक पुलिस के लिए शुरू किया है। गोपीनाथ कहते है, ''उनमें से कुछ को यह भी नहीं पता था कि नब्ज़ कैसे देखते है,'' आगे कहते हुए कि हाईवे पर होने वाली एक दुर्घटना/आपात स्थिति तक पहुँचने वाले वे पहले लोग होते है। 102 सहभागियों, जिनमें पुलिस, ऑटोरिक्शा चालक और निर्माण श्रमिक शामिल थे, के लिए लेकशोर अस्पताल में एक पूर्ण दिवसीय सर्टिफिकेट प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसकी पुलिस कमिश्नर एमपी दिनेश द्वारा अत्यधिक सराहना की गई।

गोपीनाथ कहते है, ''यदि कोई बीमार पड़ता है, और मूर्छित हो जाता है, या किसी को दिल का दौरा पड़ता है, तो ऐसा कोई होना चाहिए जो ऐसी स्थिति में आगे आकर तेजी से एवं उचित रूप से कार्यवाही कर सके। यह कार्यक्रम हर किसी को ऐसी आपात स्थिति में शामिल होकर सकारात्मक कदम उठाने के काबिल बनाता है।''

दम घुटने से लेकर दिल का दौरा पड़ने जैसी 19 स्थितियों के लिए, गुड समेरिटन कार्यक्रम, एक जीवन को बचाने के लिए उठाए जाने वाले जायज़ कदमों की शिक्षा देता है। ''एक जीवन को बचाना सुन्दर है। लेकिन, उसे सही तरीके से बचाया जाना चाहिए। यही एक अच्छा समेरिटन बनने की कुंजी है,'' वह कहते है। ■

यदि कोई बीमार पड़ता है, और मूर्छित हो जाता है, या किसी को दिल का दौरा पड़ता है, तो ऐसा कोई होना चाहिए जो ऐसी स्थिति में आगे आकर तेजी से एवं उचित रूप से कार्यवाही कर सके।

सारे मज़े बल्लेबाज़ ही क्यों उठायें

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

टीवी पर आदमीयों को रोते हुए देख कर बड़ी कोफ़्त होती है भले ही वो टॉस जीतें या मैच हार जाएं। विशेषकर क्रिकेटर इसकी चपेट में ज़्यादा आते हैं। विनोद कांबली कोलकाता में रो पड़े थे, मैच फिक्सिंग में खुद का बचाव करते हुए कपिल देव रोने लगे थे, इंजमामुल-हक के आंसू निकल पड़े जब वो अपनी अंतिम पारी में आउट हो गए थे, वहीं एशिया कप के फाइनल में हारने के बाद पूरी बांग्लादेशी टीम रो रही थी, दक्षिण अफ्रीका की सारी टीम भी न्यूज़ीलैंड से हारकर रो पड़ी थी... ये लंबी सूची देख कर बड़ी खीझ होती है।

हाल ही में इस 'क्राई बेबी हॉल ऑफ फ़ेम' में तीन आस्ट्रेलियाई क्रिकेटर और जुड़े हैं। हालांकि, इसमें फर्क है: वो हारने या जीतने की वजह से नहीं रो रहे थे; बल्कि इसलिए रो रहे थे कि गेंद से छेड़छाड़ करते हुए वे कैमरे में क़ैद कर लिए गए थे। मुझे नहीं लगता कि वे इसलिए रो रहे थे कि उन पर ''गेंद से छेद छाड़ करने'' का आरोप लगाया गया था। बल्कि इसलिए कि वे पकडे गए थे और उन्हें सार्वजनिक रूप से दण्डित किया गया था। ठीक वैसे ही जैसे 18वीं शताब्दी में इंग्लैंड में इस तरह के अपराध के दण्ड स्वरुप उन्हें जहाज से ऑस्ट्रेलिया भेज दिया गया हो, जो उस समय दंड द्वीप था।

गेंद से छेड़छाड़ की इस परिभाषा ने - 'गेंद की स्थिति बदलने की कोशिश'- मुझे हमेशा उलझन में डाला है। मेरा मतलब, यदि बल्लेबाज़ बल्ले से छेड़छाड़ कर सकते हैं - भारी और ज़्यादा घुमावदार - तो गेंदबाज गेंदों से छेड़छाड़ क्यों नहीं कर सकते? दरअसल, एक बल्लेबाज, अगर अपनी ज़िद पर आ जाये, तो हर गेंद के लिए बल्ले बदल सकता है इस प्रकार एक ओवर में वो छह बल्लों का इस्तेमाल कर सकता है जब ज़्यादा वाइड बॉल नहीं हो तो। फिर गेंदबाज प्रति ओवर छह अलग अलग गेंदों का उपयोग क्यों नहीं करें? बल्कि एक कदम आगे,यहां तीन गेंद लाल और तीन सफ़ेद भी हो सकती हैं,सभी विभिन्न स्थिति और प्रकार की, और गेंदबाज जैसा चाहे किसी भी संयोजन में,बॉल कर सकता है। इससे गेंद से छेड़छाड़ रुक जाएगी क्योंकि मैच बल्लेबाजों के पक्ष में नहीं झुकेगा।

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने किसी भी मामले में 50 ओवर्स में दो ही गेंदों का उपयोग करने की अनुमति दी है, प्रत्येक छोर से एक। इसलिए एक गेंद का उपयोग केवल 25 ओवर में किया जाता है, इस प्रकार 'गेंद की स्थिति बदलने' की संभावना कम रह जाती है। मैं इसमें थोड़ा संशोधन करना चाहता हूं: लाल और सफेद गेंद की अनुमति क्यों ना दी जाये, प्रत्येक छोर से एक? इससे बल्लेबाजों के पक्ष में असंतुलन कम हो जाएगा और क्षेत्ररक्षण (फील्डिंग) पक्ष की गेंद से छेड़छाड़ की इच्छा ही खत्म हो जाएगी।

कुछ साल पहले सचिन तेंदुलकर ने सुझाव दिया था कि 50 ओवर के खेल को 25 ओवरों की दो इनिंग्स में खेला जाए। यदि आईसीसी उनका यह सुझाव मान लेती, तो हर टीम चार गेंदों के साथ मैच खेलती, जिसकी वजह से इसे खुरचने या इस पर ग्रीस लगाने की या फिर चीनी मिली हुई लार गेंद पर लगाने की या भौहों से वेसिलीन निकाल कर

कुछ साल पहले सचिन तेंदुलकर ने सुझाव दिया था कि 50 ओवर के खेल को 25 ओवरों की दो इनिंग्स में खेला जाए। परन्तु टीवी वालों को यह विचार पसंद नहीं आया।

इस 'क्राई बेबी हॉल ऑफ फ़ेम' में तीन आस्ट्रेलियाई क्रिकेटर और जुड़े हैं। इसलिए रो रहे थे कि गेंद से छेड़छाड़ करते हुए वे कैमरे में क़ैद कर लिए गए थे।

रगड़ने की आवश्यकता भी कम हो जाती। परन्तु टीवी वालों को यह विचार पसंद नहीं आया।

दो चीजें और हैं जो मुझे समझ नहीं आतीं। एक,खिलाड़ी द्वारा पिच की स्थिति में फेरबदल करने पर रोक के बारे में है - दोनों क्रीज़ के पास आप अपने बूटों से निशान नहीं बना सकते हैं, जिससे बल्लेबाज को आउट करने में स्पिनर को मदद मिले, उसकी हिम्मत भी कैसे हो सकती है? लेकिन विकेट तैयार करने के तरीके में कोई रोक नहीं है। परिणामत: जिस तरह गेंद के वजन, रंग, सिलाई और ऊंचाई सभी तय हैं, पर उस तरह पिच का कोई भी मानकीकरण निर्धारित नहीं है।

दूसरे,बॉउंड्री की लंबाई पर कोई प्रतिबंध नहीं है,जो पिछले 15 सालों में कम हो गई है, इसके लिए टीवी पर लम्बे हिट देखने की लालसा को धन्यवाद। पहले, औसतन यह लंबाई 70 गज हुआ करती थी; अब मुश्किल से 55 रह गई है। इसने बल्लेबाजों के लिए छक्के लगाना आसान कर दिया है। क्या यह भी मानकीकृत नहीं नहीं कर सकते?

इस प्रकार,गेंदबाजों के लिए अफ़सोस करने की कोई ज़रुरत नहीं है। हमेशा अंत में सब ठीक हो जाता है। आखिरकार,आईपीएल में औसत दर्जे का गेंदबाज भी, एक मैच में एक लाख तक कमा लेता है, वो भी सिर्फ चार ओवर बॉलिंग करने के लिए! ■

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020 Licensed to post without prepayment No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/5271 Rotary Samachar Published on 1st of every month
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35

Join 2018-19 RI President Barry Rassin at the 110th Rotary International Convention for a memorable week of inspiration, friendship, and fun. You'll be able to connect with people of action from around the world — and Capture the Moment forever.

Take advantage of the limited-time registration rate of US$350* from 23 to 27 June.

REGISTER ONLINE AT RICONVENTION.ORG

*Registration must be paid in full between 23 and 27 June 2018 to receive the US$350 rate. All rates inclusive of VAT.

Rotary | 2019 HAMBURG

ROTARY INTERNATIONAL CONVENTION
HAMBURG, GERMANY 1-5 JUNE 2019

संक्षेप में

इस NGO के लिए राजसी दान

मुंबई स्थित मैना महिला संस्थान उन सात चैरिटियों में से एक है जो प्रिंस हैरी और मेगन मार्कल की शादी को चिन्हित करने वाले दान से लाभान्वित होंगे। इस शाही जोड़े ने मई में होने वाली अपनी शादी में आने वाले मेहमानों से आग्रह किया है कि उन्हें तोहफे देने के बजाए वे उनके द्वारा समर्थित चैरिटियों को दान दे। यह NGO झुग्गियों में रहने वाली महिलाओं को सेनेटरी पैड्स बनाने और जिस समुदाय से वे संबंध रखती है उसमें उन पैड्स को कम कीमत पर बेचने हेतु नौकरी देता है, और इस प्रक्रिया द्वारा मासिक धर्म स्वच्छता से जुड़ी पाबंदियों को तोड़ने का प्रयास भी करता है।

सियाचिन सैनिकों की खातिर

सुमीधा और योगेश चिथादे ने सियाचिन ग्लेशियर्स पर तैनात भारतीय सैनिकों, जो शीत लहरों, ख़राब इलाकों और निम्न ऑक्सीजन स्तर का सामना करते हुए चौकसी करते है, की भलाई के लिए ऑक्सीजन उत्पादक संयंत्र की स्थापना में मदद करने हेतु अपने जेवर बेचकर ₹ 1.25 लाख इकट्ठा करके एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। समुद्र तल से 22,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित, यह दुनिया की सबसे ऊँची रणभूमि है। सेना द्वारा ऑक्सीजन सिलिंडरों को फिर से भरने में काम आने वाले संयंत्र की लागत लगभग ₹ 1.1 करोड़ आएगी। सुमीधा सेना के एक मेजर की माँ है और उन्होंने सियाचिन के बेस कैंप में उनके कम समय के ठहराव के दौरान वहाँ के कठोर मौसम का अनुभव किया था।

PAN कार्ड में 'तीसरे लिंग' का कॉलम

केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड ने महिला और पुरुष लिंग के चेक-बॉक्स के अलावा एक अन्य चेक-बॉक्स - 'तृतीय लिंग' - को शामिल करने के लिए PAN कार्ड के आवेदन फॉर्म में संशोधन किया है। 2014 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ट्रांसजेंडरों को समान और कानूनी दर्जा प्रदान किये जाने के निर्णय के बाद, आधार के आवेदन फॉर्म में तीसरी श्रेणी शामिल की गई। यह निर्णय रेशमा प्रसाद नामक एक ट्रांसजेंडर द्वारा दाखिल की गई एक याचिका के जवाब में था, जो अपने स्टार्ट-अप का पंजीयन नहीं करवा सकीं क्योंकि उनके PAN कार्ड और आधार कार्ड में दर्ज लिंग मेल नहीं खा रहे थे।

अभिभावकों के लिए छुट्टियों का होमवर्क

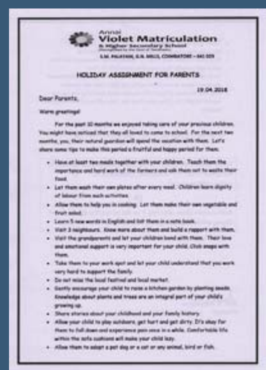

Annai
Violet Matriculation

HOLIDAY ASSIGNMENT FOR PARENTS

19.04.2018

Dear Parents,

Warm greetings!

जबकि स्कूल अक्सर विद्यार्थियों को छुट्टियों का गृहकार्य देते है, चेन्नई के एक स्कूल ने अभिभावकों को 17 छुट्टी के कार्यों की दिल को छू लेने वाली एक सूची भेजी है। यह सामाजिक मीडिया पर वायरल हो गई है। सूची में अपने बच्चों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने की गतिविधियाँ और तकनीकी रूप से उन्नत जीवनशैली जीने के कारण परिवारों में लुप्त हो रहे आवश्यक मूल्यों एवं जीवन के सबकों को सिखाना शामिल है। स्कूल ने गतिविधियों की तस्वीरें भी मंगाई है जिन्हें बच्चों को स्कूल के खुलते वक्त अनिवार्य रूप से जमा करनी है।

सड़क के ट्रैफिक से बचने के लिए हवाई टैक्सियाँ

हम में से उन लोगों के लिए जो ट्रैफिक में फंसने के बाद हमारे गंतव्य तक पहुँचने के लिए अतिरिक्त समय में एक हवाई टैक्सी परिवहन की कल्पना करते है, वोलोकॉप्टर, एक जर्मन कंपनी, जल्द ही उड़ने वाली टैक्सियाँ लाकर इस कल्पना को हकीकत में बदलेंगी। कंपनी ने उन टैक्सियों का हाल ही में दुबई में परीक्षण किया था। भूमिगत स्टेशनों की तरह ही छत पर 'वोलो पोर्ट्स' होंगे। अनुमान है कि हर घंटे लगभग 1,000 यात्री उनकी खुद की उड़ने वाली टैक्सियों से चढ़ेंगे एवं उतरेंगे। हर एक सवारी के बाद रोबोट बैटरियाँ बदलेंगे क्योंकि यह हवाई-विमान 30 मिनट में अधिकतम 17 मील तक उड़ सकता है। जबकि प्रतिकृति के वर्ष 2019 तक तैयार होने का अनुमान है, वास्तविक प्रणाली के चालू होने में 10 साल और लगेंगे।

जयश्री द्वारा संकलित, एस कृष्णप्रथीश द्वारा रूपरेखा